भाकृअनुप
ICAR

राजभाषा आलोक 2014

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद
कृषि भवन
नई दिल्ली

राजभाषा आलोक

2014

संरक्षक

डॉ. एस. अय्यप्पन, सचिव, डेयर एवं महानिदेशक, भाकृअप

अध्यक्ष

आर. राजगोपाल, सचिव, भाकृअप

मार्गदर्शन

हरीश चन्द्र जोशी, निदेशक (राजभाषा)

संपादन

सीमा चोपड़ा, उपनिदेशक (राजभाषा)

बी. एस. पर्सवाल, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी

तकनीकी सहयोग

हरिओम सैनी, निजी सचिव

जितेन्द्र कुमार, टंकक

भूमिका

हिन्दी को देश की राजभाषा के रूप में आसीन हुए छ: दशक बीत चुके हैं। इस दौरान राजभाषा और संपर्क भाषा के रूप में हिन्दी के कार्य क्षेत्र में अनवरत वृद्धि हुई है और हिन्दी समझने, बोलने, तथा लिखने वालों की संख्या जनसंख्या के अनुपात में कई गुना बढ़ी है। भाषा के बढ़ने के साथ-साथ हिन्दी पत्र-पत्रिकाएं भी काफी अधिक संख्या में प्रकाशित होने लगी हैं।

सूचना प्रौद्योगिकी के इस दौर में इंटरनेट ने पाठकों तक पत्र-पत्रिकाओं की पहुंच को काफी सुगम बना दिया है। इसी तारतम्य में भाकृअप द्वारा भी विगत वर्ष से राजभाषा आलोक को ई-पुस्तिका के रूप में लाया जा रहा है। परिषद की ई-पुस्तिका का उद्देश्य परिषद के विभिन्न संस्थानों द्वारा किए गए हिन्दी संबंधी क्रियाकलापों को समेकित रूप में प्रस्तुत करना है। इस पुस्तिका के माध्यम से यह दर्शाया गया है कि परिषद मुख्यालय और परिषद के अधीनस्थ संस्थान, निदेशालय, केन्द्र राजभाषा हिन्दी में पूरे उत्साह से कार्य करते हैं। परिषद के संस्थानों में राजभाषा पदों की न्यूनता होने के बावजूद भी राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम में दिए गए लक्ष्यों को पाने का प्रयास किया जाता है। परिषद के अधीनस्थ अधिकांश संस्थानों/कार्यालयों में राजभाषा कार्यान्वन समितियां गठित हैं जिनकी समय-समय पर बैठकें की जाती हैं तथा राजभाषा संबंधी प्रगति पर चर्चा की जाती है। परिषद मुख्यालय द्वारा संस्थानों/केन्द्रों की तिमाही प्रगति रिपोर्ट तथा तिमाही बैठकों के कार्यवृत्तों की समीक्षा कर सुझाव दिए जाते हैं। परिषद मुख्यालय के अधिकारियों द्वारा समय-समय पर अधीनस्थ संस्थानों का हिन्दी के प्रयोग की स्थिति के लिए निरीक्षण भी किया जाता है।

इस प्रकार परिषद मुख्यालय और परिषद के संस्थानों द्वारा राजभाषा कार्यान्वन के क्षेत्र में सतत प्रयास किये जाते रहे हैं। इन्हीं प्रयासों की झलक 'राजभाषा आलोक' में दी गई है। भाकृअप परिषद के सभी संस्थानों/निदेशालयों/केन्द्रों के निदेशकों/प्रमुखों से यह अनुरोध करना प्रासंगिक है कि वे अपने कार्यालय की राजभाषा गतिविधियों की समेकित सूचना परिषद मुख्यालय के हिन्दी अनुभाग को अवश्य भेजें, ताकि आगामी अंकों में उसे शामिल किया जा सके।

इस पत्रिका के लिए उपलब्ध करवायी गयी सामग्री के लिए परिषद मुख्यालय का हिन्दी अनुभाग सभी सहयोगियों का आभारी है।

हरीश चन्द्र जोशी
निदेशक (राजभाषा)

राजभाषा आलोक 2014

आलेख

1. किसान के द्वार - विज्ञान का प्रसार 1
   एस. अय्यप्पन, ए.के. बावा एवं महेश गुप्ता
2. बदलती परिस्थितियों में जोखिमों से जूझकर भी हर्षाता कृषक - संतराम यादव 10
3. कृषि उन्नति में सूचना प्रौद्योगिकी की भूमिका - 13
   सुनील कुमार, मोहमम्द शमीम, ए.के. प्रुष्टी, ममता बंसल और सुधीर कुमार
4. कार्यालयी अनुवाद - के.आर. जोशी 17

परिषद मुख्यालय सहित संस्थानों/केन्द्रों की राजभाषा संबंधी गतिविधियां

1.	**केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, कोचीन**	**19**
2.	**केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, करनाल**	**22**
3.	**कृषिरत महिला अनुसंधान निदेशालय, भुवनेश्वर**	**24**
4.	**भारतीय कृषि सांख्यिकी अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली**	**27**
5.	**ज्वार अनुसंधान निदेशालय, हैदराबाद**	**30**
6.	**केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर**	**32**
7.	**कुक्कुट अनुसंधान निदेशालय, हैदराबाद**	**37**
8.	**राष्ट्रीय बीजीय मसाला अनुसंधान केन्द्र, अजमेर**	**39**
9.	**राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र, बीकानेर**	**42**
10.	**राष्ट्रीय कृषि प्रमुख कीट ब्यूरो, बैंगलोर**	**43**
11.	**सरसों अनुसंधान निदेशालय, भरतपुर**	**44**
12.	**केन्द्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, कासरगोड़**	**50**
13.	**तिलहन अनुसंधान निदेशालय, हैदराबाद**	**55**
14.	**केन्द्रीय कपास प्रौद्योगिकी अनुसंधान संस्थान, मुम्बई**	**57**
15.	**राष्ट्रीय पटसन एवं समवर्गी रेशा प्रौद्योगिकी अनुसंधान संस्थान, कोलकाता**	**60**
16.	**गन्ना प्रजनन संस्थान, कोयम्बटूर**	**62**
17.	**केन्द्रीय कन्द फसल अनुसंधान संस्थान, तिरूवंतपुरम**	**64**
18.	**भारतीय मसाला फसल अनुसंधान संस्थान, कालिकट**	**65**
19.	**केन्द्रीय द्वीपीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पोर्टब्लेयर**	**67**
20.	**राष्ट्रीय पशुरोग जानपदिक एवं सूचना विज्ञान (भूतपूर्व पीडीएडमास)**	**69**
21.	**राष्ट्रीय पादप आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो, नई दिल्ली**	**70**

22.	केन्द्रीय पटसन एवं समवर्गीय रेशा अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर	71
23.	भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान, कानपुर	74
24.	भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ	75
25.	खरपतवार विज्ञान अनुसंधान निदेशालय, जबलपुर	77
26.	राष्ट्रीय कृषि वानिकी अनुसंधान केन्द्र, झांसी	78
27.	राष्ट्रीय मृदा सर्वेक्षण एवं भूमि उपयोग नियोजन ब्यूरो, नई दिल्ली	80
28.	काजू अनुसंधान निदेशालय, पुत्तूर	81
29.	राष्ट्रीय अंगूर अनुसंधान केन्द्र, पुणे	82
30.	केन्द्रीय मात्स्यिकी शिक्षा संस्थान, मुम्बई	83
31.	औषधीय एवं सगंधीय पादप अनुसंधान निदेशालय, आणंद	84
32.	भारतीय पशुचिकित्सा अनुसंधान संस्थान, इज्जतनगर	85
33.	राष्ट्रीय पशु आनुवांशिक संसाधन ब्यूरो, करनाल	86
34.	उत्तर-पूर्वी पर्वतीय क्षेत्र अनुसंधान परिसर, उमियम-मेघालय	87
35.	राष्ट्रीय डेयरी अनुसंधान संस्थान, करनाल	89
36.	मक्का अनुसंधान निदेशालय, नई दिल्ली	89
37.	सोयाबीन अनुसंधान निदेशालय, इंदौर	90
38.	केन्द्रीय शीतोष्ण बागवानी संस्थान, श्रीनगर	92
39.	राष्ट्रीय अनार अनुसंधान केन्द्र, सोलापुर	93
40.	केन्द्रीय मृदा एवं जल संरक्षण अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, देहरादून	94
41.	केन्द्रीय कृषि वानिकी अनुसंधान संस्थान, झांसी	95
42.	केन्द्रीय कृषि अभियांत्रिकी संस्थान, भोपाल	96
43.	राष्ट्रीय पादप जैवप्रौद्योगिकी अनुसंधान केन्द्र, नई दिल्ली	97
44.	केन्द्रीय तम्बाकू अनुसंधान संस्थान, राजमंद्री	98
45.	परिषद मुख्यालय की राजभाषा गतिविधियां	99

इस पुस्तिका में दिये गए आलेख लेखकों के अपने हैं। हिन्दी गतिविधियों से संबंधित जानकारी परिषद के सभी संस्थानों/केन्द्रों से अपेक्षित होती है और इस संबंध में परिषद मुख्यालय में प्राप्त सभी सूचनाओं को समेकित कर यथोचित स्थान देने का प्रयास किया गया है।

किसान के द्वार – विज्ञान का प्रसार

एस. अय्यप्पन*, ए.के. बावा** एवं महेश गुप्ता***

*सचिव, डेयर एवं महानिदेशक, भा.कृ.अ.प.

**प्रधान वैज्ञानिक, भा.कृ.अ.प.

***वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी (राजभाषा), भा.कृ.अ.प.

भारत एक कृषि प्रधान देश है और वास्तव में भारत की आत्मा यहां के गांवों में बसती है। भारत को यदि सही ढंग से जानना–समझना हो तो यहां के गांवों, यहां के किसानों की स्थिति को जानना आवश्यक है। हालांकि, बढ़ते शहरीकरण एवं कृषि से इतर अन्य कार्यों में बढ़ते रोजगार अवसरों के कारण कुछ समय से देश के सकल घरेलू उत्पाद में कृषि की हिस्सेदारी लगातार कम होती जा रही है लेकिन कृषि अभी भी देश के विकास एवं अन्य उद्योगों का मेरूदण्ड़ बनी हुई है। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद हमेशा से कृषि अनुसंधान के क्षेत्र में अपना श्रेष्ठ प्रयास कर देश के सर्वांगीण विकास में अपना सार्थक योगदान देता रहा है जिसके परिणामस्वरूप लगातार बढ़ती जनसंख्या, इससे जुड़ी खाद्य की बढ़ती मांग एवं जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों के बावजूद आज भारत खाद्यान्न के मामले में एक आयात करने वाले राष्ट्र की स्थिति से निकलकर एक आत्म–निर्भर एवं निर्यातक राष्ट्र की भूमिका में आ पहुंचा है। इस सफलता में कृषि वैज्ञानिकों के साथ–साथ हमारे किसानों का योगदान भी सराहनीय है। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के लिए वर्ष 2014 एक नया अवसर लेकर आया। नई संकल्पनाओं, नई अंतर्दृष्टि और नवीन दृष्टिकोण के साथ आज भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद तेजी से प्रगति पथ पर अग्रसर है जिसका उद्देश्य देश में कृषि एवं किसानों की बेहतरी करना है।

प्रगति–पथ पर आगे बढ़ने के लिए परिषद को तब नए पंख मिले जब दिनांक 29 जुलाई, 2014 को देश के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने परिषद के 86वें स्थापना दिवस समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में परिषद को अपना आशीर्वाद दिया। माननीय प्रधानमंत्री जी के प्रेरणादायी उद्बोधन से परिषद को नई संकल्पना, नवीन विचारों, नवीन कल्पना दृष्टि के साथ अपने कार्य क्षेत्र में और तेजी से आगे बढ़ने के प्रति प्रोत्साहन मिला।

पिछले लगभग एक वर्ष के दौरान परिषद द्वारा अनेक नवीन पहलें क्रियान्वित की गईं और अन्य उपलब्धियां अर्जित की गईं जिनका संक्षिप्त विवरण नीचे प्रस्तुत है।

कृषि शिक्षा

- आन्ध्र प्रदेश व राजस्थान में दो नए कृषि विश्वविद्यालय : देश में कृषि शिक्षा के प्रसार की आवश्यकता और युवाओं को कृषि के प्रति आकर्षित करने के उद्देश्य से आंध्र प्रदेश व राजस्थान में दो नए कृषि विश्वविद्यालयों की स्थापना का निर्णय केन्द्रीय सरकार द्वारा किया गया है। इनकी स्थापना के लिए 100 करोड़ रूपये का प्रावधान भी किया गया है। इन नए कृषि विश्वविद्यालयों से निश्चित ही संबंधित राज्यों तथा देश में कृषि स्नातक तैयार कर भावी कृषि के लिए आधार तैयार करने में मदद मिल सकेगी।
- तेलंगाना व हरियाणा में दो नए बागवानी विश्वविद्यालय : आज भारत विश्व में फल एवं सब्जी उत्पादन में अग्रणी देशों की कतार में शामिल है। अपनी इसी श्रेष्ठता को बनाए रखने और साथ ही देश की लगातार बढ़ रही जनसंख्या को पौष्टिक आहार उपलब्ध कराने के लिए यह जरूरी है कि इस क्षेत्र में नवीन अनुसंधान करते हुए

नवोन्मेषी तकनीकें विकसित की जाएं। बागवानी में रोजगार की व्यापक संभावनाओं को देखते हुए रोजगारोन्मुख शिक्षण को बढ़ावा दिया जाए। इस दिशा में प्रशिक्षित मानव संसाधन विकसित करने के लक्ष्य को ध्यान में रखकर तेलंगाना व हरियाणा में दो नए बागवानी विश्वविद्यालयों की स्थापना की जा रही है जिसके लिए 100 करोड़ रूपये के आवंटन का प्रावधान बजट में किया गया है।

- रानी लक्ष्मीबाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झांसी में शिक्षण सत्र का शुभारंभ : झांसी स्थित नवनिर्मित रानी लक्ष्मीबाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय में कुलपति की नियुक्ति के उपरांत विश्वविद्यालय में प्रथम शैक्षणिक सत्र प्रारंभ हुआ। इस विश्वविद्यालय का प्रतीक चिन्ह माननीय कृषि मंत्री द्वारा जारी किया गया। इसके अंतर्गत झांसी व दतिया क्षेत्र में चार नए कृषि कॉलेजों की स्थापना के लिए भी भूमि अधिग्रहण का कार्य प्रगति पर हैं ।
- बिहार में राजेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय का केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय में रूपांतरण : बिहार राज्य में कृषि शिक्षा को नये आयाम, नवीन ऊर्जा एवं नव संचार प्रदान करने के उद्देश्य से पूसा स्थित राजेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय को राजेन्द्र केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय के रूप में परिवर्तित करने हेतु बिहार सरकार एवं केन्द्रीय सरकार के बीच केन्द्रीय कृषि मंत्री एवं बिहार के मुख्यमंत्री की उपस्थिति में संबंधित अधिकारियों द्वारा समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए। इस निर्णय से बिहार की कृषि अर्थव्यवस्था को बल मिलने के साथ–साथ छोटे एवं सीमान्त किसानों के जीवन में नए अवसर पैदा होने की संभावना है।
- पूर्वोत्तर राज्यों में कृषि शिक्षा को बढ़ावा : पूर्वोत्तर राज्यों में कृषि शिक्षा, अनुसंधान एवं प्रसार को विशेष महत्व देते हुए केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, इम्फाल का सुदृढ़ीकरण करने के उद्देश्य से इसके अंतर्गत छः नए कृषि महाविद्यालय खोलने का निर्णय किया गया है। इस प्रकार केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय के अंतर्गत महाविद्यालयों की कुल संख्या 7 से बढ़कर 13 हो जाएगी।
- मेघालय में नया केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय : मेघालय के बड़ापानी में एक नये केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय की स्थापना की जा रही है। इसकी स्थापना के लिए रिभोई में लगभग 236 एकड़ भूमि का चयन किया गया है। इसके अंतर्गत मेघालय

एवं नागालैंड में कृषि, गृह विज्ञान, पशुचिकित्सा एवं पशुपालन के क्षेत्र में महाविद्यालय खोले जाएंगे।

अनुसंधान संबंधी बुनियादी सुविधा

- नए कृषि अनुसंधान संस्थान : भारतीय कृषि के विकास में भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान जिसे कि पूसा संस्थान के नाम से भी जाना जाता है, की भूमिका सर्वोपरि रही है। देश में हरित क्रान्ति का सूत्रपात करने में पूसा संस्थान की उल्लेखनीय भूमिका है। देश की कृषि को नई दिशा देने में इसके महत्व को देखते हुए वर्तमान सरकार द्वारा असम व झारखण्ड में पूसा संस्थान की तर्ज पर दो नए राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान संस्थान स्थापित करने की घोषणा की गई है । इन दोनों संस्थानों में कृषि से संबंधित सभी विषयों में अनुसंधान के साथ–साथ शिक्षा भी प्रदान की जाएगी। देश के पूर्वोत्तर क्षेत्र के अलावा बिहार, झारखण्ड़, ओड़िशा एवं पश्चिम बंगाल राज्य में इससे कृषि विकास को नया आयाम मिल सकेगा।
- रांची में भारतीय कृषि जैव प्रौद्योगिकी संस्थान का शिलान्यास : कृषि क्षेत्र में जैव प्रौद्योगिकी पर आधारित तकनीकी अनुसंधान एवं गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए झारखण्ड़ स्थित रांची में एक नए कृषि जैव प्रौद्योगिकी संस्थान की आधारशिला रखी गई। इसके लिए रांची के बाह्य क्षेत्र में 120 एकड़ भूमि उपलब्ध कराई गई है।
- कृषि विज्ञान केन्द्र : कृषि विज्ञान केन्द्रों तक किसानों की पहुंच को और अधिक सुगम बनाने के उद्देश्य से असम के बक्सा, मोरीगांव और बोगईगांव तथा झारखण्ड़ के रामगढ़, बनसकान्था में नए कृषि विज्ञान केन्द्रों की स्थापना की गई । वर्तमान में देश के 594 जिलों में कुल 642 कृषि विज्ञान केन्द्र कार्यरत हैं, इस प्रकार 93 प्रतिशत ग्रामीण जिलों में ये केन्द्र कृषि विकास में सशक्त भूमिका निभा रहे हैं।

अनुसंधान उपलब्धियां

- गेहूं जीनोम का ब्लूप्रिंट : भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के राष्ट्रीय पादप जैव प्रौद्योगिकी अनुसंधान केन्द्र, नई दिल्ली, पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना तथा दिल्ली विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने इंटरनेशनल व्हीट जीनोम सिक्वेंसिंग

कंसोर्शियम (IWGSC) के सहयोग से ब्रेड गेहूं जीनोम का एक गुणसूत्र आधारित ड्राफ्ट सीक्वेंश प्रकाशित किया। गेहूं जीनोम के खुलासे से प्रत्येक गेहूं गुणसूत्र में 1,25,000 से भी अधिक जीनों की पहचान की गई। गेहूं का आनुवंशिक ब्लूप्रिंट पादप विज्ञान अनुसंधानकर्मियों एवं गेहूं प्रजनकों के लिए एक अमूल्य स्रोत है। इसकी सहायता से प्रत्येक गेहूं गुणसूत्र पर विशिष्ट जीनों को सटीक ढंग से पहचाना जा सकेगा। गेहूं जीनोम की उपलब्धता से जीन की खोज करने में तेजी आएगी तथा साथ ही श्रेष्ठ गुणवत्ता वाली गेहूं किस्मों के विकास को गति मिलेगी।

- क्लोनिंग द्वारा उन्नत नस्ल के भैंस के कटड़े का जन्म : भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के राष्ट्रीय डेयरी अनुसंधान संस्थान, करनाल में हाथ से निर्देशित क्लोनिंग तकनीक का उपयोग करके 'रजत' नामक नर कटड़े को पैदा करने में सफलता हासिल की गई। यह कटड़ा उन्नत नस्ल वाले मुर्रा भैंसे के वीर्य से उत्पन्न किया गया है। रजत का जन्म उन्नत नस्ल वाले भैंसे के हिमीकृत वीर्य से कोशिका प्राप्त करके किया गया। डेयरी उद्योग के लिए उच्च गुणवत्ता वाले जननद्रव्य के तीव्र बहुगुणन में क्लोनिंग तकनीक दो प्रकार से उपयोगी सिद्ध हो सकती है। प्रथम, उन्नत वंश वाले भैंसों के क्लोन द्वारा नर कटड़ों का विकास और द्वितीय, अधिक दूध देने वाली भैंस के क्लोन द्वारा उच्च गुणवत्ता वाली मादा कटड़ियों का विकास।
- ब्रुसेलोसिस का त्वरित निदान : ब्रुसेलोसिस रोग के कारण पशुओं में प्रजनन संबंधी रोग, गर्भपात, प्रजनन अक्षमता, प्लेसेंटा का बने रहना, मृत शिशुओं का पैदा होना आदि समस्याएं उत्पन्न होती हैं। इससे भारतीय डेयरी पशुपालकों को प्रतिवर्ष अत्यधिक हानि सहन करनी पड़ती है। राष्ट्रीय पशुविज्ञान महामारी एवं रोग सूचना विज्ञान संस्थान, बेंगलुरू ने ब्रुसेलोसिस के शीघ्र निदान के लिए 'लेटरल फ्लो जांच' नामक नैदानिक परीक्षण तकनीक विकसित की है। यह अत्यंत संवेदी, विशिष्ट एवं शीघ्र परिणाम देने वाली तकनीक है।
- भेड़ों में चेचक रोग की रोकथाम : भेड़ों में घातक चेचक रोग की रोकथाम के लिए उन्नत टीका विकसित किया गया। भेड़ों में मृत्युदर कम होने से भेड़ पालकों को आर्थिक लाभ होगा। इस टीके को एक स्थान से दूसरे स्थान पर लाने ले जाने के लिए कोल्ड चेन की आवश्यकता नहीं है तथा इसका इस्तेमाल आसानी से किया

जा सकता है। इसकी सहायता से रोग को फैलने से रोका जा सकता है क्योंकि इससे रोग के प्रथम चरण में ही निदान करना संभव है।

- विलुप्तप्राय: वन्य भैंस का क्लोन विकसित : विलुप्तप्राय: पशुओं के संरक्षण के लिए क्लोनिंग तकनीक का उपयोग एक नया और महत्वपूर्ण कदम है। इस दिशा में कार्य करते हुए क्लोनिंग तकनीक द्वारा 'दीपाशा' नामक वन्य भैंस की मादा कटड़ी को पैदा किया गया। दीपाशा का जन्म उसकी मॉ 'आशा' की कोशिकाओं की क्लोनिंग से किया गया है। आशा, छत्तीसगढ़ के उदन्ती वन्यजीव अभयारण्य में अपनी प्रजाति की अकेली मादा के रूप में मौजूद है। इसने सामान्य समागम के उपरान्त कई बार नर कटड़े को ही जन्म दिया जिससे इसके लुप्त होने का खतरा बढ़ गया। मादा कटड़ी के जन्म के लिए क्लोनिंग तकनीक का इस्तेमाल किया गया। इस प्रजाति को वन्यजीव संरक्षण अधिनियम के अंतर्गत विलुप्तप्राय प्रजाति की श्रेणी में रखा गया है, इसलिए इसका संरक्षण आवश्यक है। इससे पालतू भैंस की नस्ल को सुधारने में भी मदद मिलेगी।

किसान के द्वार विज्ञान

- कृषि डाक : इस अनूठी योजना के अंतर्गत दूर–दराज के क्षेत्रों में रहने वाले किसानों को परिषद द्वारा उन्नत किस्मों के बीजों को डाकघरों के माध्यम से पोस्टमास्टरों द्वारा उपलब्ध कराया जा रहा है। इससे किसानों को घर बैठे ही उन्नत किस्मों के बीच सुलभ हो जाते हैं। इस योजना को मूलरूप से भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पूसा द्वारा देश के 20 जिलों में लागू किया गया। इसकी सफलता और लोकप्रियता को देखते हुए अब इसे 14 राज्यों के 100 जिलों में कृषि विज्ञान केन्द्रों की भागीदारी से बढ़ाया जा रहा है। इस योजना के तहत पोस्टमास्टरों को इनके तकनीकी पहलुओं के बारे में भी प्रशिक्षण दिया जाता है ताकि वे किसानों को इनसे संबंधित बुनियादी जानकारी दे सकें। इस योजना का जिन क्षेत्रों में लाभ पहुंच रहा है, वहां पर खाद्यान्नों, तिलहनों और सब्जियों का 10 से 30 प्रतिशत तक उत्पादन बढ़ने की रिपोर्ट मिल रही है।

- प्राकृतिक आपदाओं की चुनौतियों का सफलतापूर्वक सामना : देश के किसानों को प्राकृतिक आपदाओं से बचाने के लिए जिला स्तर पर आकस्मिक योजनाओं को सफलतापूर्वक लागू किया गया। इन योजनाओं के माध्यम से देश के 580 से अधिक आपदाग्रस्त जिलों के किसानों को नुकसान से बचाने के साथ राहत प्रदान की गई। इन प्रयासों के परिणामस्वरूप कृषि उत्पादन की हानि को 2.5 प्रतिशत तक सीमित कर पाना संभव हो सका।
- हुदहुद तूफान की चुनौती : आंध्र प्रदेश और ओड़िशा के तटवर्ती क्षेत्रों की नारियल और अन्य बागवानी फसलों को हुदहुद तूफान के प्रकोप से बचाने एवं प्रबंधन हेतु भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के विशेषज्ञों द्वारा समय पर उचित परामर्श प्रदान किया गया। इससे फसलों को बड़े नुकसान से बचा पाना संभव हो सका। इसके अतिरिक्त, जम्मू व कश्मीर राज्य में बाढ़ के प्रकोप से प्रभावित किसानों को तकनीकी मदद प्रदान की गई।

राजभाषा उपलब्धियां

- इंदिरा गांधी राजभाषा पुरस्कार

  भारत के महामहिम राष्ट्रपति द्वारा कृषि अनुसंधान व शिक्षा विभाग को दिनांक 14 सितम्बर, 2014 को इंदिरा गांधी राजभाषा पुरस्कारों की मंत्रालयों/विभागों की श्रेणी के अंतर्गत वर्ष 2012–13 के दौरान राजभाषा नीति के श्रेष्ठ कार्यान्वयन के लिए तृतीय पुरस्कार प्रदान किया गया।

  भारत के महामहिम राष्ट्रपति द्वारा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद को दिनांक 15 नवम्बर, 2014 को इंदिरा गांधी राजभाषा पुरस्कारों की बोर्ड/स्वायत्त निकाय/ट्रस्ट/सोसायटी आदि की श्रेणी के अंतर्गत वर्ष 2013–14 के दौरान 'क' क्षेत्र में राजभाषा नीति के श्रेष्ठ कार्यान्वयन के लिए तृतीय पुरस्कार प्रदान किया गया।

नवीन पहल

- फार्मर फर्स्ट (किसान, नवीन तकनीकें, संसाधन, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी) पहल के अंतर्गत कृषकों को वैज्ञानिकों से जोड़ना तथा नई कृषि तकनीकों के आकलन, प्रदर्शन एवं प्रशिक्षण द्वारा किसानों का क्षमता विकास शामिल है जिसके लिए बजट में 300 करोड़ रूपये का आवंटन किया गया है।
- स्टूडेंट रेडी (ग्रामीण उद्यमशीलता तथा जागरूकता विकास योजना) जिसमें कृषि शिक्षा में युवाओं में उद्यमशीलता हेतु कौशल विकास को प्रोजेक्ट मोड में विभिन्न कृषि विश्वविद्यालयों में लागू किया जाएगा जिसके लिए बजट में 50 करोड़ रूपये का आवंटन किया गया है।
- आर्या (कृषि में युवाओं को आकर्षित करना एवं उनकी रूचि बनाए रखना)– कृषि में ग्रामीण युवाओं की रूचि बनाए रखने तथा गावों से युवाओं के पलायन को रोकने के लिए एक नवीन कार्यक्रम जिसमें युवाओं के लिए रोजगार के नए अवसर सृजित करने हेतु प्रोजेक्ट मोड में कार्य किया जा रहा है। इसके लिए 100 करोड़ रूपये का प्रावधान किया गया है। आर्या के क्रियान्वयन में राष्ट्रीय स्तर पर भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा नोडल एजेन्सी की भूमिका निभाई जाएगी।
- मेरा गांव–मेरा गौरव : इस प्रस्तावित योजना में 'प्रयोगशाला से खेत तक' प्रक्रिया में तेजी लाने के लिए किसानों एवं वैज्ञानिकों के बीच सम्पर्क को बढ़ावा दिया जाएगा। इस योजना का उद्देश्य प्रत्येक वैज्ञानिक द्वारा किसी एक गांव की पहचान कर वहां के किसानों को नियमित रूप से सूचना, ज्ञान, नई उन्नत किस्मों व तकनीकों के बारे में जानकारी एवं परामर्शी सुविधा प्रदान कर प्रोत्साहित करना है। इसके अंतर्गत राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा प्रणाली के लगभग 20,000 वैज्ञानिकों द्वारा गांवों को सम्पर्क गांव के रूप में चिन्हित कर कार्य करने की योजना है।
- प्रति बूंद से अधिक उपज (**Per Drop More Crop**) के लिए एक नई दृष्टि के परिणामस्वरूप विभिन्न विषयों में संयुक्त रिसर्च प्लेटफार्म की अवधारणा विकसित की गई है जिसके तहत विभिन्न संस्थान एक मंच पर साझेदारी व आपसी सूझबूझ के साथ कार्य करेंगे। इसके अंतर्गत जल प्रभावशीलता बढ़ाने के प्रयासों पर बल दिया जाएगा जिसमें अनुसंधान व प्रसार शामिल है।

चूंकि देश में कृषि एवं किसान की बेहतरी के लिए नित नवीन अनुसंधान करने का उत्तरदायित्व मूलरूप से भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद का है, इसलिए हमें परिषद के 86वें स्थापना दिवस पर माननीय प्रधानमंत्री जी के कथन 'हमें दो चीजों को सिद्ध करना है, पहला तो यही कि हमारा किसान देश और दुनिया का पेट भरने में सामर्थ्यवान हो और दूसरा हमारी कृषि, किसान की जेब भरने में समर्थ हो।'' को साकार करने में अपनी पूरी ऊर्जा एवं सामर्थ्य के साथ मिलजुलकर प्रयास करने होंगे ताकि हम कृषि के क्षेत्र में अपने राष्ट्र को प्रगति–पथ पर निरन्तर अग्रसर कर सकें। माननीय अटलजी के शब्दों में इसे इस प्रकार भी व्यक्त किया जा सकता है।

बाधाएं आतीं हैं आएं, घिरे प्रलय की घोर घटाएं . . . . .

कदम मिलाकर चलना होगा – कदम मिलाकर चलना होगा

बदलती परिस्थितियों में जोखिमों से जूझकर भी हर्षाता कृषक

संतराम यादव - केंद्रीय बारानी कृषि अनुसंधान संस्थान, संतोषनगर, हैदराबाद

भारतीय कृषकों के लिए खेती-बाड़ी एक जीवनदायी कार्य रहा है । समय-समय पर नई-नई प्रौद्योगिकियों का विकास हुआ और भारतीय कृषक की जीवन शैली में भी बदलाव लाया । उसने अपने प्राचीन तौर-तरीकों को न छोड़ने की जो कसम खा रखी थी, उसे बदलती परिस्थितियों ने बदलने हेतु मजबूर कर दिया है । आज का कृषक दुनिया में घट रही नित-नवीन परिस्थितियों से दौ-चार होता नजर आ रहा है । आज अनेकानेक कंपनियों ने उसके दरवाजे पर दस्तख्त देना आरंभ कर दिया है और उसके माल की सप्लाई समय पर करते रहने से उसे मुँह मांगा दाम भी मिलने लग गया है । वह बाजार की मांग के अनुसार अपना कृषि कार्य करता नजर आ रहा है । हमारा किसान चाहे देश के किसी भी कोने में क्यों न रहता हो, वह अपने दैनिक क्रिया-कलापों में प्रकृति की इच्छानुसार कार्य करता नजर आ रहा है । जहाँ-जहाँ उसने प्रकृति से प्रति-स्पर्धा करने का प्रयास किया है, वहाँ-वहाँ उसने कभी-कभी उसका खामियाजा भी भुगता है।

आज भारत का किसान समुदाय संपूर्ण भारत में फैले भू-भाग की जलवायु की परिस्थितियों के अनुसार अपनी फसलों की पैदावार लेने में सक्षम है । विभिन्न परिस्थितियों में ली जाने वाली फसलों का चयन वहाँ की भूमि और जलवायु पर निर्भर करता है। दिन-प्रतिदिन शहरों का बढ़ता सीमा क्षेत्र और बेतहाशा तीव्र गति से बढ़ती जन आबादी के कारण कृषि भूमि का कृषि क्षेत्र सिकुड़ता साफ नजर आ रहा है । शिक्षा के बढ़ते प्रचार-प्रसार और संचार माध्यमों से जुड़ने के कारण आज ग्रामीण आबादी के निम्नतर स्तर के लोगों का दिन-प्रतिदिन शहरी क्षेत्रों की ओर पलायन करना भी स्पष्ट नजर आ रहा है । जहाँ भारत के किसान के बारे में पहले से ही प्रचलित है कि उसके लिए 'आराम हराम है' । चिड़ियों के जगने से पूर्व ही वह खाट छोड़कर खेतों की ओर निकल जाता है, वहीं अब कुछ किसानों ने अपने दैनिक काम-धंधे को छोड़कर कम समय में अधिक कमाने की लालसा से शहरों की ओर पलायन करना शुरू कर दिया है । किसानों के खेतों में कार्य करने के लिए मजदूरों की कमी आज की परिस्थितियों में विकराल रूप धारण करती नजर आ रही है ।

बदलती परिस्थितियों के कारण सिकुड़ते कृषि क्षेत्र और बढ़ती मजदूरी का किसानों पर अधिकाधिक प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है । बाजार में खाद्यान्न की बढ़ती माँग और संकुचित कृषि क्षेत्र

के कारण घटती उपज ने हमारे कृषि क्षेत्र के नीति-निर्धारकों को वर्तमान और निकट भविष्य में आने वाली समस्याओं से निबटने के लिए सोचने पर मजबूर कर दिया है । पिछले कुछ वर्षों में देश के विभिन्न भागों में जलवायु परिवर्तन के कारण चौपट होती फसल या फिर परिस्थितियों के कारण बढ़ते सूखे की स्थिति का सामना करने के लिए किसानों व नीति-निर्धारकों को बहुत कुछ सोचने के लिए विवश होना पड़ा है। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की राष्ट्रीय जलवायु समुत्थान कृषि पहल (निक्रा) इसी समस्या के निदान हेतु प्रयासरत है । इस परियोजना से देश में वर्तमान उपलब्ध कृषि क्षेत्र में से ही किस प्रकार अधिक फसल उपज ली जा सकती है, इस बात को ध्यान में रखकर अनुसंधान कार्य आरंभ किया । 'निक्रा' के अंतर्गत किया गया अध्ययन कार्य सीधा किसानों के हितों से जुड़ा हुआ है । हमारा किसान उसी से प्रेरित-अभिप्रेरित होता नजर आ रहा है । इस परियोजना के अच्छे परिणाम देखने की सभी की लालसा है । परंतु इन बदलती परिस्थितियों में हमारा किसान भी पूर्ण रूप से जागरुक दिखलाई पड़ता है । उसने नवीन प्रौद्योगिकी को हाथों-हाथ अपना लिया है । प्राचीन तौर-तरीकों की अपेक्षा मशीनों से कार्य करने हेतु स्वयं को उसने समायोजित कर लिया है । यह कार्य उसके लिए जोखिम भरा अवश्य है परंतु समय का तकाज़ा यही कहता है कि उसे इसका भरपूर लाभ उठाना चाहिए । हमारा देश सांस्कृतिक विविधता के साथ ही भौगोलिक विविधता लिए हुए है । इस भौगोलिक विविधता को ध्यान में रखते हुए ही हमारे वैज्ञानिक उस भूमि व वहां पर उपलब्ध संसाधनों के अनुरूप खेती करने का सुझाव देते हैं । वस्तुत: देश की मिट्टी, देश का पानी, देश की जलवायु व देश में उपलब्ध संसाधनों के आधार पर ही कृषि कार्य किया जाता है और देश में हुए अनुसंधान से विकसित तकनीकों का उपयोग हमारे देश के किसानों के लिए है ।

उत्तर-दक्षिण और पूर्व-पश्चिम के किसी भी भाग में आप चले जाइए, आपको हर जगह लह-लहाते खेतों के बीच झूमता किसान अवश्य नजर आ जाएगा । वह सिर्फ खुश है तो इसलिए कि अब उसे कम से कम शारीरिक मेहनत करते हुए अधिकाधिक लाभ मिल पा रहा है । बिहार का किसान अब चावल की खेती की अपेक्षा केले की खेती करता नजर आ रहा है। इसका मूल कारण यह है कि इसमें जोखिम कम है और लाभ अधिक है । उसका खुश होने का कारण भी वाजिब है क्योंकि अब उसे एक बार रोपी गई फसल से तीन बार तक उत्पादन आसानी से मिल जाता है । यदि उसकी फसल अगेती हो तो फिर सोने पर सुहागा नजर आता है । वह सर्वप्रथम बहती गंगा में हाथ धो लेना चाहता है । सबसे पहले कटाई कर बाजार में माल पहुँचाकर मुंह-मांगा दाम लेता स्पष्ट नजर आता है । यदि उसकी वार्षिक कमाई लागत से दौगुनी-तिगुनी हो जाती है तो फिर उसके लिए सोचने-विचारने का समय ही कहाँ बचता है। ऐसी खेती में वह मजदूरों पर कम ही निर्भर रहता है और अपने परिवार के

सदस्यों के साथ मिलकर ही बुवाई-तुड़ाई, रोपाई-छिड़काई आदि सभी कार्य स्वयं करता नजर आता है।

आज दक्षिण का किसान गेहूँ का उत्पादन करने लग गया है तो उत्तर भारत विशेषकर उत्तर प्रदेश और हरियाणा के किसान ने भी अब चावल का उत्पादन लेना आरंभ कर दिया है। जहाँ एक ओर खेत में फसल कटाई हेतु निरंतर मजदूरों का खर्च बढ़ता जा रहा था, वहीं अब उसने अत्याधुनिक उपकरणों का प्रयोग करते हुए उसमें कमी लाने का मन बना लिया है। अब उसके खेत में ही मशीन पहुँच जाती है और खड़ी फसल को कुछ ही समय में काटकर उसकी मेहनत का फल उसके सामने परोस देती है जिससे उसे समय पर बाजार में माल पहुँचाने से खूब धन लाभ हो रहा है।

अत: हम कह सकते हैं कि हमारे किसान ने बदलती परिस्थितियों में अपने आप को ढाल लिया है। बढ़ते शहरीकरण को भी उसने सकारात्मक रूप में लेकर अपनी खेती में हरे चारे और फल-सब्जियों के उत्पादन पर बल दिया है। वैज्ञानिकों के अत्याधुनिक तौर-तरीकों को अपनाकर बदलते मौसम में भारतीय किसान को उसकी लागत पर बोनस मिलता स्पष्ट नजर आता है। इसीलिए कहते हैं कि जहाँ चाह, वहाँ राह। यदि वह हाथ पर हाथ धरकर बैठा रहता तो फिर सिर पीटता ही नजर आता परंतु समय के साथ उसने स्वयं में बदलाव लाया है। यह कार्य उसके लिए इतना आसान नहीं था, फिर भी उसने जोखिम उठाया। उपलब्ध कृषि क्षेत्र में ही वह कई फसलों का उत्पादन लेने में सफल रहा है। आज का किसान यदि फल-फूल रहा है तो इसका मूल कारण हमारे कृषि वैज्ञानिकों का अथक प्रयास है। हमारे कृषि प्रसार से जुड़े साथियों ने उसे विश्वास दिलाया था कि यदि वह उनकी सिफारिश की गई तकनीकियों को अपनाएगा तो वह उसके हित में रहेगा। डरते-डरते ही सही परंतु उसने उन्हें अपना लिया है। इसमें उसका जोखिम भी है परंतु वह इस जोखिम को खुशी-खुशी उठाकर अपनी फसल का अब भरपूर लाभ ले रहा है। दलहन, तिलहन, मत्स्य पालन, कुक्कुट पालन, पशु-पालन और दुग्ध उत्पादन आदि में वह बदलती परिस्थितियों में खूब फायदा ले रहा है। उसकी मेहनत भी खूब रंग ला रही है। वह अपनी अगली पीढ़ी को भी शिक्षित करने के सभी प्रयास कर रहा है। विज्ञान और किसान मिलकर चल रहे हैं। भारत आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर है।

****

कृषि उन्नति में सूचना प्रौद्योगिकी की भूमिका

सुनील कुमार[1], मोहमम्द शमीम[2], ए.के. प्रृष्टी[3], ममता बंसल[4] और सुधीर कुमार[5]

(कृषि अनुसंधान परियोजना निदेशालय, मोदीपुरम, मेरठ)

आज के बदलते परिवेश में सूचना प्रौद्योगिकी का कृषि विकास से गहरा संबंध है। कृषि सूचना प्रौद्योगिकी किसानों को नई दिशा के साथ–साथ उन्नत तकनीकी की जानकारी प्रदान करती है। इससे किसानों को कृषि से संबंधित जानकारी जैसे उन्नत फसल, गुणवत्ता वाले बीज, कीटनाशक, पोषक तत्व प्रबंधन और उत्पादन, कृषि विपणन, उर्वरकों के बेहतर उपयोग, फसल कीट प्रबंधन के उपाय, फसल चक्र से मिट्टी की उर्वरता को बढ़ाना, दुग्ध व्यवसाय, मधुमक्खी पालन, सुअर पालन, मुर्गीपालन, मछली पालन, मौसम अनुमान इत्यादि का ज्ञान होता है। वर्तमान परिदृश्य में रेडियो, टेलीफोन, दूरदर्शन, समाचार पत्र व पत्रिकाए, एंव कम्पयूटर/इंटरनेट इत्यादि जैसी सूचना तकनीकों के माध्यम से कृषि विकास में महत्वपूर्ण योगदान हो रहा है।

हमारे देश में भारतीय कृषि की संरचना पर एक नजर डालें तो उसमें सूचना प्रौद्योगिकी के उपयोग की असीम सम्भावनाएं नजर आती हैं। उदाहरणार्थ भारत में 130 से भी अधिक विभिन्न कृषि जलवायु क्षेत्र, विशाल जैव विविधता और प्राकृतिक संसाधनों से परिपूर्ण है। लेकिन विभिन्न क्षेत्रों में कृषि व्यवसाय व कृषि जोत के अनुसार सूचना की मांग भी भिन्न–भिन्न प्रकार की है। जैसे कि धान–गेहूं फसल चक्र वाले किसानों की सूचना, फल–फूल उत्पादकों से एकदम भिन्न होती है। कृषि व्यवसाय से जुड़ी प्रमुख समस्यों एंव जानकारियां जिन पर ध्यान देना आवश्यक है वह इस प्रकार है।

1	रोग एवं इनका नियंत्रण	11	कृषि उपज विपणन
2	उर्वरक का प्रयोग	12	नर्सरी/पौध उत्पादन
3	खाद्य प्रसंस्करण	13	कीट नियंत्रण
4	सरकारी योजनाओं का पता न होना	14	पौध संरक्षण
5	फसल उत्पाद वर्गीकरण	15	दुधारू पशु /मत्स्य, मुर्गी पालन इत्यादि की देखभाल
6	बुआई /रोपाई	16	बीज और खाद्यान्नों की उपलब्धता

[1,2,3,5] कृषि प्रणाली अनुसंधान परियोजना निदेशालय,मोदीपुरम, मेरठ। [4]शोभित विश्वविद्यालय, मोदीपुरम, मेरठ

7	हैचरी	17	मृदा परीक्षण
8	सिंचाई / वर्षा जल प्रबंधन	18	कटाई
9	भूमि की तैयारी	19	भंडारण
10	ऋण और वित्त प्रावधान	20	मौसम संबंधित जानकारी

इन सभी बिन्दुओं की समस्याओं का समाधान बहुत हद तक सूचना प्रौद्योगिकी की मदद से किया जा सकता है। कुछ प्रमुख सूचना प्रौद्योगिकी साधन और उनका कृषि में उपयोग का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है :

रेडियो : रेडियों सूचना संचार का सबसे पुराना माध्यम होने के साथ ही आम जनता के लिए अभी भी सबसे सस्ता और मनोरंजक साधन है। किसानों के लिए ग्रामीण विकास के कृषि कार्यक्रम, फसलोत्पादन, पशुपालन, पादप संरक्षण, वर्मी कम्पोस्ट बनाना, कीटनाशकों से फसल बचाव के उपाय एंव मौसम से संबधित जानकारी, विभिन्न कार्यक्रमों जैसे चौपाल, खेत और खलियान और अन्य कार्यक्रमों द्वारा विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं में प्रसारित करने में रेडियो की प्रमुख भूमिका रही है।

दूरर्दशन : कृषि प्रौद्योगिकी हस्तांतरण में दूरदर्शन एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। आज के तकनीकी युग में दूरदर्शन वास्तव में सबसे शक्तिशाली और बहुमुखी मीडिया है। दूरर्दशन पर आज 515 से भी ज्यादा मीडिया चैनल है, जो सार्वजनिक सूचनाएं उपलब्ध कराते हैं। निजी दूरदर्शन चैनल व्यापार और उद्योग से जुड़ी सूचनाएं उपलब्ध कराने में अहम योगदान दे रहे हैं। भारत में राष्ट्रीय टेलीविजन 'दूरदर्शन' दुनिया में सबसे बड़ा स्थलीय नेटर्वक है। विगत दशकों में 'दूरदर्शन' से ग्रामीण क्षेत्रों में सरकारी नीतियों और कृषि प्रौद्योगिकी की जानकारी उपलब्धता में वृद्दि हुई है।

राष्ट्रीय दूरदर्शन के पांच चैनल, डी.डी.1, डी.डी 2, डी.डी. न्यूज, डी.डी. भारती, डी.डी. स्पोर्टस और डी.डी. उर्दू है। इसके अतिरिक्त ग्यारह क्षेत्रीय भाषाओं के उपग्रह चैनल डी.डी. उत्तर पूर्व, डी.डी. बंगाली, डी.डी. गुजराती, डी.डी. कन्नड़, डी.डी. पंजाबी, डीडी. पोढ़ी और डी.डी. सप्तगिरी है। विभिन्न राज्यों में स्थानीय भाषाओं में क्षेत्रीय कृषि सूचनाओं के लिए दूरदर्शन के क्षेत्रीय केन्द्र हैदराबाद, गुवाहाटी, पटना, रायपुर, अहमदाबाद, शिमला, श्रीनगर, रांची, बैंगलोर, तिरूअनंतपुरम, भोपाल, मुम्बई, भुवनेश्वर, जालंधर, जयपुर, चेन्नई, लखनऊ एंव कोलकता शहरों में स्थित हैं। ये सभी केन्द्र किसानों के लिए सीधे तौर पर सरल भाषा में कृषि क्रियाओं से संबधित सूचनाएं प्रसारित करते है।

श्रव्य–दृश्य साधन :

श्रव्य–दृश्य साधन सीधे तौर पर श्रोताओं / दर्शकों को हर बात से रूबरू कराता है और किसानों को सीधे तौर पर सरल भाषा में हर वो बात बताते और दिखाते है, जिससे किसानों को खेती में फायदा मिल सकता है। श्रव्य–दृश्य साधनों की व्यवहार सुदृढीकरण, सामुदायिक भागीदारी और मनोरंजन बड़े पैमाने पर किसानों को एक साथ और प्रभावी ढ़ग से सूचना देने (वीडियों कॉन्फ्रेंसिंग) में विशेष उपयोगिता है। इसके अलावा कृषि विश्वविद्यालयों, राज्य कृषि विभागों तथा भारतीय कृषि अनुसंधान

परिषद के तत्वाधान में समय–समय पर मााासिक सेमीनार एंव कृषि सभाओं का आयोजन किया जाता है और समय–समय पर लगने वाले किसान मेलों का आयोजन किसानों को नई मशीनों और बीजों व कीटनाशक दवाईयों, तथा नई तकनीकों की जानकारी देने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है।

टेलीफोन :

आज की जरूरतों और समय के अनुसार टेलीफोन संचार का सबसे लोकप्रिय साधन बन गया है। टेलीफोन के माध्यम से कृषि समस्याओं के समाधान के लिए 1 जनवरी 2004 को समस्त देश में 13 कॉल सेंटरों की स्थापना की गई है। जिनका निशुल्क हेल्प लाइन नम्बर 1800–180–1551 व 1800–425–4085 है जो कृषि संबधित जानकारी किसी भी क्षेत्रीय भाषा में उपलब्ध कराते हैं। इसके अतिरिक्त टेलीफोन का उपयोग एस.एम.एस. द्वारा बाजार भाव एवं मौसम संबधित जानकारी उपलब्ध कराने में दिनों–दिन बढ़ रहा है।

समाचार पत्र व ई–पत्रिकाएं :

कृषि से सम्बधित ई–पत्रिकाओं व समाचार पत्रों से कृषि सम्बन्धित विभिन्न पहुलओं पर जानकारी किसान भाइयों के लिए बहुत उपयोगी होती है। कृषि की नवीनतम प्रौद्योगिकी को लोकप्रिय बनाने के लिए समाचार पत्रों एंव पत्रिकाओं द्वारा सूचना के आदान प्रदान का बहुत महत्व होता है। इससे आम आदमी को भी नई सोच, नई दिशा मिलती है, जिसका लाभ आम जन को होता है।

कंप्यूटर एवं इंटरनेट

कंप्यूटर एंव इंटरनेट के उपयोग ने कृषि क्षेत्र में एक नई सूचना क्रांति को जन्म दिया है। कंप्यूटर व इंटरनेट प्रणाली से हम कृषि से जुड़ी हर वह जानकारी प्राप्त कर सकते हैं जो हमें खेती में मदद करती है। जैसे हम अपने घर पर बैठकर ही यह जान सकते हैं कि देश में किस किस्म की फसल उगाई जाती है और कौन सी फसल किस समय पर उगानी होती है, उसके बोने के तरीके व बीज की आवश्यकता, खाद और पानी की जरूरत तथा फसल पकने पर उसका सम्भावित मूल्य क्या होगा, आज के बाजार में उसकी मांग कितनी है और आने वाले समय में उस फसल में लोगों का क्या रुझान है। अक्सर ये कहा जाता है कि हमारे किसान भाई तो कम पढ़े लिखे है तो कंप्यूटर से जानकारी कैसे लेगें। लेकिन इंटरनेट पर उपलब्ध सुविधाओं में एक सुविधा ये भी है कि आप इंटरनेट सर्च इंजिन (जैसे www.google.co.in) के प्रयोग से आसानी से उपयोगी जानकारी चुनिंदा स्थानीय भाषाओं में भी प्राप्त कर सकते हैं। कृषि से संबंधित जानकारी के कुछ वेब साईटों के नाम इस प्रकार हैः www.icar.org.in, www.drbawasakartechnologies.com, email. bmicar@icar.org.in, www.krishivigyan.com, http://agmarket.nic.in, http://agricoop.nic.in, http://dacnet.nic.in, http://www.mssrf.org, www.agriwatch.com, http://www.eagrikiosk.in, http:// www.cau.org.in, http:// www.eidparry.com, http://www.murugappa.com, http:/www.apeda.com,http:/www.indiaagronet.com,

http://www.agronet.gov.co,http://www.krishiworld.com,http://www.akashganga.inhtt p;//www.assamagribussiness.nic.in

उपरोक्त सभी वेब साईटों की मदद से हम कृषि से संबंधित हर वो जानकारी प्राप्त कर सकते हैं जिससे हम कृषि उत्पादन को बढ़ा सकते हैं। जैसें फसल, बीमारियों से संबंधित, बीज, किस्मों, उत्पादन और उपज, तिलहन फसलों की बुवाई का समय, व सही कीमतों की जानकारी मिलती है। बाजार की मंडियों के दैनिक भावों में हो रहे परिवर्तन के बारे में पता लगाया जा सकता है और जी.आई.एस आाधारित राष्ट्रीय कृषि बाजार, उत्पाद, भंडारण के क्षेत्रों के बारे में, कार्यक्रमों / योजनाओं के साथ–साथ विभागीय योजनाओं, प्रकाशन कार्यक्रम, सम्मेलनों, सेमिनारों फसल स्थिति, न्यूनतम समर्थन मूल्य, जलाशय स्तर मौसम पूर्वानुमान आदि संबंधित जानकरी प्राप्त होती है।

इलेक्ट्रॉनिक मेल (e-mail) :

तकनीकी युग में कंप्यूटर की मदद से आप जन लोक संदेश और आप अपने विचारों को एक–दूसरे तक पहुचां सकते हैं। कंप्यूटर में बहुत सारी सुविधाएं है उनमे सें ई–मेल भी एक साधन है। ई–मेल के द्वारा भी आप अपनी कृषि संबधित समस्याओं का समाधान कर सकते हो और नए विचारों को नई तकनिकियों को अपनाने से किसानों को कृषि में भरपूर फायदा हो सकता है।

निष्कर्ष :–

आज का युग सूचना प्रौद्योगिकी का युग है। सूचना प्रौद्योगिकी (आईटी) का उपयोग अब हमारी मुख्य जरूरत बन गया है। सूचना प्रौद्योगिकी आपके हर फैसले को लेने में सहायता करता है। भारतीय किसानों के हित में आज आईटी ने हर वह सुविधा उपलब्ध करवाई है जो वो चाहते हैं। आज ग्रामीण और शहरी तंत्र को जोड़ने में और उसमें विकास में आई टी ने मुख्य रोल अदा किया है। सूचना प्रौद्योगिकी से आज हम किसी भी प्रकार की सूचना को दूसरों तक पहुंचाने में सफल हुए हैं। आज के बदलते माहौल में आईटी ने एक नई सोच, नई उमंग और नई विचारधारा के रूप में कार्य किया है। भारतीय किसान के कल्याण के लिए सूचना प्रौद्योगिकी ने आज हर वह सुविधा दी जिससे भविष्य में आप हर मुश्किल से लड़ सके। किसानों के लिए ई–किओस्क, ई–चौपाल, के.वी.के व कृषि विभाग से समय–समय पर जानकारी मिलती रहती है इस तंत्र को और सुदृढ़ करने की आवश्यकता है। आज के समय में बहुत सारी वैज्ञानिक जानकारियों का संचार माध्यम के उपयोग से समय की बचत और अधिक उत्पादन सुनिशिचित किया जा सकता है जो देश की उन्नति के लिए हितकर है।

****

कार्यालयी अनुवाद

के.आर.जोशी – केन्द्रीय कपास प्रौद्योगिकी अनुसंधान संस्थान, मुम्बई

अनुवाद क्या है ?

अनु+वद्+घञ से व्युत्पन्न संस्कृत शब्द है । यह वद् धातु से विकसित शब्द है । अनुवाद की व्युत्पत्ति भारत की प्राचीन ज्ञान परंपरा से संबंधित है। प्राचीन भारत में गुरूकुल के समय में गुरू जो वचन कहते थे उसे शिष्यों द्वारा दोहराया जाता था, उसे अनुवचन या अनुवाद कहा जाता था। जिसे ज्ञान हासिल करना होता था, वह बार बार उसे दोहराकर याद करते थे, ज्ञान अर्जित करने की यह सबसे उत्तम विधि प्रचलित थी । प्राचीन काल में किसी एक भाषा से कही गई बात को स्थानीय बोलचाल की भाषा में फिर से कहने के अर्थ में अनुवाद प्रयुक्त होता था । विधि तथा जानी पहचानी, ज्ञात भाषा मे अनुवचन करना, फिर से दोहराना अनुवाद कहलाता है ।

अनुवाद एक भाषा से दूसरी भाषा में प्रस्तुतीकरण या प्रतिनिधित्व की पद्धति है। अनुवाद वह कला है जिसमें भिन्न धरातल वालों के लिए किसी बात का किसी अन्य भाषा में फिर से सृजन होता है । अनुवाद का अर्थ होता है - किसी बात को, कागजात को, भाषण को उसकी अपनी भाषा से अलग अन्य दूसरी भाषा में करना ।

अनुवाद वह कला है जिसमें सभी पारंगत नहीं हो सकते। अनुवाद वही सही रूप से कर सकता है जिसे स्त्रोत भाषा(Source language)और लक्ष्य भाषा (Target language) दोनों की अच्छी जानकारी हो । यदि तीन अनुवादकों को एक ही वाक्य अनुवाद हेतु दिया जाये तो उनके अनुवाद में हमें भिन्नता दिखाई देती है ।

वे बहुत सख्त हैं ।

वे बहुत गरम मिजाज हैं ।

वे बहुत गुस्से वाले हैं ।

अब यह उस व्यक्ति पर निर्भर करता है कि इसे किस तरीके से किस मायने में और वाक्य के पहले और बाद में आने वाले वाक्य से किस प्रकार से भावनात्मक रूप से लिया जाये । अनुवाद में दो भाषाओं का संबंध रहता है । अनुवाद एक भाषा में व्यक्त विचारों को दूसरी भाषा में व्यक्त करने का प्रयास है। यह भाषांतर की गंभीर प्रक्रिया है । अनुवाद दो संस्कृतियों, भाषाओं के बीच पुल का काम करता है। अनुवाद, भाषांतरण का शब्द जाल नहीं बल्कि संप्रेषण का सरल, सहज और सटीक प्रयास है ।

स्वतंत्रता के बाद संविधान में हिंदी को राजभाषा के रूप में स्थान दिये जाने के बाद हिन्दी केन्द्र के शासन की भाषा बन गई । राजभाषा और शासन की भाषा सरकार और जनता के बीच श्रृंखला का काम करती है ।

इसलिए भाषा का सहज और सरल होना नितांत आवश्यक है। हिंदी को राजभाषा बनाने के लिए एक तथ्य काफी महत्वपूर्ण है कि इसे भारत देश के ज्यादा से ज्यादा लोग बोलते हैं।

कार्यालयी अनुवाद करते समय सबसे बडी दिक्कत है, तकनीकी और प्रशासनिक शब्दों में असमानता होना अर्थात एकरूपता का अभाव जैसे फाईल के लिए मिसिल, पत्रावली, संचिका आदि शब्द। शब्द भले ही कठिन हो परंतु वाक्य यदि सरल और सहज हो तो उसे समझा जा सकता है और इसमें भावों का आना भी जरूरी है। इसके उलटे,शब्द सरल हो तो भी यदि वाक्य रचना उलझी और असहज हो तो भाव स्पष्ट नही होंगे।

प्रशासनिक अनुवाद, जो परिभाषिक शब्दावली सरकार ने बनाई है, उसी को लेकर किया जाना चाहिए जिससे एकरूपता बनी रहे, क्लिष्ट शब्दों का प्रयोग कदापि न करें। पढ़ने वाले की समझ में सहजता से आना चाहिए। कोशगत रूपों, भाषा संरचना शैली आदि में अनुरूपता होनी चाहिए। अनुवाद में मौलिकता होनी चाहिए। अनुवाद सहज और पठनीय, स्वाभाविक व प्रवाहपूर्व हो। बोधगम्यता, भाव संप्रेषणीयता अनुवाद में होना चाहिए। कार्यालय के तकनीकी अनुवाद के लिए उस कार्यालय की कार्यपद्धति की जानकारी अनुवादक को होनी चाहिए। जैसे **Cotton Plant** का अनुवाद **कपास संयंत्र** नही अपितु **कपास पौधा** होता है। अनूदित विषय का ज्ञान होना काफी आवश्यक है। भाषा में होने वाली गड़बड़ी, शंका, त्रुटि पर सूक्ष्म ध्यान देना काफी जरूरी है। मूल पाठ के प्रति सचेत रहकर, अनुवाद सामग्री को ध्यानपूर्वक तब तक पढ़ा जाये, जब तक उसमें निहित भावों को न जान लें। लम्बे और जटिल वाक्यों से बचना चाहिए। भाषा के समानार्थी शब्द को लेते समय मूल विषय का पूरा ध्यान रखना भी आवश्यक है। पारिभाषिक, तकनीकी और वैज्ञानिक शब्दों के लिए केवल स्वीकृत पर्याय ही उपयोग में लाने चाहिए। यदि स्वीकृत पर्याय उपलब्ध नहीं हैं, तो मूल शब्द को ही लिप्यांतरित रूप में प्रस्तुत करना चाहिए।

मूल पाठ के भाव को समझे बिना अनुवाद न करें। वाक्य का अपना अर्थ होता है इसलिए शब्द प्रति - शब्द का अनुवाद न करें। अनुवाद, अनुवाद की तरह न लगे, इसके लिए अनुवाद करने वाले को मन मस्तिष्क को जागरूक रखना काफी जरूरी है।

सारांश :

अनुवाद जल्दबाजी में ना कर, पूरी तरह से वाक्य को समझने के बाद ही करना चाहिए।

******

1. केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, कोचीन

हिन्दी चेतना मास समारोह

केंद्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान मुख्यालय, कोचीन में राष्ट्रीय एकता और भाषायी सद्भाव पर विशेष ज़ोर देते हुए दिनांक 01.09.2013 से 28.09.2013 तक विभिन्न कार्यक्रमों और प्रतियोगिताओं के साथ हिंदी चेतना मास आयोजित किया गया. इस दौरान संस्थान के कर्मचारियें और **अनुसंधेताओं** के लिए हिन्दी में विभिन्न प्रतियोगिताएं जैसे हिन्दी पर महान व्यक्तियों के वचन, टिप्पण व आलेखन, राष्ट्रीय एकता विषय पर पोस्टर, भाषण, कविता पाठ, प्रश्नोत्तरी और ई- प्रयोग आयोजित की गयीं।

हिन्दी चेतना मास का उदघाटन दिनांक 03.09.2013 को ई – प्रयोग पर कार्यशाला के आयोजन के साथ किया गया। डॉ. वी. कृपा, प्रधान वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष, एफ ई एम प्रभाग ने कार्यशाला का उदघाटन किया।

हिन्दी चेतना मास का समापन समारोह दिनांक 28.09.2013 को आयोजित किया गया. डॉ.ए.गोपालकृष्णन, निदेशक, सी एम एफ आर आइ ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। अपनेभाषण में उन्होंने बोलचाल की हिन्दी की कक्षा आयोजित करने का सुझाव दिया। डॉ. पी. टी. लक्ष्मणन, प्रभारी निदेशक, सी आइ एफ टी, कोचीन कार्यक्रम में मुख्य अतिथि थे।

'नवजागरण' विषय पर प्रस्तुत किए गए सांस्कृतिक कार्यक्रम द्वारा राष्ट्रीय जागरण की आवश्यकता और प्रधानता का संदेश फैलाया गया।

सी एम एफ आर आइ के दस अधीनस्थ केंद्रों में भी विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों और प्रतियोगिताओं के साथ हिन्दी दिवस / हिन्दी सप्ताह / पखवाड़े का आयोजन किया गया।

डॉ.ए. गोपालकृष्णन, निदेशक, सी एम एफ आर आइ
अध्यक्षीय भाषण देते हुए

वर्ष के दौरान आयोजित हिन्दी कार्यशालाएं

वर्ष के दौरान संस्थान में चार हिन्दी कार्यशालाएं आयोजित की गयीं जिनका विवरण नीचे दिया गया है।

कार्यशाला की तारीख	विषय	भागीदारों की संख्या
5-6 जून, 2013	यूनिकोड का प्रयोग	12
03.09.2013	ई – प्रयोग	30
11-13.12.2013	बोलचाल की हिन्दी	28
18-19.02.2014	बोलचाल की हिन्दी	12

हिन्दी कार्यशाला के उदघाटन कार्यक्रम का दृश्य

अधीनस्थ केन्द्रों में आयोजित निरीक्षण

वर्ष के दौरान संस्थान निदेशक डॉ.ए.गोपालकृष्णन ने अधीनस्थ केन्द्रों के राजभाषा कार्यान्वियन की प्रगति का निरीक्षण किया।

भा कृ अनु प संस्थानों का निरीक्षण

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के निदेशानुसार सी एम एफ आर आइ के उप निदेशक (रा भा) और सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी ने परिषद के नियंत्रणाधीन तीन संस्थानों – काजू अनुसंधान निदेशालय, पुत्तूर (24.10.2013), भारतीय मसाला अनुसंधान केन्द्र, कोषिक्कोड (07.11.2013) और राष्ट्रीय केला अनुसंधान केन्द्र, तिरुच्चिराप्पल्ली, तमिल नाडु (05.12.2013) की राजभाषा गतिविधियों का निरीक्षण करके सुधार के लिए आवश्यक दिशा-निर्देश दे दिया।

वर्ष के दौरान निकाले गए हिन्दी प्रकाशन

1) समुद्री मात्स्यिकी सूचना सेवा
2) कडलमीन – सी एम एफ आर आइ समाचार

संस्थान की प्रमुख उपलब्धियाँ

क) राजर्षि टंडन पुरस्कार

केंद्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, कोचीन को वर्ष 2012-2013 के दौरान 'ग' क्षेत्र में स्थित भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के संस्थानों में राजभाषा गतिविधियों के उत्कृष्ट निष्पादन के लिए राजर्षि टंडन पुरस्कार प्राप्त हुआ. नई दिल्ली में आयोजित निदेशकों के सम्मेलन में डॉ. गोपालकृष्णन, निदेशक, सी एम एफ आर आइ ने पुरस्कार स्वीकार किया.

डॉ. ए. गोपालकृष्णन, निदेशक, सी एम एफ आर आइ डॉ. एस. अय्यप्पन, सचिव (डेयर) एवं महानिदेशक, भा कृ अनु प से पुरस्कार स्वीकार करते हुए

ख) कोच्ची न रा का स पुरस्कार

संस्थान को राजभाषा कार्यान्यिन के उत्कृष्ट निष्पादन के लिए कोच्ची नगर राजभाषा कार्यान्वियन समिति की वर्ष 2012 – 2013 की अवधि की ट्रोफी (प्रथम स्थान) प्राप्त हुई.

श्री राकेश कुमार, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी, सी एम एफ आर आइ मुख्य आयकर आयुक्त श्री डी.के.दास शर्मा से ट्रोफी स्वीकार करते हुए

****

2. केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान करनाल

1. **संस्थान राजभाषा कार्यान्वयन समिति की त्रैमासिक बैठकें**

- दिनाँक 8 जुलाई 2013 को केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान राजभाषा कार्यान्वयन समिति की प्रथम बैठक आयोजित की गई जिसमें परिषद से प्राप्त पत्रों एवं तिमाही रिपोर्ट की समीक्षा, पिछली तिमाही में हुए राजभाषा कार्यों की समीक्षा व राजभाषा सम्बंधी वर्ष 2012–13 के वार्षिक कार्यक्रम के बारे में चर्चा की गई और सितम्बर में होने वाले हिन्दी पखवाड़े की योजना बनाई गई।
- दिनाँक 10 अक्तूबर 2013 को केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान राजभाषा कार्यान्वयन समिति की द्वितीय बैठक आयोजित की गई जिसमें पिछली बैठक की कार्यवाही की पुष्टि तथा अनुवर्ती कार्रवाई की समीक्षा, परिषद से प्राप्त राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक के कार्यवृत्त की समीक्षा व हिन्दी पखवाड़े की रिपोर्ट पर चर्चा की गई।
- दिनाँक 6 जनवरी 2014 केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तृतीय बैठक आयोजित की गई जिसमें पिछली बैठक की कार्यवाही की पुष्टि तथा अनुवर्ती कार्रवाई की समीक्षा, परिषद से प्राप्त राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक के कार्यवृत्त की समीक्षा पर चर्चा की गई।
- दिनाँक 8 अप्रैल 2014 को केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान राजभाषा कार्यान्वयन समिति की चतुर्थ बैठक आयोजित की गई जिसमें पिछली बैठक की कार्यवाही की पुष्टि एवं अनुवर्ती कार्रवाई की समीक्षा, परिषद से प्राप्त पत्रों पर विचार, कार्यशालाओं का आयोजन, वैबसाइट द्विभाषी बनाए जाने, पैनल व बोर्ड द्विभाषी बनाने के संबंध में चर्चा की गई।

संस्थान राजभाषा कार्यान्वयन समिति की त्रैमासिक बैठक दिनाँक 10 अक्तूबर 2013 में विचार–विमर्श करते सदस्यगण

संस्थान राजभाषा कार्यान्वयन समिति की त्रैमासिक बैठक दिनाँक 6 जनवरी 2014 में विचार–विमर्श करते सदस्यगण

2. **पुरस्कार**

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 57वीं छमाही बैठक जिसका आयोजन दिनांक 26.06.2013 को राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान, करनाल में हुआ, में संस्थान को **राजभाषा हिंदी संबंधी उल्लेखनीय कार्य करने हेतु प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया।**

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 57वीं छमाही बैठक में हिन्दी में उल्लेखनीय कार्य करने हेतु संस्थान को दिए गए प्रथम पुरस्कार को प्राप्त करते हुए संस्थान के निदेशक डा. दिनेश कुमार शर्मा

3. **नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें**

- नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की दिनांक 26.06.2013 को राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान, करनाल में सम्पन्न हुई 57 वीं छमाही बैठक में संस्थान के निदेशक, प्रशासनिक अधिकारी, प्रशासनिक अधिकारी (कार्यकारी) एवं राजभाषा प्रभारी/अधिकारी ने भाग लिया।
- केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, करनाल में 17 दिसम्बर, 2013 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास) की 58वीं छमाही समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया। इस बैठक की अध्यक्षता संस्थान के निदेशक डा. दिनेश कुमार शर्मा ने की। श्री बलबीर सिंह एवं श्रीमती नीरा मल्होत्रा, आयुक्त, आयकर विभाग, करनाल तथा भारत सरकार, गृह मंत्रालय/राजभाषा विभाग, उत्तर क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (दिल्ली) के उपनिदेशक (कार्यान्वयन) श्री शैलेश कुमार सिंह व श्री रामशंकर गौतम, सचिव, नराकास इस बैठक के विशिष्ट अतिथि रहे। बैठक में नराकास करनाल के सदस्य कार्यालयों द्वारा की गई विभिन्न राजभाषा गतिविधियों की समीक्षा के अतिरिक्त उपस्थित कार्यालयों प्रमुखों व राजभाषा अधिकारियों ने सभी कार्यालयों में अधिक से अधिक कार्य राजभाषा में

****

3. कृषिरत महिला अनुसंधान निदेशालय, भुवनेश्वर

हिन्दी दिवस

कार्यालय में हिंदी दिवस **14** सितम्बर **2013** को एवं हिन्दी चेतना पखवाड़ा **16-30 सितम्बर 2013** के दौरान मनाया गया। जिसमे विभिन्न कार्यक्रम एवं प्रतियोगिताएं आयोजित किए गएA इस दौरान कुल नौ प्रतियोगिताएं जैसे स्लोगन/आदर्श-वाक्य प्रतियोगिता; हिन्दी में निबंध प्रतियोगिता; हिन्दी में निबंध प्रतियोगिता; हिन्दी वेग गति पाठन; हिन्दी शब्दावली प्रतियोगिता; हिन्दी आलेखन एवं टिप्पण प्रतियोगिता; हिन्दी टंकण प्रतियोगिता ; स्व रचित हिन्दी कविता पाठ; हिन्दी में वाद - विवाद प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। इन कार्यक्रमों में सभी अधिकारी, कर्मचारी एवं प्रोजेक्ट कर्मचारी अत्यंत उत्साह पूर्वक भाग लिए। हिन्दी चेतना पखवाड़ा 2013 का पुरस्कार वितरण समारोह दिनांक 04.10.2013 को आयोजित किया गया।

राजभाषा समिति बैठकें एवं कार्यशालाएं

राजभाषा नियमों के अनुसार प्रत्येक तिमाही मे राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें एवं हिंदी कार्यशाला नियमित रूप से आयोजित की गईं| जिसका विवरण निम्न प्रकार है:

क्र. सं	**तिमाही**	**राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक आयोजन की तथी**	**तिमाही हिंदी कार्यशाला का आयोजन की तिथी**	**कार्यशाला का विषय**
1	अप्रैल से जून 2013	14-06-2013	22-06-2013	कामकाजी हिंदी की सरलता व हिन्दी शब्दावली
2	जुलाई से सितम्बर 2013	02-09-2013	28-09-2013	देवनागरी लिपि, वर्तनी एवं प्रयोग
3	अक्टूबर से दिसंबर 2013	30-12-2013	31-12-2013	राजभाषा नीति, कार्यान्वयन – निरीक्षण
4	जनवरी से मार्च 2014	19-03-2014	22-03-2014	सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग में अशुद्धियाँ – उनके निवारण के उपाय

दिनांक 18/08/2013 से राजभाषा सम्बंधित निर्देशों का समुचित अनुपालन सुनिश्चित करने हेतु एवं राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी विवरण का अधिक एवं कारगर प्रसारण हेतु इस निदेशालय के राजभाषा प्रोकोष्ट द्वारा एक फेसबुक पृष्ट facebook.com/DRWARajbhasha आरम्भ किया गया।

श्रीमती गीता साहा, तकनिकी अधिकारी को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा दिनांक 12/08/2013 को आयोजित हिन्दी निबन्ध लेखन प्रतियोगिता में प्रथम परस्कार पाने के अवसर पर प्रमाण पत्र, शील्ड एवं स्वर्ण पतक से मुख्य आयकर आयुक्त, भुवनेश्वर के द्वारा दिनांक 30/10/2013 कों अपराह्न 04.00 बजे मुख्य आयकर आयुक्त कार्यालय, भुवनेश्वर में पुरस्कृत किया गया।

राजभाषा संबंधी रोस्टर के अनुसार शेष एक कनिष्ट आशुलिपिक को हिंदी शिक्षण योजना, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार का कंप्यूटर / हिन्दी आशुलिपि का एक-वर्ष की प्रशिक्षण हेतु 17 फरवरी 2014 से भेजा जा रहा है।

संस्थान की उपलब्धियॉ 2013–14

1. कृषिरत महिलाओं के कठिन श्रम एवं थकान को कम करने के लिए महिला–अनुकूल बैठकर तथा पैडल से चलाई जाने वाली मक्का छीलने एवं दाना निकालने वाले यंत्रः को विकसित किया गया जिसकी उत्पादक क्षमता 240–300 कि.ग्रा./5 घंटे/ दिन है।
2. बीज बोने की गतिविधि में दोहराव के कारण अनुभव होने वाली थकान व कठिन श्रम को कम करने के लिए ''बीज विकास ट्यूब'' विकसित की गई। इसके प्रयोग से तनाव सूचकांक, जो कि पारंपरिक विधि में 6.75 था, घटकर मात्र 1.1 स्कोर तक पाया गया।
3. स्थानीय बाज़ार से प्राप्त मत्स्य अपशिष्ट से साइलेज का निर्माण किया गया जिसकी गुणवत्ता का अध्ययन 180 दिन तक किया गया। तैयार किए गए साइलेज की भंडारण क्षमता सामान्य तापमान में छः महीने तक अच्छी पाई गई।
4. परवल एवं अनानास के अंतः पात्र इन–विट्रो गुणन के लिए मीडिया मानकीकृत किया गया तथा परवल के पौधे के परिगलन/अतिक्षय को कम करने की पद्धति को अनुकूलित किया गया।

5. संसाधन उपयोग दक्षता बढ़ाकर फसल उत्पादकता और लाभप्रदता बढ़ाने के उद्देश्य से ‘बागवानी आधारित संसाधन कुशल मॉडल’ विकसित किया गया जिसे आर्थिक एवं पोषण पैमानों पर दक्षता के लिए जॉचा गया।

6. माइक्रोइन्कैप्सुलेशन तकनीकि द्वारा सूती कपड़ों के लिए लैंटाना कामरा, नीलगिरी, ट्राइडैक्स, टीनोस्पोरा की पत्तियों का उपयोग कर पर्यावरण अनुकूल सूक्ष्म जीव विरोधी उपचार विकसित किया गया।

7. कृषिरत महिलाओं के तकनीकि सशक्तिकरण एवं ज्ञान वर्धन के उद्देश्य से कृषिरत महिला के लिए तकनीकि सप्ताह’ का आयोजन 22–27 जनवरी, 2014 को किया गया जिसमें विभिन्न अंतः प्रांगण एवं बाह्य परिसर कार्यक्रम शामिल थे।

8. निदेशालय की महिला ग्राम पैरा प्रसार कार्यकर्ता, श्रीमती अनुसूया बेहेरा को कृषि महिन्द्रा समृद्धि भारत एग्री आवार्ड 2014 में प्रतिष्ठित ''कृषि प्रेरणा सम्मान'' से सम्मानित किया गया।

9. निदेशालय में प्रशिक्षण एवं निर्माण इकाई के निर्माण हेतु 60 लाख रूपए के राशि आर.के.वि.वाई परियोजना के अंतर्गत मंजूर की गई है जिसका उपयोग कृषक महिला के अनुकूल कृषि उपकरणों एवं प्रौद्योगिकी के हस्तांतरण के लिए किया जाएगा।

10. निदेशालय को 19 जून, 2013 को आई एस ओ 9001:2008 प्रमाण पत्र प्राप्त हुआ।

****

4. भारतीय कृषि सांख्यिकी अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली

हिन्दी पखवाड़ा

हिन्दी पखवाड़े का आयोजन संस्थान में 02 से 16 सितम्बर 2013 के दौरान किया गया। 02 सितम्बर, 2013 को हिन्दी पखवाड़े का उद्घाटन संस्थान के निदेशक, डॉ. उमेश चन्द्र सूद जी द्वारा किया गया । हिन्दी पखवाड़े के उद्घाटन के अवसर पर काव्य पाठ का आयोजन किया गया । हिन्दी पखवाड़े के दौरान शिक्षक दिवस, डॉ. दरोगा सिंह स्मृति व्याख्यान के साथ–साथ वैज्ञानिक प्रभागों में हिन्दी में सर्वाधिक वैज्ञानिक कार्य करने के लिए प्रभागीय चलशील्ड, हिन्दी में शोध–पत्र–पोस्टर–प्रदर्शन–प्रतियोगिता, प्रश्न–मंच, अन्ताक्षरी, हिन्दी वर्तनी प्रतियोगिता, हिन्दीतर कर्मियों के लिए हिन्दी श्रुतलेख एवं शब्दार्थ लेखन प्रतियोगिताएं आयोजित की गयी। **प्रश्न–मंच एवं अन्ताक्षरी प्रतियोगिता के संचालकों द्वारा इन प्रतियोगिताओं को ऑडियों विजुअल रूप में प्रस्तुत किया गया** जिससे ये प्रतियोगिताएँ अत्यन्त ही रोचक रहीं। सभी प्रतियोगिताओं मे छात्रों सहित संस्थान के विभिन्न वर्गों के कर्मियों ने बढ़–चढ़ कर हिस्सा लिया। संस्थान में 05 सितम्बर, 2013 को शिक्षक दिवस का आयोजन किया गया जिसमें किसी सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक द्वारा हिन्दी में व्याख्यान दिया जाता है। इस वर्ष यह व्याख्यान भारतीय कृषि सांख्यकीय अनुसंधान संस्थान के पूर्व सयुंक्त निदेशक, डॉ अरुण कुमार श्रीवास्तव जी द्वारा ''कृषि सांख्यिकी में प्रतिचयन पद्धति का विकास एवं कियान्वयन – एक परिदृश्य'' विषय पर दिया गया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता राष्ट्रीय कृषि विज्ञान अकादमी के अध्यक्ष, प्रोफेसर राम बदन सिंह जी द्वारा की गयी। दिनांक 16 सितम्बर 2013 को हिन्दी पखवाड़े का समापन समारोह हुआा। इस अवसर पर हिन्दी पखवाडे के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के सफल प्रतियोगियो को पुरस्कृत करने के साथ–साथ अक्टूबर 2012 से जून 2013 तक की अवधि के दौरान संस्थान में आयोजित कार्यशालाओं के वक्ताओं/प्रशिक्षकों को भी सम्मानित किया गया।

हिन्दी पखवाड़े के दौरान ''शिक्षक दिवस'' का दृश्य

हिन्दी कार्यशालाएं

हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी संस्थान के विभिन्न वर्ग के कर्मियों के लिए तकनीकी विषयों के साथ–साथ अन्य विषयों पर चार हिन्दी कार्यशालाएं आयोजित की गयी। इस वर्ष की पहली कार्यशाला 25 से 27 अप्रैल, 2013 के दौरान **''आंकडों की प्रोसेंसिंग एवं विश्लेषण''** जैसे तकनीकी विषय पर आयोजित की गयी। इस कार्यशाला का आयोजन संस्थान के परीक्षण अभिकल्पना प्रभाग की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ सिनी वरगीस, वैज्ञानिक डॉ सुशील सरकार एवं वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ अनिल कुमार द्वारा किया गया तथा इस कार्यशाला में संस्थान के अनेक वैज्ञानिकों द्वारा उपरोक्त विषय से सम्बन्धित विभिन्न उप–विषयों पर हिन्दी भाषा में व्याख्यान दिये गये। कार्यशाला में प्रतिभागियों को व्याख्यान की सामग्री हिन्दी भाषा में उपलब्ध करायी गयी। द्वितीय कार्यशाला 19 दिसम्बर, 2013 को **''मासिक हिन्दी प्रगति रिपोर्ट का प्रपत्र भरने तथा डिस्पैच एवं डायरी रजिस्टरों का रखरखाव''** विषय पर आयोजित की गई। इस कार्यशाला में संस्थान की वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी, सुश्री ऊषा जैन ने प्रतिभागियों को सम्बन्धित विषय पर जानकारी उपलब्ध करायी/व्याख्यान दिया। तृतीय कार्यशाला 06 जनवरी, 2014 को ''डेस्कटॉप पब्लिशिंग में पेजमेकर का उपयोग'' जैसे तकनीकी विषय पर आयोजित की गयी। इस कार्यषाला में संस्थान के सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी, श्री नरेश चन्द एवं श्री पन्ना लाल गुप्ता द्वारा प्रतिभागियों को उक्त विषय पर व्यवहारिक जानकारी उपलब्ध कराते हुए व्याख्यान दिया। चतुर्थ कार्यशाला का आयोजन 19 फरवरी, 2014 को ''कंप्यूटर पर हिन्दी प्रयोग के लिए यूनिकोड एनकोड्गि का प्रयोगं '' विषय पर किया गया। इस कार्यशाला में एन.आई.सी राजभाषा विभाग के वरिष्ठ तकनीकी निदेशक श्री केवल कृष्ण ने प्रतिभागियों को सम्बन्धित विषय पर व्याख्यान दिया व जानकारी उपलब्ध करायी। सभी कार्यशालाएं संस्थान के कर्मियों द्वारा सराहनीय रही।

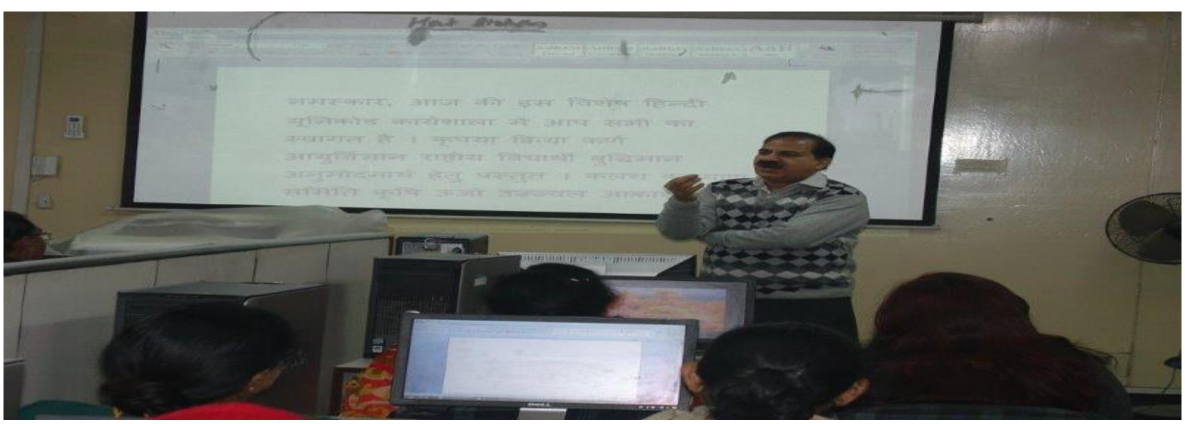

हिन्दी कार्यशाला ''कंप्यूटर पर हिन्दी प्रयोग के लिए यूनिकोड एनकोडिंग का प्रयोग'' का दृश्य

हिन्दी प्रकाशन

वर्ष 2014 के दौरान सांख्यिकी आनुवांषिकी प्रभाग के वैज्ञानिकों एवं तकनीकी अधिकारियों द्वारा निकाले गए सांख्यिकी विमर्ष से हिन्दी प्रकाशनों की सूची

- **गुच्छन विधियों का गुणात्मक और मात्रात्मक आंकड़ों के मिश्रण पर आधारित एक तुलनात्मक प्रदर्षन (61)**
  –रूपम कुमार सरकार, आत्माकुरि रामाकृष्णा राव, संत दास वाही एवं प्रविण कुमार मेहर
- **वेब ई.सी.जी.आर. पैकेज़ द्वारा लगातार गैर–घटती परिस्थितियों में विकास दर का आकलन (66)**
  – हिमाद्रि घोष, सविता वधवा एवं प्रज्ञेषु
- **अभिकल्पित प्रयोगों में लघु माध्य वर्ग तकनीकी का अनुप्रयोग (83)**
  – रंजीत कुमार पॉल, अमृत कुमार पॉल, बिशाल गुरूंग एवं लाल मोहन भर
- **सूअरों के प्रारम्भिक चयन में वृद्धि के वक्रीय मापदंडों की उपयोगिता (89)**
  – अमृत कुमार पॉल, रंजीत कुमार पॉल, संत दास वाही, विजय पाल सिंह एवं सत्यपाल सिंह
- **भारत में प्याज उत्पादन के विश्लेषण हेतु गैर–सरेखीय समाश्रयण तकनीको का प्रयोग (99)**
  – संजीव पंवार, अनिल कुमार, कमलेश नारायण सिंह, रंजीत कुमार पॉल, मोहम्मद समीर फारूखी, अभिषेक राठौर एवं विपिन कुमार चौधरी
- **shRNAPred (संस्करण 1.0): छोटे बाल–कांटा सामान RNA(shRNA) के पूर्व कथन हेतु एक खुला स्रोत एवं स्वसंपूर्ण सॉफ्टवेयर (121)**
  –तन्मय कुमार साहू, प्रविण कुमार मेहर, उदय प्रताप सिंह, आत्माकुरि रामाकृष्णा राव एवं संत दास वाही
- **आरेखीय मॉडल समय श्रृंखला के माध्यम से भारत की हल्दी उपज का सांख्यिकीय विश्लेषण (127)**
  –बिशाल गुरूंग, रंजीत कुमार पॉल, अमृत कुमार पॉल एवं अनिल गर्ग

वर्ष 2014 के दौरान प्रतिदर्श सर्वेक्षण प्रभाग **के वैज्ञानिकों एवं तकनीकी अधिकारियों द्वारा निकाले गए सांख्यिकी विमर्ष से हिन्दी प्रकाशनों की सूची**

[1] कृष्ण कान्त त्यागी, अशोक कुमार गुप्ता एवं विजय बिन्दल (2014): संस्थान के कीर्तिस्तम्भः डा. ओम प्रकाश कथूरिया । सांख्यिकी–विमर्श, भारतीय कृषि सांख्यिकी अनुसंधान संस्थानः 2013–14, अंक–9, पृष्ठ संख्या 1–3 ।

[2] उमेश चन्दर सूद, मान सिंह एवं हुकुम चंद्र (2014): कृषि गणना–एक परिचय । सांख्यिकी–विमर्श, भारतीय कृषि सांख्यिकी अनुसंधान संस्थानः 2013–14, अंक–9, पृष्ठ संख्या 15–20 ।

[3] हुकुम चन्द्र, उमेश चन्दर सूद एवं विजय विन्दल (2014): भारत में कृषि सांख्यिकी प्रणाली । सांख्यिकी–विमर्श, भारतीय कृषि सांख्यिकी अनुसंधान संस्थानः 2013–14, अंक–9, पृष्ठ संख्या 21–27।

[4] हुकुम चंद्र, उमेश चन्दर सूद एवं मान सिंह (2014): आगत/निवेश सर्वेक्षण – एक परिचय । सांख्यिकी–विमर्श, भारतीय कृषि सांख्यिकी अनुसंधान संस्थानः 2013–14, अंक–9, पृष्ठ संख्या 44–47।

[5] एस. बी. लाल, अनु शर्मा, हुकुम चन्द्र एवं अनिल राय (2014): प्रतिदर्श सर्वेक्षण में प्रतिरूप चयन हेतु वेब आधारित सॉफ्टवेयर। सांख्यिकी–विमर्श, भारतीय कृषि सांख्यिकी अनुसंधान संस्थानः 2013–14, अंक–9, पृष्ठ संख्या 48–55।

5. ज्वार अनुसंधान निदेशालय, हैदराबाद

हिंदी चेतना मास समारोह

ज्वार अनुसंधान निदेशालय में सितंबर, 2013 माह को हिंदी चेतना मास के रूप में मनाया गया। डॉ. जे वी पाटील, निदेशक, ज्वा.अनु.नि. के द्वारा 02 सितंबर 2013 को उक्त चेतना मास का उदघाटन किया गया। कार्यक्रम का प्रारंभ भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद गान से हुआ। इस अवसर पर डॉ. पाटील ने माँ सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण तथा दीप प्रज्जवलित करके समारोह के शुभारंभ की घोषणा की। डॉ. पाटील ने अपने संबोधन में कहा कि राजभाषा हिंदी की प्रगति हमारे कर्तव्य के अलावा, हमारी एक अनिवार्य आवश्यकता भी है। उन्होंने अपनी घटना का उदाहरण देते हुए बताया कि जब हम क्षेत्र विशेष से बाहर जाते हैं तब हमें इसके महत्व का पता चलता है और इसकी आवश्यकता पड़ती है।

हिंदी चेतना मास दौरान हिंदी में श्रुत-लेखन, प्रश्न-मंच, टिप्पण एवं आलेखन, “खाद्य सुरक्षा विधेयक” विषय पर निबंध-लेखन, छोटे शब्दों एवं पदों का हिंदी में अनुवाद, काव्य पाठ वाचन, उचित शब्द एवं संकेत तथा हिंदी पाठ का वाचन नामक विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। जिनमें वैज्ञानिक, तकनीकी, प्रशासनिक तथा अनुसंधान सहायक, शोध छात्रों आदि ने बड़े-ही उत्साह व उमंग के साथ भाग लिया। इसके अलावा उक्त चेतना मास के दौरान हिंदी में हस्ताक्षर अभियान भी चलाया गया, जिसमें सभी अधिकारियों तथा कर्मचारियों ने हिंदी में हस्ताक्षर करके कार्यक्रम को सफल बनाया।

निदेशालय की सम्मेलनशाला में 30 सितंबर 2013 को हिंदी चेतना मास के समापन समारोह का आयोजन किया गया। सर्वप्रथम डॉ. जे एस मिश्र, प्रभारी अधिकारी-हिंदी कक्ष ने समारोह में उपस्थित लोगों का स्वागत किया। संस्थान के प्रभारी निदेशक, डॉ. एस एस राव ने मुख्य अतिथि के रूप में पधारे डॉ. एस एल गोस्वामी, निदेशक, राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंध अकादमी, हैदराबाद का पुष्पगुच्छ से स्वागत किया। तत्पश्चात श्री जाकिर हुसैन खिलजी, वरिष्ठ वित्त एवं लेखा अधिकारी ने डॉ. एस अय्यप्पन, महानिदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के द्वारा हिंदी दिवस के अवसर पर जारी अपील का वाचन किया। डॉ. जे एस मिश्र ने संस्थान में संचालित राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी गतिविधियों का प्रगति प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। डॉ. महेश कुमार, तकनीकी अधिकारी (हिंदी) ने पॉवर पाइंट प्रस्तुतीकरण के माध्यम से हिंदी चेतना मास समारोह के दौरान आयोजित कार्यक्रमों पर प्रतिवेदन प्रस्तुत किया तथा उक्त समारोह को सफल बनाने के लिए निदेशालय में कार्यरत सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के प्रति आभार व्यक्त किया।

मुख्य अतिथि के रूप में पधारे डॉ. गोस्वामी जी ने निदेशालय में हिंदी चेतना मास के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं को नकद पुरस्कार तथा प्रमाण-पत्र एवं अन्य सहभागियों को कलम तथा प्रमाण-पत्र प्रदान किए। डॉ. एस एस राव, प्रभारी निदेशक, ज्वा.अनु.नि. ने प्रतियोगिताओं के निर्णायकों को स्मृति चिह्न प्रदान किए। श्री सरोज कुमार सिंह, प्रशासनिक अधिकारी ने हिंदी चेतना मास के दौरान आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों पर अपने विचार व्यक्त किए।

हिंदी कार्यशालाएं

निदेशालय में कार्यरत वैज्ञानिक, प्रशासनिक तथा तकनीकी अधिकारियों/ कर्मचारियों के लिए 06-13 सितंबर 2013 के दौरान एक गहन हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। डॉ. एस एस राव, प्रधान वैज्ञानिक,

ज्वा.अनु.नि. ने 06 सितंबर, 2013 को उक्त कार्यशाला का उदघाटन किया तथा अपने संबोधन में उन्होंने बताया कि राजभाषा हिंदी में कार्य करना हमारा दायित्व है तथा इस उद्देश्य हेतु हमारी झिझक दूर करने के लिए इस तरह की कार्यशालाओं का आयोजन अनिवार्य है । कार्यशाला के दौरान श्री जयशंकर प्रसाद तिवारी तथा डॉ. नरेश बाला, सहायक निदेशक, केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण उप संस्थान ने भाषा के महत्व, राजभाषा नीति, हिंदी व्याकरण, आलेखन, टिप्पण, लीला प्रशिक्षण साफ्टेवेयर, युनिकोड आदि विषयों के संबंध में जानकारी प्रदान की। 13 सितंबर 2013 को उक्त कार्यशाला का समापन हुआ ।

- निदेशालय में 29 मार्च, 2014 को एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में श्री जयशंकर प्रसाद तिवारी, सहायक निदेशक, केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण उप संस्थान, हैदराबाद अतिथि वक्ता के रूप में उपस्थित थे । कार्यशाला के प्रारंभ में डॉ. जे एस मिश्र, प्रभारी अधिकारी-हिंदी कक्ष ने कार्यशाला में उपस्थित सहभागियों का स्वागत किया तथा संस्थान में राजभाषा हिंदी की उपयोगिता पर प्रकाश डाला । श्री तिवारी जी ने हिंदी भाषा के महत्व पर प्रकाश डालते हुए इस संबंध में भारत सरकार के नीति-नियमों से अवगत कराया तथा संस्थान के नेमी कार्यों के लिए अपेक्षित हिंदी शब्दावली के बारे में जानकारी प्रदान की । इसके अलावा उन्होंने टिप्पण एवं आलेखन पर भी लघु वक्तव्य दिया । अंत में डॉ. महेश कुमार, तकनीकी अधिकारी (हिंदी) ने संस्थान के निदेशक, प्रभारी अधिकारी-हिंदी कक्ष तथा कार्यशाला के प्रमुख वक्ता के प्रति आभार प्रकट किया तथा कार्यशाला के सहभागियों के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया ।

  उक्त दोनों कार्यशालाओं का समन्वय डॉ. जे एस मिश्र तथा डॉ. महेश कुमार द्वारा किया गया ।

"ज्वार सौरभ" को नराकास-हैदराबाद-सिकंदराबाद की ओर से प्रथम पुरस्कार

ज्वार अनुसंधान निदेशालय, हैदराबाद द्वारा प्रकाशित ***"ज्वार सौरभ"*** नामक गृह-पत्रिका के अंक – 3 को नगर राजभाषा कार्यन्वयन समिति-हैदराबाद-सिकंदराबाद की ओर से वर्ष 2012-13 में नगरद्वय के केंद्र सरकार के कार्यालयों से प्रकाशित पत्रिकाओं में से श्रेष्ठ पत्रिका के रूप में प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया है । केंद्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद में 23 अक्तूबर, 2013 को आयोजित नराकास-हैदराबाद-सिकंदराबाद की 49वीं बैठक के दौरान नराकास के अध्यक्ष तथा केंद्रीय बारानी कृषि अनुसंधान संस्थान के निदेशक, डॉ. बी वेंकटेश्वर्लु के कर-कमलों से निदेशालय के प्रतिनिधि के रूप में उपस्थित डॉ. जे एस मिश्र तथा डॉ. महेश कुमार ने उक्त पुरस्कार एवं प्रमाण-पत्र ग्रहण किया । इस अवसर पर डॉ. एम ए वहीद, निदेशक, केंद्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान संस्थान तथा अन्य संस्थानों के निदेशक एवं गणमान्य व्यक्ति भी उपस्थित थे ।
निदेशालय ने ज्वार अनुसंधान संबंधी गतिविधियों एवं ज्वार के वैकल्पिक उपयोगों को शोधकर्ताओं, सामान्य कृषकों तथा जन-सामान्य तक पहुँचाने के उद्देश्य से वर्ष 2010 में इस पत्रिका का प्रारंभ किया था तथा इसके प्रथमांक को भी नराकास की ओर से शील्ड प्राप्त हुई थी । डॉ. जे वी पाटील, निदेशक, ज्वा.अनु.नि. इस पत्रिका के प्रकाशक हैं तथा डॉ. जे एस मिश्र, डॉ. महेश कुमार तथा डॉ. वी आर भागवत संपादक हैं ।

वर्ष 2013 के दौरान निदेशालय के हिंदी प्रकाशन

1. वार्षिक प्रतिवेदन 2012-13 का हिंदी में प्रकाशन
2. डी.एस.आर. हैपनिंग्स (मासिक) के हिंदी में सारानुवाद का प्रकाशन
3. सोरघम टाइम्स के हिंदी में सारानुवाद का प्रकाशन
4. "भारत की लोकप्रिय ज्वार कृष्य किस्में" नामक पुस्तिका का हिंदी में अंग्रेजी के साथ द्विभाषी रूप में प्रकाशन।

****

6 केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर

हिन्दी सप्ताह

केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर तथा इसके क्षेत्रीय केन्द्रों में दिनांक 13–19 सितम्बर, 2013 तक हिंदी सप्ताह बड़े उमंग, हर्षोल्लास एवं उत्साह के साथ मनाया गया। संस्थान के मुख्यालय में हिन्दी सप्ताह प्रोफेसर अनिल प्रकाश शर्मा, निदेशक की अध्यक्षता में मनाया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में श्रीमती कैसर जहां, उप निदेशक, राजभाषा विभाग, कोलकाता को आमंत्रित किया गया। मुख्य अतिथि ने अपने मुख्य सम्बोधन में कहा कि हिन्दी दिवस मनाना हमारा परम कर्तव्य है। मनुष्य अपने कर्तव्य के प्रति हमेशा सचेत रहता है। हमारे पूर्वजों ने अपने लहू से हमें स्वतंत्रता दिलाई है और हिन्दी भी स्वतंत्र भारत की एक पहचान है। भारत एक अटूट देश के रूप में स्वतंत्र हुआ है और उसकी भी एक अलग पहचान है। हमारा संविधान समस्त भाषाओं के उत्थान का हक देता है। हिन्दी एक राजभाषा है जिसमें अनेक भाषाओं के शब्दों का समावेश है। राजभाषा एक संकल्प है जो हम 14 सितम्बर को प्रत्येक वर्ष मनाते हैं। श्रीमती कैसर जहां ने एक प्रस्ताव भी प्रस्तुत किया। उनके विचार से सप्ताह में एक दिन हिन्दीवार के रूप में मनाया जाना चाहिए। सभी के एकजुट प्रयास से हिन्दी का विस्तार संभव है। उनके विचार से त्रुटिपूर्ण हिन्दी में संवाद या लिखित कार्य करना कोई अपराध नहीं है, क्योंकि ये तो एक शुरूआत मानी जानी चाहिए। उन्होंने कहा कि लगातार लिखने और बोलने के प्रयास मात्र से ही भाषा काबू में जा जाती है।

प्रोफेसर अनिल प्रकाश शर्मा, निदेशक ने सभी सभा सदस्यों को इस अवसर पर हार्दिक शुभकामनाएं दीं। उन्होंने हिन्दी को एक सम्पर्क भाषा बताया और कहा कि इसका प्रमाण हमें व्यापार क्षेत्र में मिलता है जहां दो लोगों को तुरन्त जोड़ने में भाषा एक माध्यम बन जाती है। उनके विचार से देश कि कई समस्याओं को हिन्दी द्वारा दूर किया जा सकता है। हिन्दी के प्रचार–प्रसार में टी.वी. ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उन्होंने हिन्दी के सरलीकरण पर भी अपने विचार प्रकट किये। इस अवसर पर कार्यालय में हिन्दी कार्यान्वयन हेतु विभिन्न सुझाव दिये गये।

डा. दिलीप कुमार, विशेष अतिथि ने कहा कि हिन्दी बहुत तेजी से बढ़ रही है। हिन्दी को बढ़ाने में सिनेमा का योगदान है। प्रशासनिक चाबुक से हिन्दी नहीं बढ़ेगी। हिन्दी को लोकप्रिय बनाना होगा। आज अधिकांश लोग हिन्दी समझते हैं। हिन्दी एक सम्पर्क भाषा है। दूसरे देशों में भी सिनेमा देखकर लोग हिन्दी सीख गये हैं। नेपाल, भूटान, म्यांमार एवं श्रीलंका में भी हिन्दी जानने वाले बहुत लोग हैं।

इस दौरान संस्थान के अधिकारियों, कर्मचारियों तथा शोध छात्रों के लिए विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में सफल होने वालों को पुरस्कृत किया गया। अन्त में सुश्री अंजना एक्का, वैज्ञानिक ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

कार्यशाला

संस्थान के मुख्यालय में प्रशासनिक अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए दिनांक 28.09.2013 को एक दिवसीय कंप्यूटर पर हिन्दी टाइपिंग प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में टिप्पणी लेखन/मसौदा, हिन्दी व्याकरण/लिंग भेद' आदि विषय पर भी व्याख्यान प्रस्तुत किया।

<u>संस्थान की प्रमुख वैज्ञानिक उपलब्धियां</u>

- नर्मदा ज्वारनदमुख में हिल्सा मात्स्यिकी के स्टॉक मूल्यांकन मॉडल द्वारा अधिकतम सतत् उपज का वर्तमान बायोमास केवल 5 प्रतिशत आंका गया है जो मात्स्यिकी की विध्वंसता की चेतावनी है।

- खुले जलक्षेत्र के 14 जल निकायों में विदेशी मत्स्य प्रजातियों की उपस्थिति का मूल्यांकन किया गया जिनमें बहुलता सूचक स्तर 0.1 से 35 प्रतिशत पाया गया।

- फिनॉल डिग्रेडिंग जीवाणु *ओक्रोबैक्ट्रम एन्थ्रोपी* के पूरे जीन समूह के अनुक्रमण (सीक्वेनसिंग) से अनेक प्रदूषकों की विषाक्तता को कम करने की क्षमतायुक्त जीन की उपस्थिति पाई गई जो खेत परिस्थितियों में प्रदूषकों के निम्निकरण में संभावित जीवाणु होगी।

- हुगली नदीय मुहाने एवं इसके जलग्रहण क्षेत्र में 2004 और 2012 के बीच आईआरएस पी6 प्रतिबिम्बों के उपयोग से किए गए परिवर्तन पहचान विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि समुद्री मुहाने के जलग्रहण क्षेत्र में परिवर्तन एवं तलछटों की भार के संदर्भ में अध्ययन क्षेत्र के 12.35 प्रतिशत में पूर्ण परिवर्तन तथा 70.43 प्रतिशत क्षेत्र में कम परिवर्तन हुए हैं।

- इंदिरा सागर जलाशय में मत्स्ययन कार्य की असहमति विभिन्न पणधारियों के बीच एक मुख्य प्रमुख समस्या के रूप में प्रकट हुई। जल के उपयोग एवं संचालन में जातिगत भेदभाव पाया गया।

- हरिद्वार से विंध्यांचल तक के गंगा नदीय क्षेत्र से 77 जेनेरा, 30 फैमिलियों एवं 10 आर्डरों से संबंधित कुल 123 मत्स्य प्रजातियां दर्ज हुईं। उपज में *एस्पीडोपारिया मोरार, सिप्रिनस कार्पियो* एवं *ओरियोक्रोमिस नाईलोटिकस* प्रजातियां की बहुलता पायी गई।

- असम के तारियाचरा बील में निम्न संग्रहण घनत्व (1189 मत्सय बीज/हे.) से सामान्य मत्स्य उपज पाई गई जिसमें संग्रहित मछलियों का प्रमुख योगदान (78 प्रतिशत) है।

- मत्स्य बीज संग्रहण के बिना असम के धीर बील से प्राप्त उत्पादन 43.89 कि.ग्रा./है./वर्ष एवं राजस्व रू 2837.87/हे. की तुलना में मत्स्य बीज संग्रहित असम के ही तारियाचरा बील की उपज 454.40 कि.ग्रा./हे./वर्ष एवं राजस्व प्राप्ति रू. 49,756/हे. आंकी गयी है जो असम के आर्द्र क्षेत्रों में संग्रहण के महत्व को दर्शाती है।

- कृष्णराजसागर जलाशय में मत्स्य बीज संग्रहण एवं व्यवस्थित मत्स्ययन कार्य के परिणामस्वरूप वर्तमान मत्स्य उपज स्तर 90 कि.ग्रा./हे. में 4.5 गुना वृद्धि देखी गई।

- चिलका लैगून में विभिन्न मुख्य मत्स्य प्रजातियों के संरचनात्मक स्वरूप, नए मुहाने से मत्स्य प्रजातियों पर प्रभाव तथा पख व कवच मीन मात्स्यिकी के पूर्वानुमान हेतु ड्यूएल साइकिल एरिमैक्स तथा लेवल फ्टि मॉडलों का विकास किया गया।

- भारत की 35 मत्स्य प्रजातियों की पोषकता संबंधी रूपरेखा के आधार पर 'भारत का खाद्य मछलियों की पोषकता संबंधी डाटाबेस' विकसित किया गया।

- पिंजरा पालन में मत्स्य आहार संअंधी प्रयोगों में सोयाबीन आधारित आहार से मछलियों में शारीरिक भार में 9 प्रतिशत की वृद्धि की तुलना में शराब की भट्टियों निकलने वाले आहार से लेबियो रोहिता मछलियों की शारीरिक भार में 26 प्रतिशत की वृद्धि प्रकाश में आया है।

- महानदी के हीराकुड से बहाकुडगद तथा हीराकुड से पाराद्वीप के बीच के नदीय क्षेत्र से 72 जेनेरा एवं 31 फैमिलियों से संबंधित 100 मत्स्य प्रजातियां दर्ज की गईं।

- झींगा मात्स्यिकी के लिए सुन्दरवन मैंग्रोव की पारिस्थितिक मूल्य रू 33541.67/हे. आंका गया है।

प्रकाशन

वर्ष के दौरान संस्थान द्वारा निम्नलिखित बुलेटिन/न्यूजलेटर का प्रकाशन (हिंदी) किया गयाः–

(1) चौर क्षेत्र में मात्स्यिकी द्वारा जीविकोत्थान के अवसर

(2) नीलांजलि गृह पत्रिका, अंक–4, वर्ष 2013

(3) सिफरी न्यूजलेटर खण्ड 18(1)

(4) सिफरी न्यूजलेटर खण्ड 18(2)

क्षेत्रीय केन्द्र इलाहाबाद में आयोजित राजभाषा हिन्दी सप्ताह

हिन्दी सप्ताह की अवधि:- इलाहाबाद क्षेत्रीय केन्द्र में दिनांक 15 से 21 सितम्बर, 2014 तक राजभाषा हिन्दी सप्ताह का उल्लासपूर्वक आयोजन किया गया। दिनांक 15 सितम्बर, 2014 को हिन्दी सप्ताह के उदघाटन समारोह में डा0 कृपालदत्त जोशा, अध्यक्ष क्षेत्रीय केन्द्र, इलाह बाद ने अपने विचार प्रकट किये और केन्द्र में कार्यरत सभी कार्मिकों से अपने दैनिक कार्यों को राजभाषा हिन्दी करने की अपील की ताकि 'क' क्षेत्र के लिये निर्धारित किये गये हिन्दी में कार्यकेलक्ष्य को हासिल किया जा सके।

प्रतियोगितायें:- हिन्दी सप्ताह के अन्तर्गत कुल पांच प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिनमें से कुशल सहायक कर्मचारी वर्ग हेतु वाद-विवाद प्रतियोगिता, वर्ग 'ख', 'ग' एवं कुशल सहायक कर्मचारियों के लिये निबन्ध लेखन, अधिकारी वर्ग हेतु वाद-विवाद,अधिकारी/वरि0/ कनि0 शोधकर्ताओं हेतु निबन्ध लेखन और कुशल सहायक कर्मचारियों को छोड़ का सभी अधिकारी/कर्मचारी/वरि0/ कनि0 शोधकर्ताओं हेतु सामान्य ज्ञान (राजभाषा ज्ञान) प्रतियोगिताओं का आयोजन कियागया जिनमें सभी कर्मिकों ने बढ़ –चढ़ कर भाग लिया।

समापन समारोह:- राजभाषा हिन्दी का समापनपर्व दिनांक 20 सितम्बर, 2014 को केन्द्र के सभागार में सम्पन्न किया गया।

समापन समारोह के मुख्य अतिथि डा0 अर्चना पाण्डे, भारतीय विज्ञान परिषद, इलाहाबाद,विशिष्ट अतिथि डा0 तरू लता त्रिपाठी, हिन्दी लेखिका, इलाहाबाद और श्री एन0 के0 त्रिपाठी, जन-सम्पर्क अधिकारी, इलाहाबाद थे। सभी अतिथियों का क्षेत्रीय केन्द्र, इलाहाबाद में गुलदस्ते से स्वागत किया गया और उसके बाद डा0 कृपालदत्त जोशी, अध्यक्ष, क्षेत्रीय केन्द्र, इलाहाबाद उपस्थित समूह से उनका परिचय करवाया एवं उनके बारे में संक्षिप्त रूप से अवगत कराया गया। उसके बाद डाॠ जोशी, अध्यक्ष क्षेत्रीय केन्द्र, इलाहाबाद ने केन्द्र पर हिन्दी में हो रहे क्रिया-कलापों के बारे में अतिथि महोदयों को जानकारी दी और प्रतियोगिताओं में विजयी प्रतिभागियों की घोषणा की और सभी अतिथि महोदयों के कर कमलों द्वारा सभी विजयी प्रतिभागियों को प्रथम, द्धितीय, तृतीय एवं सांत्वना पुरस्कार प्रदान किए गए।

तत्पश्चात विशिष्ट अतिथि महोदय डॉ. तरू लता त्रिपाठी ने अपने सम्बोधन में कहा वर्तमान में हिन्दी के प्रचार-प्रसार की आवश्यकता है क्योंकि यह विश्व में सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा हे। हम सभी का दायित्व है कि मातृभाषा के महत्व को समझें और इसका विकास करें। हिन्दी का प्रयोग सभी प्रकार के कार्यों में करना चाहिये यह केवल इसलिये नहीं की राष्ट्रभाषा है बल्कि इसलिये कि यह कई संस्कृतियों को एक सूत्र में बांधती है । उन्होनें हिन्दी को राजभाषा का दर्जा दिलवाने वाले हिन्दी प्रेमियोंके योगदान पर भी प्रकाश डाला। उन्होंने क्षेत्रीय केन्द्र पर हिन्दी में हो रहे कार्यों की प्रशंसा की तथा भविष्य में इसी तरह के आयोजनों की आवश्यकता पर बल दिया। श्री एन0 के0 त्रिपाठी ने भी अपने सॅबोंधन में हिन्दी राजभाषा के प्रयोग एवं उपयोगिता पर बल दिया तथा सभी कार्मिकों से हिन्दी में काम करने का अपील करते हुए कहा कि हमारी मातृ भाषा अत्यन्त सशक्त है इसके विकास एवे समृद्धि के लिये सभी को प्रयास करने होगें। इसके लिये जरूरी है कि मि अपने काम हिन्दी में करने की आदत डालें और कार्यालय पत्राचार में हिन्दी के सरल शब्दों का प्रयोग करें ताकि उसे आसानी से समझा जा सके। मुख्य अतिथि महोदाया डा0 अर्चना पाण्डे ने सभी वैज्ञानिक से भी अपील की वह अपने शोधपत्रों/संकल्पों को हिन्दी राजभाषा में ही प्रकाशिकत करने की कोशिा करें ताकि उनका लाभ कम पढ़े-लिखें किसानों को मिल सके। उन्होंने विज्ञान लेखन में राजभाषा हिन्दी के योगदान पर भी प्रकाश डाला। आभार:- अन्त में डा0 कृपाल दत्त जोशी, अध्यक्ष, क्षेत्रीय केन्द्र, इलाहाबाद ने माननीय मुख्य अतिथियों को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया और आभार व्यक्त किया।

****

7. कुक्कुट अनुसंधान निदेशालय

हिन्दी पखवाड़ा

निदेशालय में दिनांक 1–15 सितंबर 2013 तक हिन्दी पखवाडा समारोह मनाया गया। इस दौरान कर्मचारियों के लिए विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गयी तथ 14 सितंबर 2013 को हिन्दी दिवस समारोह का आयोजन किया गया। हिन्दी दिवस समारोह में डॉ. घनश्याम, रीडर, हिन्दी विभाग, बीजेआर कालेज, हैदराबाद मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित हुए।

मुख्य अतिथि महोदय एवं डॉ. आर.एन. चटर्जी, निदेशक ने दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का उद्घाटन किया। डॉ. एम. निरंजन, प्रभारी, हिन्दी अनुभाग एवं वरिष्ठ वैज्ञानिक ने इस अवसर पर मुख्य अतिथि एवं उपस्थित समस्त कर्मचारियों का स्वागत किया तत्पश्चात श्री जे. श्रीनिवास राव, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी ने हिन्दी अनुभाग की गतिविधियों की रिपोर्ट प्रस्तुत की।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित डॉ. घनश्यामजी ने अपने संबोधन में कहा कि, हिन्दी भाषा विश्व भाषा बन रही है, अब अमेरिका, चीन एवं कई यूरोपीय देशों के विश्वविद्यालयों में हिन्दी पढ़ायी जा रही है। आज कई विदेशी टेलिविजन चैनल अपने प्रसारण हिन्दी भाषा में दे रहे हैं। हिन्दी भाषा अपने लचीले स्वभाव के चलते काफी लोकप्रिय है, अपनी भाषाओं में ही हम अपने विचाारों एवं अपनी बात को सरलतापूर्वक स्पष्ट रूप से प्रस्तुत कर सकते हैं। विज्ञान के क्षेत्र में भी हिन्दी एक अहम भूमिका निभा रही है। हम अपने अनुसंधान परिणामों को सरलतम भाषा में किसानों तक पहॅुचा सकते हैं, इस लिए अब निस्संदेह यह कह सकते हैं कि हिन्दी का भविष्य काफी उज्वल है।

डॉ. आर.एन. चटर्जी, परियोजना निदेशक ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में कहा कि, हिन्दी एक सरल भाषा है, हमारे संस्थान में हिन्दी का प्रयोग ज्यादा से ज्यादा होता है। हिन्दी भाषा का अत्यंत गौरवमयी इतिहास रहा है साथ ही यह एक जनाकर्षण की भाषा है। हिन्दी किसी एक प्रान्त विशेष की भाषा नहीं है यह तो समस्त भारतीयों की भाषा है। भाषा से ही हमारी संस्कृति की खुशबू महकती है। हमारे संस्थान में हिन्दी का उपयोग अच्छा होता है इसी प्रगति के फल स्वरूप निदेशालय को अब तक तीन बार राजभाषा पुरस्कार प्राप्त हुए हैं।

निदेशालय में आयोजित हिन्दी पखवाडा समारोह के विजेताओं को पुरस्कारों एवं प्रमाण पत्रों से सम्मानित किया गया। श्री जे. श्रीनिवास राव, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी, ने कार्यक्रम का संचालन किया तथा कार्यक्रम के अंत में डॉ. एम. निरंजन, वरिष्ठ वैज्ञानिक ने सभा को धन्यवाद प्रस्तुत किया।

हिन्दी कार्यशालाएं

निदेशालय में वर्ष 2013–14 के दौरान संस्थान के कर्मचारियों के लिए चार हिन्दी कार्यशालाएं आयोजित की गयी, जिसमें कर्मचारियों को कार्यालयीन हिन्दी, आलेखन–टिप्पणी, राजभाषा नीति एवं यूनिकोड के माध्यम

से कंप्यूटरों पर हिन्दी टंकण प्रशिक्षण जैसे विषयों पर प्रशिक्षित व अभ्यास करवाया गया जो कर्मचारियों को काफी लाभप्रद रहा।

इस वर्ष के दौरान आयोजित हिन्दी कार्यशालाओं के संबंध में संपूर्ण विवरण :

क्रम सं	कार्यशाला आयोजन की तिथि	कार्यशाला का विषय	आमंत्रित वक्ता
1	27/06/2013	कंप्यूटरों पर यूनिकोड के माध्यम से हिन्दी में टंकण कार्य करना	श्री होमनिधि शर्मा प्रबंधक, राजभाषा, बीडीएल, हैदराबाद
2	06/09/2013	भाषा के मूल तत्व एवं कार्यालयीन हिन्दी	श्रीमती वैष्णवी देवी हिन्दी अध्यापिका भारतीय विद्याभवन हैदराबाद
3	19/12/2013	राजभाषा हिन्दी का संवैधानिक महत्व एवं भाषागत विशेषताएं	डॉ. हेमराज मीणा प्रोफेसर, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, हैदराबाद
4	22/03/2014	कार्यालयीन हिन्दी शब्द–संरचना एवं पारिभाषिक शब्दावली का निर्माण	श्री कमालुद्दिन प्राध्यापक, हिन्दी शिक्षण योजना, हैदराबाद

ये चारों कार्यशालाएं कर्मचारियों को अपने दैनंदिन कार्य हिन्दी में करने की दिशा में अत्यंत उपयोगी रहे हैं।

****

8. राष्ट्रीय बीजीय मसाला अनुसंधान केन्द्र, अजमेर

हिन्दी पखवाड़ा

राष्ट्रीय बीजीय मसाला अनुसंधान केन्द्र तबीजी, अजमेर में दिनॉक 14 सितम्बर 2013 को हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य में दिनॉक 13 सितम्बर 2013 से 30 सितम्बर 2013 तक हिन्दी पखवाडा मनाया गया । इस उपक्रम में दिनांक 13 सितम्बर 2013 को हिन्दी दिवस मनाकर कार्यक्रम को प्रारम्भ किया गया। जिसमें संस्था के निदेशक डॉ. बलराज सिंह महोदय द्वारा हिन्दी भाषा के महत्व को ध्यान में रखकर कार्यालय के सभी आवश्यक कार्य एवं पत्र–पत्रावलियों का हिन्दी में प्रकाशन करने पर ध्यान आकृष्ट किया। इसी क्रम में दिनॉक 16 सितम्बर को संस्था के सभी वैज्ञानिकों एवं सहायक कर्मचारीयों के लिए विभिन्न प्रतियोगिताऐं आयोजित की गयी। जिनमें वाद–विवाद,तत्काल भाषण, कार्यालय टिप्पणी लेखन एवं अन्य प्रतियोगिताऐं आयोजित की गयी। जिसमें सभी ने भाग लेकर प्रतियोगिताओं का आनन्द लिया। जिसमें कार्यक्रम के अन्त में निदेशक डॉ. बलराज सिंह ने सभी प्रतिभागियों को पुरुस्कार प्रदान कर उन्हें इसी तरह प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया। राजभाषा हिन्दी पखवाड़ा कार्यक्रम के समापन पर पुरस्कार प्रदान किये गये। हिन्दी पखवाड़ा के अन्तर्गत कार्यक्रमों का आयोजन डॉ. बृजेश कुमार मिश्र ने संस्थान के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों की सहभागिता में किया ।

इस वर्ष (2013-14) में राजभाषा हिन्दी कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक दिनांक 13 सितम्बर 2013 तथा 01 मार्च 2014 को की गयी साथ ही साथ हिन्दी के प्रगामी प्रयोग के लिए दो एक- एक दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन क्रमशः दिनांक 13-9-2013 और 22-03-2014 को किया गया|

हिन्दी तकनीकी संगोष्ठी

राजभाषा हिन्दी पखवाडा 2013 के अंतर्गत एक दिवसीय हिन्दी तकनीकी संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिस में डा. बलराज सिंह, निदेशक, राष्ट्रीय बीजीय मसाला अनुसंधान केन्द्र, तबीजी, अजमेर ने **" संरक्षित खेती : अधिक उत्पादकता, पादप एवं पर्यावरण संरक्षण का मजबूत आधार"** विषय पर बहुत विस्तृत रूप में सहज एवं शुद्ध हिन्दी के वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दों के प्रयोग के माध्यम से प्रस्तुत किया| इस तकनीकी संगोष्ठी में केन्द्र के वैज्ञानिको एवं तकनीकी अधिकारियो

तथा प्रशासनिक कर्मचारियों ने उत्साह से भाग लिया| राजभाषा प्रभारी डा. बृजेश कुमार मिश्र ने भविष्य में वैज्ञानिक एवं तकनीकी लेखो में मानक हिन्दी के प्रयोग पर बल दिया तथा कार्यक्रम की सफलता के लिए सभी लोगो का आभार व्यक्त किया।

हिन्दी व्याख्यान एवं राजभाषा संगोष्ठी

''जल उपलब्धता, उपयोग एवं संरक्षण में चुनौतियॉ''

विश्व जल दिवस – 22 मार्च, 2014 के उपलक्ष्य में राष्ट्रीय बीजीय मसाला अनुसंधान केन्द्र, तबीजी, अजमेर में राजभाषा हिन्दी में एक व्याख्यान एवं संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर वर्तमान परिस्थितियों तथा भविष्य को दृष्टिगत रखते हुये एक बहुत ही सामयिक विषय ''जल उपलब्धता, उपयोग एवं संरक्षण में चुनौतियॉ'' पर डॉ बलराज सिंह, निदेशक, राष्ट्रीय बीजीय मसाला अनुसंधान केन्द्र, तबीजी, अजमेर ने अपने अन्तर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय अनुभवों को ''जल ही जीवन है'' के नारे के साथ वैज्ञानिकों एवं भावी युवा पीढ़ी के शिक्षित युवाओं एवं युवतियों के साथ साझा किया। आपने व्याख्यान के माध्यम से यह रेखाकिंत किया कि आखिर हमारी पृथ्वी पर तीन–चौथाई जल होने के बाद भी पीने योग्य जल एक सीमित मात्रा में ही है, जिसका मानव जाति द्वारा अंधाधुंध दोहन किया जा रहा है। जलाशयों, नदियों, झीलों एवं समुद्र तक को आधुनिक विकास की दौड़ में हम प्रदूषित करते जा रहे है। शहरीकरण, औद्योगिकीकरण एवं जलवायु परिवर्तन के कारण निकट भविष्य में जल की उपलब्धता एवं संतुलित उपयोग एक बहुत विकट समस्या हो सकती है। आज इस विश्व जल दिवस के अवसर पर संस्थान के सभी वैज्ञानिकों, तकनीकी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने जल संरक्षण के महत्व को विस्तृत रूप में पहचाना और सभी ने इस क्षेत्र में मिल–जुल कर इस कार्य को आगे बढ़ाने पर जोर दिया। निदेशक महोदय ने बताया कि पानी की कमी के चलते कई जगहों पर आज भी जिन्दगी दांव पर लगी रहती है और कई इलाकों में महिलाये पैदल चलकर दूर–दूर से पीने का पानी लाती है। इनकी जिंदगी का अधिकांश समय पानी की जद्दोजहद में बीत जाता है। कृषि के क्षेत्र में भी कई स्थानों पर पानी का समुचित प्रबंधन नहीं किया जा रहा है, जबकि कृषि कार्य पूरी तरह से जल पर आधारित है। डॉ बलराज सिंह जी ने सूक्ष्म सिंचाई, टपक सिंचाई एवं संरक्षित खेती के माध्यम से कृषि में सीमित जल के आधुनिक प्रबंधन पर विशेष जोर देने तथा शासन एवं ग्राम स्तर पर राष्ट्रीय जल संरक्षण नीति के तहत वैज्ञानिक आधार पर कृषि उत्पादन का जोरदार समर्थन किया। आपने कृषकों एवं वैज्ञानिकों का आवहन किया कि वो प्रति बूंद कृषि उत्पादकता को ही अपना सही मापदण्ड समझकर अनुसंधान कार्यो को प्राथमिकता प्रदान करें।

जिस तरह से पंजाब और हरियाणा में ग्रीष्मकालीन धान की खेती को प्रतिबंधित किया गया है, उसी तरह अन्य राज्यों में भी जल के दुरूपयोग को रोकने के लिये आवश्यक सरकारी एवं गैरसरकारी कदम उठाने की आवश्यकता है। इस परिचर्चा के दौरान वैज्ञानिकों के द्वारा बनायी गयी नई तकनीके जैसे प्लास्टिक मल्चिंग, हाइड्रोजैल एवं लैजर लैवलर द्वारा भूमि का समतलीकरण तथा संरक्षण कृषि के विधियों द्वारा कृषि में जल उत्पादकता बढ़ाने की आवश्यकता है।

आधुनिक जीवनशैली में जल की बर्बादी को रोकने के लिये युद्धस्तर पर जागरूकता एवं जल संरक्षण नीतियां बनाने की जरूरत पर सभी लोगों ने सहमति जताई। इसी परिपेक्ष्य में यह भी ध्यान देने योग्य है कि भारत में प्रतिव्यक्ति जल उपभोग का सर्वाधिक 30 प्रतिशत जल शौचालय फ्लिशिंग में ही बर्बाद हो जाता है, जबकि प्रतिव्यक्ति जल उपभोग का केवल 1–2 प्रतिशत जल ही पीने एवं भोजन बनाने में इस्तेमाल किया जाता है।

अगर सही ढंग से पानी का संरक्षण किया जाए और जितना हो सके पानी को बर्बाद होने से रोका जाए तो इस जल की समस्या का समाधान बेहद आसान हो जायेगा। लेकिन इसके लिये जरूरत है कि आधुनिक प्रौद्योगिकी एवं जन–जागरण के समायोजन के साथ परंपरागत जल संरक्षण की पद्धतियों को भी आगे बढ़ाया जाए। आवश्यकता है। जल संरक्षण को अपने जीवन–धर्म का हिस्सा बनाना होगा, क्योंकि आपका एक छोटा–सा प्रयास कई जीवों की प्यास बुझा सकता है। कार्यक्रम संचालन एवं धन्यवाद ज्ञापन डॉ. बृजेश कुमार मिश्र, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं राजभाषा प्रभारी ने किया तथा सभी उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने व्यक्तिगत स्तर पर जल बचाने का संकल्प लिया।

<u>राजभाषा प्रकोष्ठ, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली द्वारा निरीक्षण</u>

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के राजभाषा प्रकोष्ठ में कार्यरत श्री मनोज कुमार, सहा. मुख्य तकनीकी अधिकारी ने राष्ट्रीय बीजीय मसाला अनुसंधान केन्द्र, अजमेर का हिन्दी में प्रगामी प्रयोग के लिए दिनांक 31 अगस्त 2013 को निरीक्षण किया तथा वैज्ञानिको द्वारा हिन्दी में किये जा रहे कृषि प्रसार के कार्यो की सराहना की और कार्यालय सम्बन्धी कार्यो में राजभाषा हिन्दी के अधिकाधिक उपयोग पर विशेष महत्व एवं बल देने की बात कही|

<u>राष्ट्रीय बीजीय मसाला अनुसंधान केन्द्र, अजमेर- हिन्दी में प्रकाशन</u>

1. **वार्षिक प्रतिवेदन 2012-13**
2. **बीजीय मसाला फसल विशेषांक – फल फूल – भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली से** राष्ट्रीय बीजीय मसाला अनुसंधान केन्द्र ,मेरअज , के स्थापना दिवस के अवसर पर
3. **स्मारिका-2014 "बीजीय मसाले: किसानो के लिए वरदान"**
4. **कृषक प्रशिक्षण मैन्युअल- "बीजीय मसाला फसलों के उत्पादन की नवीनतम तकनीकियाँ".**

9. राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र, बीकानेर

राजभाषा कार्यशाला 24 दिसम्बर, 2014

राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र, बीकानेर द्वारा राजभाषा नीति कार्यान्वयन के अंतर्गत दिनांक 24 दिसम्बर, 2014 को एक दिवसीय राजभाषा कार्यशाला का आयोजन किया गया। राजभाषा के बेहतर उपयोग एवं तकनीकी विषय पर आधारित इस कार्यशाला में स्टेट बैंक ऑफ बीकानेर एंड जयपुर, बीकानेर के श्री दिवाकर मणि, प्रबंधक (राजभाषा) को आमंत्रित किया गया।

कार्यशाला का उद्‌देश्य एवं महत्व

इस कार्यशाला के शुभारम्भ पर प्रभारी राजभाषा डॉ. फतेह चन्द टुटेजा ने भारत सरकार की राजभाषा नीति पर प्रकाश डालते हुए कार्यालयों में राजभाषा कार्यशाला का महत्व बताते हुए कहा कि भाषाविद् व्याख्यानों के माध्यम से अपने विचार रखते हैं तो इनका अनुकरण कार्मिकों के कौशल में अभिवृद्धि करने में महत्ती भूमिका निभाता हैं जब प्रतिभागी निःसंकोच अपनी बात रखेंगे तो आयोजित कार्यशालाएं भी अपनी सार्थकता सिद्ध करेंगी।

व्याख्यान सत्र

आमंत्रित अतिथि वक्ता श्री दिवाकर मणि, प्रबंधक (राजभाषा) ने ''कंप्यूटर पर हिन्दी का प्रयोग तथा यूनिकोड संबंधी जानकारी'' विषयक अपने व्याख्यान में कहा कि आज हिन्दी में कंप्यूटर पर कार्य अधिकाधिक सरलीकरण की और है, जरूरत केवल इच्छा शक्ति व लगन की है। आज कंप्यूटर पर अनुवाद, टाईपिंग व शब्दकोश आदि की सुविधा उपलब्ध है। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि आज कंप्यूटर पर हिन्दी में कार्य करने के लिए लगभग सभी सुविधाएं उपलब्ध है जिनकी जानकारी जुटाकर सरलतापूर्वक हिन्दी में कार्य निष्पादित किया जा सकता है। श्री मणि ने केन्द्र कार्मिकों को युनिकोड की ऑनलाइन सुविधा एवं सक्रियता के संबंध में विसतारपूर्वक जानकारी दी। साथ ही कंप्यूटर पर हिन्दी में कार्य करते समय फाइल डाउनलोड, अनुवाद की प्रक्रिया, मोबाइन पर हिन्दी व फाइल सैटिंग परिवर्तन की समस्याओं का समाधान भी बताया, उन्होंने कहा कि भारत सरकार व कई कम्पनियां जन मानस की संपर्क भाषा एवं विचारों की संप्रेषणीयता को गहनता से परखते हुए हिन्दी में अधिकाधिक व सुविधाजनक सॉफ्टवेयर बनाने में जुटी हैं जो कि निश्चित रूप से काम को और आसान बना देंगी। अतः यह कहना कि कंप्यूटर के अने से हिन्दी भाषा को क्षति पहुंची है, निराधार बात है।

व्याख्यान के पश्चात चर्चा सत्र में प्रतिभागियों द्वारा कंप्यूटर पर राजभाषा हिन्दी के प्रयोग से जुड़ी विभिन्न समस्याओं/जिज्ञासाओं को अतिथि वक्ता के समक्ष रखा गया जिनका उचित निराकरण किया गया। अतिथि वक्ता द्वारा हिन्दी का भविष्य सुनहरा बताते हुए प्रतिभागियों को प्रोत्साहित किया गया ताथ आगामी विभिन्न सुविधाजनक सॉफ्टवेयरों, शब्दकोशों आदि की जानकारी संप्रेषित की।

प्रभारी राजभाषा एवं वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. फतेह चंद टुटेजा ने कहा कि आयोजित राजभाषा कार्यशाला में रखा गया व्याख्यान अत्यंत महत्वपूर्ण एवं सार्थक है क्योंकि इस प्रकार के व्याख्यानों के माध्यम से ही कार्मिकों को ज्ञानार्जन द्वारा राजभाषा का प्रगामी प्रयोग सुनिश्चित किया जा सकता है।

कार्यशाला के अंत में अध्यक्ष महोदय, अतिथि वक्ता एवं सभी प्रतिभागियों के प्रति धन्यवाद प्रस्ताव नेमीचंद, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी द्वारा दिया गया।

10. राष्ट्रीय कृषि प्रमुख कीट ब्यूरो, बैंगलोर

हिंदी पखवाड़ा

राष्ट्रीय कृषि प्रमुख कीट ब्यूरो, बैंगलोर में 14 से 28 सितम्बर, 2013 तक हिंदी पखवाड़ा का सफल आयोजन किया गया। हिंदी पखवाड़ा कार्यक्रम को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद गान के साथ प्रारम्भ किया गया। हिंदी पखवाड़ा आयोजन के अंतर्गत इस ब्यूरो के निदेशक महोदय, डॉ. अब्राहम वर्गीश जी ने 18 सितम्बर, 2013 को, माननीय कृषि और खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्री, श्री शरद पवार जी के सन्देश को कार्यक्रम में उपस्थित कर्मचारियों को पढ़कर सुनाया तदोपरांत हिंदी भाषा के महत्व और उसके प्रयोग का मानव जीवन में महत्ता पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। डॉ. अंकिता गुप्ता, वैज्ञानिक एवं सदस्य सचिव राजभाषा कार्यान्वयन समिति ने, डॉ. एस. अय्यप्पन जी, माननीय महानिदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद एवं सचिव डेयर, नई दिल्ली से प्राप्त अपील को, कार्यक्रम में उपस्थित कर्मचारियों को पढ़कर सुनाया। राष्ट्रीय कृषि प्रमुख कीट ब्यूरो के प्रशासनिक अधिकारी, श्री जे.एन. एल. दास जी ने कार्यक्रम के दौरान दिन-दैनिक कार्यालयीन उपयोग में ब्यूरो के कर्मचारियों के संवैधानिक कर्तव्यो और कार्यालय में हिंदी के प्रयोग एवं अनुपालन का विस्तार पूर्वक व्याख्यान प्रस्तुत किया। डॉ. सुनील जोशी जी, प्रधान वैज्ञानिक ने, कार्यक्रम में उपस्थित कर्मचारियों द्वारा सक्रिय रूप से भाग लेकर कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए धन्यवाद दिया और कहा कि इस प्रकार के कार्यक्रमों के आयोजनों से ब्यूरो की ही नहीं वरन हमारे परिषद के हिंदी संबंधित कार्यों में महत्वपूर्ण रूप में प्रगति एवं वृद्धि होती है। श्री सतेन्द्र कुमार, सहायक प्रमुख तकनीकी अधिकारी ने हिंदी पखवाड़ा आयोजन का सफल संचालन किया।

निबंध लेखन प्रतियोगिता

राष्ट्रीय कृषि प्रमुख कीट ब्यूरो, बैंगलोर में 19 सितम्बर, 2013 को ब्यूरो में, हिंदी में निबंध (विषय - **"पानी बचाओ"**) लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें ब्यूरो के कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। हिंदी में निबंध लेखन प्रतियोगिता में भाग लेने वाले प्रतियोगियों को, ब्यूरो के निदेशक डॉ. अब्राहम वर्गीश जी ने पुरस्कार एवं प्रमाण - पत्र प्रदान किये।

11. सरसों अनुसंधान निदेशालय, भरतपुर

हिंदी पखवाड़ा

निदेशालय ने 14– 29 सितम्बर 2013 के दौरान हिंदी पखवाडे का आयोजन किया। हिंदी के अधिकतम उपयोग को बढावा देने के लिए पखवाडे के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं के आयोजन पर जोर दिया। पखवाडे में कर्मचारियों के लिए कई प्रतियोगिताओं जैसे शुद्ध हिंदी लेखन, वाद–विवाद, टिप्पण–प्रारूपण, तकनीकी शब्दों का हिन्दी अनुवाद, निबंध लेखन, सामान्य ज्ञान हिंदी टंकण कंप्यूटर पर आदि के साथ साथ कृषि संबंधी हिन्दी स्लोगन आयोजिताऐं आयोजित की गई। उपर्युक्त; प्रतियोगिताओं में निदेशालय के र्कमचारियों ने बड़े उत्साह के साथ भाग लिया। हिन्दी पखवाड़ा समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह 28 सितम्बर, 2013 को अपरान्ह 2.30 बजे सम्मेलन कक्ष में आयोजित किया गया। डॉ. धीरज सिंह, निदेशक ने इस समारोह की अध्यक्षता की। उन्होंने अपने अध्यक्षीय भाषण में राजभाषा के महत्व तथा इसकी नीति एवं अनुपालन के प्रति हमारी जिम्मेदारी का उल्लेख किया। उन्होंने विजेताओं को पुरस्कार और पमाण पत्र प्रदान किये । उन्होंने अन्य र्कमचारियों से भी विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए आग्रह किया उन्होंने अपने सारगर्भित भाषण में विज्ञान के प्रचार एवं प्रसार में हिन्दी की भूमिका के महत्व   से लोगों को अवगत कराते हुए कहा कि हमें विज्ञान को प्रयोगशाला तक ही सीमित नहीं रखना चाहिए बल्कि इसे जन जन तक पहुँचाने के लिए राजभाषा हिन्दी का उपयोग करना चाहिए।

हिन्दी पखवाड़ा में पुरस्कार वितरण समारोह

हिंदी कार्यशालाएं

निदेशालय के राजभाषा प्रकोष्ठ द्वारा 2013–14 में एक दिवसीय हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। दिनांक 21 मई 2013 को आयोजित कार्यशाला में डॉ. विनोद कुमार, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रभारी राजभाषा ने सभी अथितियों एवं उपस्थित वैज्ञानिकों एवं कर्मचारियों का कार्यशाला में स्वागत किया । इस मोंके पर अपने उद्घाटन सम्बोधन में निदेशक ने राजभाषा हिंदी के कार्यालय – कार्यों में अधिकाधिक प्रयोग पर बल दिया एवं हिंदी कार्यशालाओं के आयोजनों की सराहना की। कार्यशाला की शुरूआत करते हुये डॉ. हरिवंश सिंह सोलंकी,

डॉ. भीम राव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा ने राजकार्य में हिंदी के उपयोग पर बोलते हुए कहा कि भाषा अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम होती है एवं हिंदी किसी प्रांत अथवा राज्य की भाषा नही अपितु देश की भाषा है। हिंदी भाषा को बाजार से जोडने की आवष्यकता और इसे व्यवहार परक बनाना जरूरी है। कार्यशाला में आर बी एस कालेज, आगरा की हिंदी प्रवक्ता सुषमा सिंह ने कृषि संबंधी उपयोगी हिंदी षब्दावली पर प्रकाष डाला । निदेशालय में दूसरी एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला दिनांक 21 सितंबर 2013 को आयोजित की गयी कार्यशाला में निदेशक डॉ. धीरज सिंह ने हिन्दी में अपनी रूचि दिखाते हुये निदेशालय के बैज्ञानिकों एवं कर्मचारियों को हिन्दी में अधिक से अधिक कार्य करने के लिये प्रोत्साहित किया। निदेशक का हिन्दी के प्रति लगाव देखते हुये निदेशालय के कर्मचारियों में हिन्दी के प्रति खासा उत्साह दिखा। इस अबसर पर निदेशालय में हिन्दी हो रहे कार्यो का निरीक्षण करने आये भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्ली के फसल अनुभाग के निदेशक श्री सुजीत कुमार मिव्रा ने निदेशालय में हिन्दी में हो रहे कार्यो का निरीक्षण किया । श्री मिव्रा ने कार्यशाला में अपने व्याख्यान में निदेशालय में हो रहे कार्यो की प्रशंसा की एवं और अधिक कार्य हिन्दी में करने के लिये निदेशालय के बैज्ञानिकों एवं कर्मचारियों से आग्रह किया। इस अवसर पर भरतपुर हिन्दी साहित्य समिति के सदस्य एवं पूर्व प्रधनाचार्य डॉ. रघुनाथ सिह ने हिन्दी एक सरल सहज एवं वैज्ञानिक भाषा है पर व्याख्यान दिया उन्होने अपनी स्वरचित कविता हिन्दी 'भारत का गौरव' का पाठ भी किया। इस अवसर पर निदेशालय के राजभाषा प्रभारी एवं वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ विनोद कुमार ने भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्ली से निरीक्षण करने आये श्री मिव्रा के समक्ष निदेशालय में हिन्दी में की जा रहीं गतिविधियों का ब्योरा प्रस्तुत किया। तीसरी कार्यशाला का आयोजन दिनांक 24 दिसंबर 2013 निदेशालय में किया गया तथा चौथी कार्यशाला का आयोजन दिनांक 31 मार्च 2014 को किया गया इस अवसर पर डॉ. दाऊदयाल गुप्ता पूर्व उप निदेशक स्कूल शिक्षा भरतपुर ने राजभाषा नीति पर विस्तार से व्याख्यान दिया।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्ली के फसल अनुभाग के निदेशक श्री सुजीत कुमार मिव्रा एवं निदेशक डॉ. धीरज सिंह द्वारा एक दिवसीय हिन्दी कार्याशाला का उद्घाटन

हिन्दी में उत्कृष्ट कार्य के लिए सरसों अनुसंधान निदेशालय सम्मानित

सरसों अनुसंधान निदेशालय को हिन्दी में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए राजभाषा संस्थान नई दिल्ली द्वारा कार्यालय दीप एवं निदेशालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी वार्षिक पत्रिका सिद्धार्थः सरसों संदेश को कार्यालय दर्पण पुरूस्कार से सम्मानित किया गया है। राजभाषा संस्थान द्वारा यह पुरूस्कार हिमाचल प्रदेश के सोलन में दिनांक 24–26 अप्रेल 2013 को आयोजित 74वी हीरक जयन्ती हिन्दी कार्यशाला में श्री निशिकान्त महाजन, पूर्व सचिव, राजभाषा विभाग, भारत सरकार की उपस्थिति में दिया गया। एक वैज्ञानिक संस्थान होने के बावजूद निदेशालय द्वारा हिन्दी में किये जा रहे कार्यो की सराहना की गई, इस अवसर पर निदेशालय के राजभाषा प्रभारी एवं वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ विनोद कुमार, तकनीकी अधिकारी श्री उदयसिंह राणा, राजभाषा प्रकोष्ठ एवं सहायक प्रशासनिक अधिकारी श्री जवाहर लाल शर्मा ने इस कार्यशाला में भाग लिया एवं पुरूस्कार ग्रहण किये। डॉ विनोद कुमार द्वारा प्रस्तुत आलेख को भी इस कार्याशाला में तृतीय पुरूस्कार से सम्मानित किया गया।

डॉ विनोद कुमार श्री जवाहर लाल शर्मा एवं श्री उदयसिंह राणा राजभाषा संस्थान के कार्यालय दीप पुरस्कार ग्रहण करत हुऐ

राजभाषा पत्रिका सिद्धार्थः सरसों संदेश के चतुर्थांक का विमोचन

तकनीकी विषयो पर हिन्दी में पर्याप्त सहित्य की हमारे देश में अभी भी कमी है। सरसों अनुसंधान निदेशालय अपनी वार्षिक पत्रिका सिद्धार्थः सरसों संदेश का प्रकाशन कर रहा है। इसलिए इस पत्रिका मे प्रकाशित विशेष रूप से किसान उपयोगी तकनीक विषयों पर लेखो से हिन्दी में मौलिक लेखन को प्रोत्साहन मिल रहा है। और तकनीकी जानकारी के प्रचार प्रसार के साथ ही राजभाषा हिन्दी का गौरव बढाने में अहम भूमिका निभा रही है। निदेशालय के 20 वॉ स्थापना दिवस समारोह 20 अक्टूबर 2013 के अवसर पर मुख्य अतिथि डॉ. जे. एस. संधू कृषि आयुक्त भारत सरकार नई दिल्ली ने निदेशालय के राजभाषा प्रकोष्ठ द्वारा प्रकाशित वार्षिक राजभाषा पत्रिका सिद्धार्थः सरसों संदेश के चतुर्थ अंक का विमोचन किया।

हिंदी प्रकाशन

तकनीकी बुलेटीन

अशोक कुमार शर्मा, लिजो थोमस एवं धीरज सिंह (2013). सरसों की उन्नत उत्पादन तकनीकें। तकनीकी प्रसार पुस्तिका । तकनीकी मूल्यांकन एवं प्रसार अनुभाग । सरसों अनुसंधान निदेशालय, भरतपुर। पृष्ठ 48।

अशोक कुमार शर्मा, लिजो थोमस, योगेश शर्मा एवं धीरज सिंह (2014). राई–सरसों की वैज्ञानिक खेती। तकनीकी प्रसार पुस्तिका–2014। सरसों अनुसंधान निदेशालय, भरतपुर। पृष्ठ 64।

एक्सटेंशन फोल्डर्स

अशोक शर्मा, यशपाल सिंह एवं लिजो थोमस (2013). सरसों में कीट एवं रोग प्रबन्धन। सरसों अनुसंधान निदेशालय, भरतपुर । तकनीकी प्रसार पत्रक 8/ 2013। पृष्ठ 6 ।

अशोक शर्मा, यशपाल सिंह एवं लिजो थोमस (2013). तोरिया की उन्नत खेती। सरसों अनुसंधान निदेशालय, भरतपुर। तकनीकी प्रसार पत्रक 9/ 2013। पृष्ठ 6 ।

अशोक शर्मा, लिजो थोमस एवं धीरज सिंह (2014). सरसों (लाहा) की उन्नत खेती । सरसों अनुसंधान निदेशालय, भरतपुर। तकनीकी प्रसार पत्रक 1/ 2014। पृष्ठ 6।

अशोक शर्मा, पंकज शर्मा एवं वी. वी. सिंह (2013). सरसों की उन्नतशील कृषि विधियाँ। सरसों अनुसंधान निदेशालय, भरतपुर । तकनीकी प्रसार पत्रक 7/ 2013। पृष्ठ 6 ।

अशोक शर्मा, पंकज शर्मा, वी.वी. सिंह (2013)। सरसों (लाहा) की उन्नतशील कृषि विधियां। सरसों अनुसंधान निदेशालय, सेवर, भरतपुर। तकनीकी प्रसार पत्रक–7।

अशोक कुमार शर्मा, लिजो थोमस एवं धीरज सिंह (2013–14). राई–सरसों फसल में समन्वित शस्य विधियाँ प्रबंधन। सरसों अनुसंधान निदेशालय, भरतपुर। तकनीकी मूल्यांकन एवं प्रसार अनुभाग । तकनीकी प्रसार पत्रक (संकल्पना सीरीज–1)/ 2013–14। पृष्ठ 6 ।

अशोक कुमार शर्मा, लिजो थोमस एवं धीरज सिंह (2013–14). राई–सरसों की उन्नत किस्में। सरसों अनुसंधान निदेशालय, भरतपुर। तकनीकी मूल्यांकन एवं प्रसार अनुभाग । तकनीकी प्रसार पत्रक (संकल्पना सीरीज–2)/ 2013–14। पृष्ठ 6 ।

अशोक कुमार शर्मा, लिजो थोमस एवं धीरज सिंह (2013–14). राई–सरसों फसल में समन्वित खरपतवार प्रबंधन। सरसों अनुसंधान निदेशालय, भरतपुर। तकनीकी मूल्यांकन एवं प्रसार अनुभाग । तकनीकी प्रसार पत्रक (संकल्पना सीरीज–3)/ 2013–14। पृष्ठ 6।

अशोक कुमार शर्मा, लिजो थोमस एवं धीरज सिंह (2013–14). राई–सरसों फसल में समन्वित पोषक तत्व प्रबंधन। सरसों अनुसंधान निदेशालय, भरतपुर। तकनीकी मूल्यांकन एवं प्रसार अनुभाग । तकनीकी प्रसार पत्रक (संकल्पना सीरीज–4)/ 2013–14। पृष्ठ 6।

अशोक कुमार शर्मा, लिजो थोमस एवं धीरज सिंह (2013–14). राई–सरसों फसल में समन्वित कीट प्रबंधन। सरसों अनुसंधान निदेशालय, भरतपुर। तकनीकी मूल्यांकन एवं प्रसार अनुभाग । तकनीकी प्रसार पत्रक (संकल्पना सीरीज–5)/ 2013–14। पृष्ठ 6।

अशोक कुमार शर्मा, लिजो थोमस एवं धीरज सिंह (2013–14). राई–सरसों फसल में समन्वित रोग प्रबंधन। सरसों अनुसंधान निदेशालय, भरतपुर। तकनीकी मूल्यांकन एवं प्रसार अनुभाग । तकनीकी प्रसार पत्रक (संकल्पना सीरीज–6)/ 2013–14। पृष्ठ 6।

अशोक कुमार शर्मा, लिजो थोमस एवं धीरज सिंह (2013–14). राई–सरसों फसल में अजैविक कारकों का समन्वित प्रबंधन । सरसों अनुसंधान निदेशालय, भरतपुर। तकनीकी मूल्यांकन एवं प्रसार अनुभाग । तकनीकी प्रसार पत्रक (संकल्पना सीरीज–7)/ 2013–14। पृष्ठ 6।

अशोक कुमार शर्मा, लिजो थोमस एवं धीरज सिंह (2013–14). राई–सरसों फसल में समन्वित कटाई, गहाई और भंडारण प्रबंधन। सरसों अनुसंधान निदेशालय, भरतपुर। तकनीकी मूल्यांकन एवं प्रसार अनुभाग । तकनीकी प्रसार पत्रक (संकल्पना सीरीज–8)/ 2013–14। पृष्ठ 6 ।

अशोक कुमार शर्मा, लिजो थोमस एवं धीरज सिंह (2013). सरसों की उन्नत उत्पादन तकनीकें। तकनीकी प्रसार पुस्तिका । तकनीकी मूल्यांकन एवं प्रसार अनुभाग । सरसों अनुसंधान निदेशालय, भरतपुर। पृष्ठ 48।

अशोक कुमार शर्मा, लिजो थोमस एवं धीरज सिंह (2014). कीटनाशकों एवं फफूँदीनाशको का सुरक्षित उपयोग कैसे करें । सरसों अनुसंधान निदेशालय, भरतपुर। तकनीकी मूल्यांकन एवं प्रसार अनुभाग । तकनीकी प्रसार पत्रक 4/2014। पृष्ठ 6।

अशोक कुमार शर्मा, लिजो थोमस एवं धीरज सिंह (2014). मधुमक्खी पालनः कृषि उत्पादन में बढोत्तरी के साथ स्वरोजगार का बेहतर साधन । सरसों अनुसंधान निदेशालय, भरतपुर। तकनीकी मूल्यांकन एवं प्रसार अनुभाग । तकनीकी प्रसार पत्रक 3/2014। पृष्ठ 6।

अशोक कुमार शर्मा, लिजो थोमस एवं धीरज सिंह (2014). राई–सरसों में कीट एवं रोग नियंत्रण । सरसों अनुसंधान निदेशालय, भरतपुर । तकनीकी प्रसार पत्रक 2/ 2014। पृष्ठ 6।

अशोक कुमार शर्मा, लिजो थोमस, योगेश शर्मा एवं धीरज सिंह (2014). राई–सरसों की वैज्ञानिक खेती। तकनीकी प्रसार पुस्तिका–2014। सरसों अनुसंधान निदेशालय, भरतपुर। पृष्ठ 64।

अशोक कुमार शर्मा, लिजो थोमस एवं यशपाल सिंह (2013). तारामीरा की वैज्ञानिक खेती। सरसों अनुसंधान निदेशालय, भरतपुर । तकनीकी प्रसार पत्रक 10। पृष्ठः 6

सिंह के. एच., अशोक कुमार शर्मा एवं धीरज सिंह (2014). पौधा किस्म एवं कृषक अधिकार संरक्षण अधिनियमः प्रावधान एवं अपेक्षाएं। सरसों अनुसंधान निदेशालय, भरतपुर। तकनीकी प्रसार पत्रक 7/2014। पृष्ठ 6।

पंकज शर्मा एवं जितेन्द्र सिंह चौहान (2013)। सरसों उत्पादन की वैज्ञानिक तकनीक। कृषि विज्ञान केन्द्र (सरसों अनुसंधान निदेशालय) गूंता–बानसूर।

पंकज शर्मा एवं जितेन्द्र सिंह चौहान (2013)। ग्वार उत्पादन की उन्नत तकनीक। कृषि विज्ञान केन्द्र (सरसों अनुसंधान निदेशालय) गूंता–बानसूर।

पंकज शर्मा एवं जितेन्द्र सिंह चौहान (2013)। गेंहू की वैज्ञानिक खेती । कृषि विज्ञान केन्द्र (सरसों अनुसंधान निदेशालय) गूंता–बानसूर।

सिंह वी. वी., अशोक कुमार शर्मा, धीरज सिंह, सुनील कुमार इन्टोदिया एवं आई. जे. माथुर (2014). मक्का बीजोत्पादन हेतु उन्नत शस्य क्रियाऐं। सरसों अनुसंधान निदेशालय, भरतपुर। तकनीकी प्रसार पत्रक 6/2014। पृष्ठ 6।

सिंह वी. वी., अशोक कुमार शर्मा, लिजो थोमस, धीरज सिंह, सुनील कुमार इन्टोदिया एवं आई. जे. माथुर (2014). गेहूँ बीजोत्पादन हेतु उन्नत शस्य क्रियाऐं । सरसों अनुसंधान निदेशालय, भरतपुर। तकनीकी प्रसार पत्रक 5/2014। पृष्ठ 6।

12. केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, कासरगोड़

हिंदी चेतनामास

राजभाषा विभाग और भारतीय कृयि अनुसंधान परिषाद, नई दिल्ली के मार्गनिर्देश के अनुसार इस संस्थान में 18 सितंबर 2013 से एक महीने की अवधि पर विभिन्न प्रतियोगिताओं के साथ हिंदी चेतनामास समारोह मनाया गया । भारत माता की वंदना करते हुए हिंदी चेतनामास समारोह का शुभारंभ हुआ । श्री सुरेशकुमार, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी ने सभा में उपस्थित सभी स्टाफ सदस्यों का स्वगत किया और हिंदी समारोह के सफल आयोजन की शुभकामनाओं की कामना की । डॉ जॉर्ज वी थॉमस, निदेशक , कें रो फ अ सं, कासरगोड ने अपने अध्यक्षीय भाषण के साथ डॉ अय्यप्पन, महानिदेशक , भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के अपील सुनाकर सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से अपना अधिकाधिक सरकारी कार्य हिंदी में करने का आह्वान किया । मुख्य अतिथि डॉ शशिधरन, प्रमुख एवं पाठ्यक्रम निदेशक , कण्णूर विश्वविद्यालय ने हिंदी के विकास और राजभाषा के रुप में उसके प्रचार प्रसार पर प्रकाश डाला

हिंदी चेतनामास समारोह की अवधि पर संस्थान के अधिकारियों /कर्मचारियों के बीच हिंदी के प्रति रुचि बढ़ाने हेतु विभिन्न प्रभागों के तत्वावधान में विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताएँ जैसे निबंध लेखन, कविता पाठ, आशुभाषण और स्मरण परीक्षा आयोजित की गई। कुशल सहायक कर्मचारियों के लिए प्रत्येक रुप से स्मरण परीक्षा और भाषण प्रतियोगितायें आयोजित की गईं ।

डॉ. के. मुरलिधरन, कार्यकारी निदेशक की अध्यक्षता में समापन समारोह आयोजित किया गया । अध्यक्ष महोदय ने अपने अध्यक्षीय भाषण के बाद, माननीय कृषि एवं खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्री श्री शदर पवार का संदेश पढ़ा और अधिकारियों और कर्मचारियों में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करने की प्रेरणा दी ।

डॉ जितेन्द्र गुप्ता, अतिथि संकाय (हिंदी) , केंद्रीय विश्व विद्यालय, केरल समापन समारोह के मुख्य अतिथि रहे । उन्होंने कृषि प्रधान देश में कृषि पर आधारित शोध संस्थान के उत्तरदायित्व की ओर ध्यान आकर्षित किया कि शोध उपलब्धियों को किसानों तक पहुँचाने में हिंदी भाषा के प्रयोग की भूमिका महत्वपूर्ण है ।

समारोह की अवधि पर आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार वितरण मुख्य अतिथि द्वारा किया गया और प्रतियोगिताओं में भाग लिए गए कर्मचारियों को प्रोत्साहित किया गया । सरकारी काम काज में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग किए गए अधिकारियों एवं कर्मचारियों को इस अवसर पर नकद पुरस्कार वितरण किया गया। श्री जयराम नायिक, प्रशासनिक अधिकारी एवं सदस्य सचिव, राजभाषा कार्यान्वियन समिति के धन्यवाद ज्ञापन के साथ समारोह समाप्त हुआ ।

डॉ मुरलिधरन, कार्यकारी निदेशक महोदय(मध्य) श्री सुरेश कुमार(मुख्य प्रशासनिक अधिकारी , डॉ जितेन्द्र गुप्ता, अतिथि संकाय (हिंदी) , केंद्रीय विश्व विद्यालय, केरल

श्री सी.एच.अमरनाथ, मुख्य तकनीकी अधिकारी (कंप्यूटर) हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग में शील्ड स्वीकार करते हुए

हिंदी कार्यशाला -

उपर्युक्त अवधि में दिनांक 29.05.2013, 26.08.2013, 18.02.2014 को हिंदी कार्यशालाएँ आयोजित की गई । कार्यशालाओं के मार्गदर्शक श्रीमती श्रीलता, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी (हिंदी) और डॉ. विजयकुमार, प्रमुख (हिंदी विभाग) केरल केंद्रीय विश्वविद्यालय , कासरगोड़ और श्री के. वी महीन्द्रन उप प्रबंधक (राजभाषा) भारतीय स्टेट बैंक , कोषिकोड रहे।

डॉ जॉर्ज वी थॉमस, निदेशक एवं श्री सुरेशकुमार, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी और डॉ सी पी वी विजयकुमार, प्रमुख(हिंदी विभाग) केरल केंद्रीय विश्वविद्यालय

प्रादेशिक केंद्र, कायम्कुलम

हिंदी पखवाड़ा समारोह

केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, प्रादेशिक केंद्र, कायम्कुलम में दिनांक 25.9.2013 से 9.10.2013 तक हिंदी पखवाड़ा समारोह मनाया गया । उद्घाटन समारोह डॉ वी कृष्णकुमार, स्टेशन प्रमुख की अध्यक्षता में संपन्न हुई । समारोह की अवधि में श्रुतलेखन, अनुच्छेद लेखन, अनुवाद, हिंदी पढन, स्मृति परीक्षा चित्र देखकर बताना आदि प्रतियोगिताएँ आयोजित की गई। दिनांक 10.10.2013 के समापन समारोह में श्रीमती सुबीशा, मानव संसाधन प्रबंधक, एन टी पी सी , चेपाड़ मुख्य अतिथि थी और मुख्य अतिथि द्वारा प्रतियोगिताओं के विजेताओं का पुरस्कार वितरण किया गया ।

डॉ वी कृष्णकुमार, स्टेशन प्रमुख के दायें श्रीमती सुबीशा, मानव संसाधन प्रबंधक, एन टी पी सी, श्रीमती विजया दिलीप, सहायक प्रशासनिक अधिकारी(प्रभारी) बायें डॉ वी.के चतुर्वेदी , सचिव (रा भा कार्यान्वयन समिति) एवं वरिष्ठ वैज्ञानिक

हिंदी कार्यशाला

उपयुक्त अवधि में तीन हिंदी कार्यशालाएँ आयोजित की गई। दिनांक 16.4.2013 और दिनांक 15.03.2014 को श्री डी के पणिक्कर,उपनिदेशक (सेवा निवृत्त) राजभाषा विभाग ने कार्यशाला के संसाधक के रुप में हिंदी शब्दो और वाक्य जो टिप्पणियों और वाक्यों में प्रयोग किए जाते है उस पर आधारित अभ्यास कराकर प्रशिक्षण दिया । दिनांक 4.10.2013 को श्रीमती श्रीलता के, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी (हिंदी) कें रो फ अ सं, कासरगोड के मार्गदर्शन में राजभाषा विभाग के वेबसाईट के आधार पर ई - महाशब्दकोश, मंत्रा-मशीन अनुवाद और यूनिकोड को सक्रिया करने की विधि पर कार्यशाला चलायी ।

डॉ वी कृष्णकुमार, स्टेशन प्रमुख के दायें ओर श्री डी के पणिक्कर,उपनिदेशक (सेवा निवृत्त) राजभाषा विभाग

प्रादेशिक केंद्र, विट्टल

कार्यशाला

वार्षिक कार्यक्रम के अनुसार केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, प्रादेशिक केंद्र, विट्टल में दिनांक 29.05.2013 को एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला आयोजित की गई । डॉ के एस आनन्दा, प्रमुख, प्रादेशिक केंद्र, श्री जयराम नायिक,प्रशासनिक अधिकारी, श्रीमती श्रीलता , वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी (हिंदी) की उपस्थिति में डॉ बी आर पॉल, उप निदेशक (राजभाषा) एम आर पी एल , मंगलूर ने कर कमलों द्वारा द्वीप प्रज्वलित कर कार्यशाला का उद्घाटन किया । कार्यशाला में प्रादेशिक केंद्र,विट्टल और मुख्यालय कासरगोड़ के स्टाफ सदस्यों के अतिरिक्त नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, पुत्तूर, कर्नाटक के अधिकारीगण भी उपस्थित थे। डॉ पॉल ने राजभाषा नियमअधिनियम पर सत्र चलाया । डॉ पॉल के अतिरिक्त श्रीमती श्रीलता

ने अनुवाद पर और श्री के राजेश , हिंदी अधिकारी, कार्पोरेशन बैंक , मंगलूर ने संघ की राजभाषा नीति, संसदीय राजभाषा समिति का गठन और हिंदी भाषा के विकास पर प्रकाश डाला ।

डॉ बी आर पॉल , उप निदेशक (राजभाषा) एम आर पी एल, मंगलूर द्वीप प्रज्वलित कर कार्यशाला का उद्घाटन करते हुए । साथ डॉ के एस आनन्दा, प्रमुख, प्रादेशिककेंद्र, विट्टल, श्री जयराम नायिक, प्रशासनिक अधिकारी , केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, कासरगोड़, श्रीमती श्रीलता, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी(हिंदी) कें रो फ असं, कासरगोड़ बायें ओर श्री एच नागराज, सदस्य सचिव (राजभाषा कार्यान्वियन समिति) एवं सहायक, प्रादेशिक केंद्र, विट्टल

13. तिलहन अनुसंधान निदेशालय, हैदराबाद

हिन्दी पखवाड़ा समारोह

निदेशालय में 01-14 सितंबर, 2013 तक हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया। इसका समापन समारोह 13 सितबंर, 2013 को आयोजित किया गया। इस पखवाड़े के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। जिनमें वैज्ञानिक, अधिकारी व कर्मचारियों ने उत्साह से भाग लिया। पखवाड़े के दौरान एक कार्यशाला का आयोजन भी किया गया। जिसमें श्रीमती नरेश बाला, सहा.निदेशक (रा.भा) हिन्दी शिक्षण योजना ने हिन्दी के व्याकरण तथा आलेखन टिप्पण पर कक्षा चलाई।

पखवाड़े का समापन समारोह डॉ. के.एस. वरप्रसाद, परियोजना निदेशक की अध्यक्षता में हुआ। कार्यक्रम का आरंभ श्री. प्रदीप सिंह, सहा. निदेशक (रा.भा) के स्वागत एवं मुख्य अतिथि परिचय से हुआ। इसके पश्चात प्रभारी राजभाषा डॉ. एन. मुक्ता ने राजभाषा की प्रमुख गतिविधियों पर प्रकाश डाला। इसके बाद प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत वर्ष 2012-13 के दौरान हिन्दी में कार्यालयीन कार्य करने वाले अधिकारी व कर्मचारियों को नगद पुरस्कार मुख्य अतिथि डॉ. घनश्याम, रीडर, बीजेआर कॉलेज, नामपल्ली द्वारा वितरित किए गए। इसी क्रम में पखवाड़े के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं में पुरस्कारों का वितरण किया गया। प्रभारी परियोजना निदेशक डॉ. आईवाईएलएन मूर्ति ने प्रोत्साहन पुरस्कार वितरित किए।

अपने मुख्य अतिथि संबोधन में डॉ. घनश्याम जी ने भाषा और संस्कृति के बारे में बताते हुए कहा कि भाषा के बिना संस्कृति को जीवित रखना मुश्किल है। आज हिन्दी ही नहीं सभी भारतीय भाषाओं का अस्तित्व खतरे में है। पाश्चात्य संस्कृति का अंधा अनुकरण कर, आज की युवा पीढ़ी धीरे-धीरे भाषा और संस्कृति दोनों से ही दूर होती जा रही है।

अपने अध्यक्षीय संबोधन में डॉ. के. एस. वरप्रसाद, परियोजना निदेशक ने हिन्दी से जुड़े अपने अनुभवों से सभा को अवगत कराया। प्रारंभ में केवल वे ही फाइलों में टिप्पणी हिन्दी में करते थे। उनसे प्रेरित हो कुछ अन्य वैज्ञानिक, अधिकारी व कर्मचारी भी फाइलों में हिन्दी में आलेखन टिप्पण कर रहे है।

डॉ. एच. बसप्पा, प्रधान वैज्ञानिक के धन्यवाद ज्ञापन से कार्यक्रम का समापन हुआ।

राजभाषा कार्यशाला

निदेशालय में वर्ष के दौरान चार कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। यह कार्यशालाएँ 20 जून, 2013, 11 सितंबर, 2013, 21 दिसंबर, 2013 तथा 22 मार्च, 2014 को आयोजित की गई। इन कार्यशालाओं में श्री. होमनिधि शर्मा, वरिष्ठ प्रबंधक (रा.भा), भारत डायनमिक्स लिमिटेड, हैदराबाद, श्रीमती नरेश बाला, हिन्दी प्राध्यापक, हिन्दी शिक्षण योजना, हैदराबाद, श्री. कमालुद्दीन, सहा. निदेशक, हिन्दी शिक्षण योजना, हैदराबाद, श्रीमती निलिभा तिवारी, हिन्दी प्राध्यापक, हिन्दी शिक्षण योजना, हैदराबाद ने अतिथि व्याख्याता के रुप में भाग लिया।

तिलहन अनुसंधान निदेशालय राजभाषा पुरस्कार से सम्मानित

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (केंद्र सरकार), हैदराबाद की 49वीं बैठक क्रीडा के निदेशक तथा समिति के अध्यक्ष डॉ. बी. वेंकटेश्वर्लु की अध्यक्षता में केंद्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, एर्रागड्डा में आयोजित की गई। बैठक में केंद्र सरकार के कार्यालयों के 175 से भी अधिक प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

तिलहन अनुसंधान निदेशालय को हैदराबाद स्थित केंद्रीय सरकारी कार्यालयों में 01.01.2013 से 30.06.2013 के दौरान संघ की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन में सर्वोत्तम निष्पादन के उपलक्ष्य में वैज्ञानिक अनुसंधान एवं विकास संगठनों की श्रेणी में तृतीय पुरस्कार स्वरुप शील्ड प्रदान की गई। इसे निदेशालय के प्रभारी निदेशक डॉ. आईवाईएलएन मूर्ति एवं सहा. निदेशक (रा.भा) श्री. प्रदीप सिंह ने प्राप्त किया।

नराकास की ओर से शब्द स्मृति ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन

निदेशालय में 18 दिसंबर, 2013 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (केंद्र सरकार) की ओर से केंद्र सरकार के कर्मचारियों हेतु शब्द स्मृति ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता डॉ. आईवाईएलएन मूर्ति, प्रभारी निदेशक के नेतृत्व में आयोजित की गई। प्रतियोगिता का शुभारंभ संतराम यादव, सहायक निदेशक (रा.भा) तथा सदस्य सचिव, नराकास के स्वागत भाषण से हुआ। डॉ. मूर्ति ने अपने भाषण में इस तरह की प्रतियोगिताओं के आयोजन पर प्रकाश डालते हुए कर्मचारियों से अधिक संख्या में भाग लेने का आग्रह किया। इस प्रतियोगिता में केंद्रीय सरकारी कार्यालयों के अधिकारी/कर्मचारियों नें उत्साह से भाग लिया। प्रदीप सिंह, सहायक निदेशक (रा.भा) ने इस प्रतियोगिता के आयोजन का अवसर प्रदान करने हेतु सचिव नराकास तथा हैदराबाद स्थित विभिन्न कार्यालयों से आए प्रतिभागियों को धन्यवाद दिया।

14. केन्द्रीय कपास प्रौद्योगिकी अनुसंधान संस्थान, मुंबई

हिन्दी चेतना मास 2013

केन्द्रीय कपास प्रौद्योगिकी अनुसंधान संस्थान, माटुंगा, मुंबई में दिनांक 7 सितंबर, 2013 से 30 सितंबर, 2013 तक हिन्दी चेतना मास का आयोजन किया गया है । संस्थान में दिनांक 7 सितंबर, 2013 को हिन्दी चेतना मास का उदघाटन समारोह संपन्न हुआ । उदघाटन समारोह के लिए डॉ.वनमाली चतुर्वेदी, साहित्यकार और श्री पवन तिवारी, पत्रकार मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित थे ।डॉ. वनमाली चतुर्वेदी, मुख्य अतिथि के करकमलों से दीप प्रज्वलन करके समारोह का उदघाटन किया गया। इस अवसर पर हिन्दी दिवस की प्रतिज्ञा श्रीमती वी.वी.देसाई, सदस्या द्वारा ली सभी कर्मचारीयों को दी गई तथा अतिथि परिचय श्रीमती तृप्ती मोकल, सदस्या ने किया। उदघाटन समारोह के कार्यक्रम में आशुभाषण एवं कविता पठन प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया, जिसमें संस्थान के कर्मचारियों ने बढचढकर हिस्सा लिया।

डॉ चतुर्वेदी, मुख्य अतिथि ने अपने बोधपर संभाषण में कहा कि मूलत: वैज्ञानिक एवं तकनीकी विषयों पर कार्य किये जाने के बावजूद भी काफी कार्य हिन्दी में हो रहा है, यह महत्वपूर्ण बात है, इसी से राष्ट्रभाषा हिन्दी का विकास संभव है। उन्होंने संस्थान में हो रहे हिन्दी के कार्य की सराहना की और कहा कि कौन कहता है हिन्दी पिछड रही है ? हिन्दी तो देश विदेश में भी पाठ्य सामग्री के रूप में अपनायी जा रही है । उन्होंने कहा कि हम कभी भी यह ना समझे कि विदेशों में हिंदी के जानकार है ही नही, अपने रोचक अनुभव का एक किस्सा उन्होंने सुनाया कि एक बार विदेश गये थे तब किस प्रकार उन्हें विदेशी महिला के मुंह से हिंदी के शब्दों को सुनकर अचंभित होना पडा ।

श्री पवन तिवारी, अतिथि ने अपने भाषण के जरिये अचरज में पडने वाले आंकडे बताये, उन्होंने बताया कि हिन्दी दुनिया में तिसरे क्रम में बोली जाने वाली भाषा है । देश विदेश के विश्वविद्यालयों में हिन्दी को एक भाषा के रूप में रखा गया है, संस्कृत से निकली इस भाषा की बात ही कुछ और है, यह वैज्ञानिक भाषा है इसकी लिपि युं ही नही वैज्ञानिक कहलाती है । दुनिया भर में 60 से ज्यादा देशों में हिन्दी को तिसरी भाषा के रूप में लिया गया है ।

हिन्दी चेतना मास के दौरान, 20 सितंबर, 2013 को निबंध प्रतियोगिता, 21सितंबर, 2013 को शुद्ध लेखन और अंताक्षरी, 24 सितंबर, 2013 को तकनीकी वाक्यांश की प्रतियोगिता ली गयी, जिसमें संस्थान के कर्मचारियों ने बढचढकर हिस्सा लिया ।

30 सितंबर,2013 को हिन्दी चेतना मास के समापन समारोह के दिन कवि सम्मेलन हुआ । कवि सम्मेलन का संचालन बिंदु वेणुगोपाल ने किया और सूत्र संचालन डॉ अनंत श्रीमाली द्वारा किया गया। कवि सम्मेलन में जो कवि उपस्थित थे वे, डॉ.वनमाली चतुर्वेदी, डॉ अनंत श्रीमाली, श्री अरविंद राही, श्री प्रतीक दवे, श्री खन्ना मुज्जफरपुरी, सुश्री मिनु मदान, सुश्री सुमीता केशवा, श्री रोहित शर्मा हैं। कवि सम्मेलन समाप्ती के दौरान

पुरस्कार वितरण किया गया। इस दौरान संस्थान में हिंदी का ज्यादा काम करनेवाले प्रशासनिक और तकनीकी अनुभागों में चल-वैजयंती दी गई और प्रोत्साहन योजना के प्रमाणपत्रों का वितरण किया गया।

चल वैजयंती प्राप्त करते हुए।

काव्य पठन करते हुए कवि

कार्यशालाएं :-

राजभाषा कार्यान्वियन के विभिन्न पहलु विषय पर दि. 31 मई और 1 जून, 2013 को तकनीकी कर्मचारी और अधिकारियों के लिए कार्यशाला आयोजित की गई। जिसमें पहले दिन श्री अनंत श्रीमाली, सहायक निदेशक हिंदी शिक्षण योजना ने और दूसरे दिन श्री कलीम उल्लाह खान, सहायक निदेशक, एम.टी.एन.एल. ने मार्गदर्शन किया।

श्री कलीम उल्लाह खान, एम.टी.एन.एल. का स्वागत करते हुए

राजभाषा, प्रबंधन - आलेखन टिप्पण विषय पर दि. 25 और 26 जून, 2013 को प्रशासनिक कर्मचारियों के लिए आयोजित कार्यशाला में श्री राजेंद्र सिंह, उपनिदेशक, हिंदी शिक्षण योजना और डा. रिता कुमार, पूर्व महाप्रबंधक, भारतीय कपास निगम ने मार्गदर्शन किया।

मानक वर्तनी और व्याकरणिक संरचना विषय पर दि. 31 अगस्त और 2 सितंबर, 2013 को वैज्ञानिकों के लिए आयोजित कार्यशाला में श्रीमती गार्गी गाडगिल और श्रीमती सुनिता यादव, दोनों प्राध्यापिका हिंदी शिक्षण योजना ने मार्गदर्शन किया।

उपलब्धियाँ

- फसलोपरांत प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में कपास व वस्त्र रेशों पर मूलभूत, अनुप्रायोगिक, सामरिक और पूर्वापेक्षिक अनुसंधान कर नई मशीनरी और नई प्रौद्योगिकी विकसित करना ।
- भारतीय कपास और कपास उत्पादों के गुणवत्ता उन्नयन के लिए प्रभावशाली प्रौद्योगिकी समर्थन प्रदान करना ।
- कपास पौधा सहउत्पादों एवं प्रक्रियागत अवशिष्टों तथा अन्य फसल अवशिष्टों के विविधीकृत उपयोग के लिए एक समन्वयक केन्द्र के रूप में कार्य करना ।
- वस्त्र उद्योग, शासकीय और निजी अभिकरणों एजेन्सियों को प्रशिक्षण, शैक्षणिक और परामर्श सेवायें प्रदान करना ।
- कपडा परीक्षण के लिए एक रेफरल प्रयोगशाला के रूप में कार्य करना ।

प्रकाशनों की सूची

- किसानों द्वारा बुआई के लिए कपास के बीज प्राप्त करने हेतु सिरकॉट द्वारा विकसित छोटे यंत्र : क्लाय जीन और अम्ल विजंतुकीकरण यंत्र
- स्वच्छ कपास चुनाई के लिए सिरकॉट की बेहतर प्रबंधन कार्यप्रणाली
- सिरकॉट की अवशोषक रूई तकनीकी
- कपास डंठल के उपयोग से कण बोर्ड बनाने की सिरकॉट की तकनीक
- टेक्सटाईल रबर कम्पोजिट से निर्मित फ्लेक्सी रोक बांध (रबर बांध) एक नया कृषि वस्त्रोपयोग
- खेत में कपास की सफाई करने वाला यंत्र(अक्सिअल फ्लो द्वारा पूर्व सफाई)सिरकॉट की तकनीक
- कपास डंठलसे खाद बनाने की त्वरित प्रक्रिया
- किसानों का अनिश्चित आय और मिट्टी की उर्वरत प्रबंधन के लिए सिरकॉट का व्यावहारिक समाधान
- ग्रामीण स्तर पर पूनी निर्माण के लिए सिरकॉट का लघु धुलाई यंत्र
- कृषि आय वृद्धि के लिए कपास डंठलों का पर्याप्त उपयोग :सिरकॉट का दृष्टिकोण
- यांत्रिक कपास चुनाई के उपरांत सफाई के लिए यंत्र - सिरकॉट की तकनीक
- कपास की गुणवत्ता, मूल्य संवर्धन और उपोत्पाद उपयोगिता पर किसानों के लिए प्रशिक्षण पाठयक्रम
- कपास की पूर्व मूल्य कडी से किसानों को फायदे के.क.प्रौ.अनु.संस्थान का अध्ययन
- वस्त्रों की रंगाई के लिए उपयोग द्वारा फसल उपोत्पादों का मूल्य वर्धन
- श्वेत सरिणिका - अंक 35
- वार्षिक रिपोर्ट - वर्ष 2012 - 13

पुरस्कार :

- अक्तुबर, 2013 को कार्यालय की राजभाषा प्रभारी श्रीमती के.आर.जोशी को आशीर्वाद नामक सांस्कृतिक संस्थान द्वारा हिंदी में किये गये उत्कृष्ट कार्य के लिए पुरस्कृत किया गया।
- इसी वर्ष राजभाषा संस्थान, नई दिल्ली द्वारा संस्थान को हिंदी में उत्कृष्ट प्रकाशन के लिए कार्यालय ज्योति स्मृति चिन्ह पुरस्कार दिनांक 1 मई, 2014 को प्रदान किया ।

15. राष्ट्रीय पटसन एवं समवर्गी रेशा प्रौद्योगिकी अनुसंधान संस्थान, कोलकाता

हिन्दी कार्यशालाएं

राष्ट्रीय पटसन एवं समवर्गी रेशा प्रौद्योगिकी अनुसंधान संस्थान, कोलकाता, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद में दिनांक 21 फरवरी, 2015 को पूर्वाह्न 10.00 से 01.00 बजे तक संस्थान के हिन्दी अनुभाग के प्रभारी अधिकारी श्री आर.डी. शर्मा, सहायक निदेशक (राजभाषा) की अध्यक्षता में ''हिन्दी में नोटिंग, ड्राफ्टिंग एवं पत्राचार'' विषय पर एक दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में तकनीकी एवं प्रशासनिक वर्ग के कुल मिलाकर 24 प्रतिभागियों (02 अधिकारी एवं 22 कर्मचारी) ने भाग लिया ।

राष्ट्रीय पटसन एवं समवर्गी रेशा प्रौद्योगिकी अनुसंधान संस्थान, कोलकाता, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद में दिनांक 22 नवम्बर, 2014 को पूर्वाह्न 10.00 से 01.00 बजे तक संस्थान के हिन्दी अनुभाग के प्रभारी अधिकारी श्री आर.डी. शर्मा, सहायक निदेशक (राजभाषा) की अध्यक्षता में ''राजभाषा के रूप में हिन्दी'' विषय पर एक दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में तकनीकी एवं प्रशासनिक वर्ग के कुल मिलाकर 17 प्रतिभागियों (05 अधिकारी एवं 12 कर्मचारी) ने भाग लिया।

राष्ट्रीय पटसन एवं समवर्गी रेशा प्रौद्योगिकी अनुसंधान संस्थान, कोलकाता, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद में दिनांक 24 मई, 2014 को पूर्वाह्न 10.00 से 01.00 बजे तक संस्थान के हिन्दी अनुभाग के प्रभारी अधिकारी श्री आर.डी. शर्मा, सहायक निदेशक (राजभाषा) की अध्यक्षता में ''भारत सरकार की राजभाषा नीति, नियम तथा अधिनियम'' विषय पर एक दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में तकनीकी एवं प्रशासनिक वर्ग के कुल मिलाकर 21 प्रतिभागियों (05 अधिकारी एवं 16 कर्मचारी) ने भाग लिया ।

राष्ट्रीय पटसन एवं समवर्गी रेशा प्रौद्योगिकी अनुसंधान संस्थान, कोलकाता, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद में दिनांक 23 नवम्बर, 2013 को पूर्वाह्न 10.00 से 01.00 बजे तक संस्थान के हिन्दी अनुभाग के प्रभारी अधिकारी श्री आर.डी. शर्मा, सहायक निदेशक (राजभाषा) की अध्यक्षता में ''राजभाषा कार्यान्वयन एवं हिन्दी प्रशिक्षण की आवश्यकता'' विषय पर एक दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में तकनीकी एवं प्रशासनिक वर्ग के कुल मिलाकर 22 प्रतिभागियों ने भाग लिया ।

राष्ट्रीय पटसन एवं समवर्गी रेशा प्रौद्योगिकी अनुसंधान संस्थान, कोलकाता, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद में दिनांक 17 अगस्त, 2013 को पूर्वाह्न 10.00 से 01.00 बजे तक संस्थान के हिन्दी अनुभाग के प्रभारी अधिकारी श्री आर.डी. शर्मा, सहायक निदेशक (राजभाषा) की अध्यक्षता में '' राजभाषा कार्यान्वयन एवं विभिन्न प्रकार के पत्राचार'' विषय पर एक दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में तकनीकी एवं प्रशासनिक वर्ग के कुल मिलाकर 18 प्रतिभागियों ने भाग लिया ।

राष्ट्रीय पटसन एवं समवर्गी रेशा प्रौद्योगिकी अनुसंधान संस्थान, कोलकाता, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद में दिनांक 18 मई, 2013 को पूर्वाह्न 10.00 से 01.00 बजे तक संस्थान के हिन्दी अनुभाग के प्रभारी अधिकारी श्री आर.डी. शर्मा, सहायक निदेशक (राजभाषा) की अध्यक्षता में ''राजभाषा कार्यान्वयन, टिप्पणी एवं मसौदा लेखन'' विषय पर एक दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में तकनीकी एवं प्रशासनिक वर्ग के कुल मिलाकर 13 प्रतिभागियों ने भाग लिया ।

राष्ट्रीय पटसन एवं समवर्गी रेशा प्रौद्योगिकी अनुसंधान संस्थान, कोलकाता, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद में दिनांक 01 मार्च , 2014 को पूर्वाह्न 10.00 से 01.00 बजे तक संस्थान के हिन्दी अनुभाग के प्रभारी अधिकारी श्री आर.डी. शर्मा, सहायक निदेशक (राजभाषा) की अध्यक्षता में ''भारत सरकार की राजभाषा नीति एवं हिन्दी टिप्पण और मसौदा लेखन '' विषय पर एक दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में तकनीकी एवं प्रशासनिक वग्र के कुल मिलाकर 22 प्रतिभागियों (05 अधिकारी एवं 17 कर्मचारी) ने भाग लिया ।

16. गन्ना प्रजनन संस्थान, कोयम्बत्तूर, तमिलनाडू

हिन्दी पखवाड़ा एवं हिन्दी दिवस कार्यक्रम

गन्ना प्रजनन संस्थान, कोयम्बत्तूर, तमिलनाडू में हिन्दी पखवाडे का आयोजन दिनांक 16.09.2013 से 23.09.2013 तक किया गया । हिन्दी पखवाडे के दौरा संस्थान के कर्मचारियों ने लिए विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया ।

इस उपलक्ष्य में दिनांक 23.09. 2013 को हिन्दी दिवस कार्यक्रम डॉ. एन. विजयन नायर, निदेशक, की अध्यक्षता में आयोजन किया गया । इस समारोह के मुख्य अतिथि श्री जगतार सिंह, मुख्य आयकर आयुक्त रेजकोर्स रोड, कोयम्बत्तूर थे । श्री के.के. हमजा, वरिष्ठ वित्त एवं लेखा अधिकारी एवं नोडल अधिकारी (हिन्दी) ने मंच का संचालन करते हुए उपस्थित सदस्यों एवं आमंत्रित अतिथियों का स्वागत किया ।

इस समारोह के मुख्य अतिथि श्री जगतार सिंह, मुख्य आयकर आयुक्त रेजकोर्स रोड, कोयम्बत्तूर ने अपने भाषण में हिन्दी भाषा का महत्व, हिन्दी सीखना बुराई नहीं और हिन्दी कैसे सीखना, इसके बारे में प्रकाश डाला। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के आदेश के अनुसार हिन्दी अनुाााग द्वारा वार्षिक रिपोर्ट 2010–2011 को हिन्दी में अनुवाद किया गया है, जिसका विमोचन मुख्य अतिथति ओर निदेशक महोदय के करकमलों के द्वारा संयुक्त रूप से किया गया ।

हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य में कर्मचारियां के लिए हस्तलेखन प्रतियोगिता, हिन्दी श्रूत लेख,हिन्दी में अनुवाद, हिन्दी में टंकन और गीत गायन की प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। इन प्रतियोगिताओं में 45 अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया। इन प्रतियोगिताओं के विजेताओं को मुख्य अतिथि द्वारा पुरस्कार वितरण किया गया। इस समारोह में लगभग 300 कर्मचारियों ने भाग लिया।

इस समारोह के अन्त में डॉ. अर्जुन टाइडे, वरिष्ठ वैज्ञानिक ने धन्यवाद ज्ञापना प्रस्तुत किया ।

हिन्दी कार्यशालाएं

1. गन्ना प्रजनन संस्थान, कोयम्बत्तूर, तमिलनाडू में दिनांक 11.12.2014 को हिन्दी कार्यशाला का आयोजन डॉ. आर. विश्वनाथन, अध्यक्ष, फसल संरक्षण विभाग, की अध्यक्षता में किया गया। कार्यशाला का आरम्भ भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के गीत गायन से किया गया । श्री के.के. हमजा, वरिष्ठ वित्त एवं लेखा अधिकारी एवं नोडल अधिकारी (हिन्दी) ने उपस्थित सभी कार्यालय सदस्यों एवं आमंत्रित अतिथि का स्वागत किया ।

इस कार्यशाला में आमंत्रित अतिथि श्रीमति इन्दिरा अरविन्दन, वरिष्ठ हिन्दी अनुवादक, भारत संचार निगम, कोयम्बतूर ने भाग लेकर भाषण दिया तथा राजभाषा कार्यान्वयन नीति आदि शीर्षक पर व्याख्यान भी दिया । इस कार्यशाला में 34 अधिकारी एवं कर्मचारियों ने भाग लिया । यह कार्यशाला सभी के लिए लाभप्रद रही ।

श्रीमति एस. महेश्वरी,तकनीकी अधिकारी (हिन्दी) ने धन्यवाद प्रस्ताव पेश किया ।

2. संस्थान में दिनांक 01.10.2014 को हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का आरम्भ भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के गीत गायन से किया गया। इस कार्यशाला में आमंत्रित अतिथि श्री गणेशन अनुभागाध्यक्ष, श्री नेहरू आर्टस एवं साईन्स कॉलेज, कोयम्बतूर, निदेशक (हिन्दी), कर्मचारी भविष्य निधि संगठन, कोयम्बत्तूर ने भाग लेकर भाषण दिया तथा नोटिंग एवं ड्राफिटिंग आदि शीर्षक पर व्याख्यान भी दिया। इस कार्यशाला में 36 अधिकारी एवं कर्मचारियों ने भाग लिया।

3. संस्थान में दिनांक 26.06.2014 को हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का आरम्भ भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के गीत गायन से किया गया । श्री के.के. हमजा, वरिष्ठ वित्त एवं लेखा अधिकारी एवं नोडल अधिकारी (हिन्दी) ने उपस्थित सभी कार्यालय सदस्यों एवं आमंत्रित अतिथि का स्वागत किया ।

इस कार्यशाला में आमंत्रित अतिथि श्री कण्णदासन, सहायक निदेशक (हिन्दी), कर्मचारी भविष्य निधि संगठन, कोयम्बत्तूर ने भाग लेकर भाषण दिया तथा नोटिंग एवं ड्राफिटिंग आदि शीर्षक पर व्याख्यान भी दिया । इस कार्यशाला में 33 अधिकारी एवं कर्मचारियों ने भाग लिया।

4. संस्थान में दिनांक 23.12.2013 को हिन्दी कार्यशाला का आयोजन डॉ. प्रेमचन्द्रन, अध्यक्ष, फसल सुधार विभाग, की अध्यक्षता में किया गया। इस कार्यशाला में आमंत्रित अतिथि श्री यू.एन. त्रिपाठी, उप महाप्रबन्धक, एन. टी.सी. कोयम्बत्तूर ने भाग लेकर भाषण दिया तथा प्रशासनिक शब्दों, फाइल में कैसे उपयोग करना आदि शीर्षक पर व्याख्यान भी दिया । इस कार्यशाला में 25 अधिकारी एवं कर्मचारियों ने भाग लिया।

श्रीमति जयनव, हिन्दी टंकक ने धन्यवाद प्रस्ताव पेश किया ।

5. संस्थान में दिनांक 30.09.2013 को हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में आमंत्रित अतिथि श्रीमती अनिता. हरिगणेश, हिन्दी प्राध्यापक, हिन्दी शिक्षण योजना, कोयम्बत्तूर ने भाग लेकर भाषण दिया तथा प्रशासनिक शब्दों, फाइल में कैसे उपयोग करना आदि शीर्षक पर व्याख्यान भी दिया। इस कार्यशाला में 25 अधिकारी एवं कर्मचारियों ने भाग लिया।

श्रीमति जी. आशोकुमार, प्रशासनिक अधिकारी ने धन्यवाद प्रस्ताव पेश किया ।

17. केन्द्रीय कन्द फसल अनुसंधान संस्थान, तिरूवनन्तपुरम

हिन्दी पखवाड़ा

केन्द्रीय कन्द फसल अनुसंधान संस्थान, तिरूवनन्तपुरम, केरल में सितम्बर, 2013 को हिन्दी पखवाड़ा का आयोजन किया गया । इस अवसर पर विभिन्न प्रतियोगिता जैसे निबन्ध लेखन, अनुवाद, कविता पाठ, सुलेख, सिर्फ एक मिनट, अन्ताक्षरी, खुला मंच, बच्चों के लिए कविता पाठ, सुलेख तथा ओपन मोरम आदि का आयोजन किया गया ।

दिनांक 29.11.2013 को डॉ. एस. के. चक्रवर्ती, निदेशक महोदय की अध्यक्षता में पुरस्कार वितरण किया गया। अध्यक्ष भाषण में उन्होंने राजभाषा के महत्व एवं देश के संस्कृति और उन्नति के बारे में बताया ं इस अवसर पर उन्होंने सभी प्रतियोगिताओं के विजेताओं को बधाई दी ओर पुरस्कार प्रदान किये गये। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि विमेन्स कॉलेज तिरूवंतपुरम की सहायक प्रोफेसर (हिन्दी विभाग) डॉ. आर.आई. शंती द्वारा सभी विजेताओं को प्रमाण–पत्र तथा पुरस्कार प्रदान किये गये । डॉ. संतोष मित्र, वरिष्ठ वैज्ञानिक और सम्पर्क अधिकारी (हिन्दी) और श्रीमती टी.के. सुधालता, सदस्य–सचिव (राजभाषा का स) द्वारा धन्यवाद प्रस्ताव के साथ समारोह का समापन हुआ ।

हिन्दी कार्यशालाएं

1. संघ सरकार की राजभाषा नीति के अनुपालन में इस संस्थान के सभी कर्मचारियां के लिए 30.05.2014 को '' हिन्दी टिप्पण ओर आलेखन'' विषय पर एक दिन की हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया । डॉ. एस.के. चक्रवर्ती, निदेशक और अध्यक्ष, राजभाषा, हिन्दी के महत्व पर प्रकाश डालते हुए समारोह का उदघाटन किया । डॉ. बी.एस. संतोष मित्र, वरिष्ठ वैज्ञानिक और सम्पर्क अधिकारी (राजभाषा) ने सभा का स्वागत किया, विशेष रूप से श्री श्री मोहन चौधरी, सहायक निदेशक (राजभाषा) एवं सदस्य सचिव, नराकास, चीफ पोस्ट मास्टर जनरल कार्यालय, तिरूवन्नतपुरम का स्वागत किया और कार्यशाला में अच्छी उपस्थिति पर संतोष प्रकट किया। श्री मोहन चौधरी ने ''हिन्दी टिप्पण और आलेखन'' पर क्लास लिया । कुल 49 प्रतिभागियों ने कार्यशाला में उत्साहपूर्वक भाग लिया ।

2. संघ सरकार की राजभाषा नीति के अनुपालन में इस संस्थान के सभी कर्मचारियां के लिए ''हिन्दी व्याकरण और इसका उपयोग'' विषय पर एक दिन की हिन्दी कार्यशाला का आयोजन दिनांक 27.07.2013 को किया गया। तथा दिनांक 21.12.2013 को '' हिन्दी पत्राचार / शब्दावली'' विषय पर एक दिन की हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया ।

18 भारतीय मसाला फसल अनुसंधान संस्थान, कालिकट, केरल

हिन्दी दिवस एवं हिन्दी पखवाड़ा

संस्थान में दिनांक 14 सितम्बर, 2013 को हिन्दी दिवस तथा 23 सितम्बर, 2013 को हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया। हिन्दी पखवाडे का उदघाटन समारोह डॉ. एम. आनन्दराज, निदेशक की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। डॉ. राशिद परवेज ने सहारोह का संचालन एवं हिन्दी पखवाडे की रूपरेखा प्रस्तुत की तथा सुश्री एन. प्रसन्नकुमारी, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी (हिन्दी अनुवादक) ने धन्यवाद ज्ञापित किया। इस अवसर पर विभिन्न प्रतियोगितायें जैसे हिन्दी प्रश्नोत्तरी, लेखन, अनुशीर्षक लेखन, कविता रचना, पठन एवं लेखन तथा स्मरण शक्ति का आयोजन किया गया ।

हिन्दी पखवाडे का समापन समाराह 05 अक्टूबर, 2013 को आयोजित किया गया। डॉ. राशिद परवेज़ ने समारोह में स्वागत भाषण के अतिरिक्त हिन्दी पखवाड़े की विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत की । डॉ. एम. आनन्दराज, निदेशक ने सभा को सम्बोधित करते हुए हिन्दी के महत्व पर प्रकाश डाला तथा मुख्य अतिथि, डा. जगदीप सक्सेना, प्रभारी, हिन्दी इकाई, आई.सी.ए.आर., नई दिल्ली ने विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार वितरण किया। इस अवसर पर उन्होंने हिन्दी की लोकप्रियता, आवश्यकता तथा विश्व में हिन्दी के स्थान के बारे मं बताया। इस अवसर पर संस्थान की राजभाषा पत्रिका मसालों की महक के द्वितीय अंक का विमोचन किया गया। अन्त में श्रीमती एन. प्रसन्नकुमारी, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी (हिन्दी अनुवादक) ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

हिन्दी कार्यशालाएं

संस्थान के कर्मचारियों एवं अधिकारियों में हिन्दी के प्रति रूचि बढ़ाने के लिए वर्ष 2013–2014 में चार हिन्दी कार्यशालाएं आयोजित की गई। पहली कार्यशाला दिनांक 14 जून, 2013 को आयोजित की गयी। इसमें श्रीमती ए. माया, प्रबन्धक (राजभाषा), विजया बैंक, कोषिक्कोड ने कार्यालय में हिन्दी उच्चरण एवं मसौदा लेखन पर व्याख्यान दिया। इस कार्यशाला में संस्थान के 23 अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया ।

द्वितीय कार्यशाला 25 सितम्बर, 2013 को सम्पन्न हुई। इसमें श्री एम. अरविन्दाक्षन, हिन्दी अनुवादक, कर्मचारी भविष्य निधि कार्यालय, कोषिक्कोड ने हिन्दी टिप्पण एवं मसौदा लेखन पर व्याख्यान दिया । इस कार्यशाला में संस्थान के 27 अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया ।

तीसरी कार्यशाला दिनांक 09 जनवरी, 2014 को आयोजित की गयी जिसमें श्रीमती रजिता, हिन्दी अनुवादक, महाप्रबन्धक (दूरसंचार) कार्यालय, कोषिक्कोड ने कार्यालय में हिन्दी टिप्पण एवं मसौदा लेखन पर व्याख्यान दिया। इस कार्यशाला में संस्थान के 17 अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया ।

चौथी हिन्दी कार्यशाला किन्ही कारणों से दिनांक 21 अप्रैल, 2014 को आयोजित की गयी। इसमें श्रीमती बिन्दु पी. हिन्दी अनुवादक, भारतीय डाक विभाग कोषिक्कोड ने राजभाषा नियम एवं टिप्पण के बारे में व्याख्यान दिया। इस कार्यशाला में संस्थान के 21 अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया ।

निरीक्षण

भारतीय मसाला फसल अनुसंधान संस्थान, कोषिक्कोड में राजभाषा कार्यान्वयन हेतु निरीक्षण 07 नवम्बर, 2013 को श्रीमती पी.जी. शीला, उपनिदेशक (राजभाषा) तथा श्रीमती ई.के. उमा, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी, सीएमएफआरआई, कोच्चि द्वारा किया गया। निरीक्षण के उपरान्त उन्होंने संस्थान में राजभाषा कार्यान्वयन पर संतोष प्रकट किया तथा कुछ सुझाव दिये। उनके सुझावों पर कार्यवाही करके परिषद को अवगत कराया गया ।

प्रकाशन

गत वर्ष निम्नलिखित प्रकाशनां को हिन्दी में प्रकाशित किया गया ।

- मसाला समाचार (तिमाही) के चार अंक
- अनुसंधान के मुख्य अंश (2012–13)
- वार्षिक प्रतिवेदन (भारतीय मसाला फसल अनुसंधान संस्थान)
- वार्षिक प्रतिवेदन (अखिल भारतीय मसाला समन्वित अनुसंधान परियोजना)
- राजभाषा पत्रिका मसालों की महक (द्वितीय अंक)
- अदरक, हल्दी तथा काली मिर्च की विस्तार पत्रिकाएं
- विभिन्न पत्रिकाओं में लोकप्रिय वैज्ञानिकी लेख

पुरस्कार / सम्मान

राजभाषा शील्ड पुरस्कार– 2013

भारतीय मसाला फसल अनुसंधान संस्थान, कालिकट, केरल को वर्ष 2012–13 के लिए राजभाषा कार्यान्वयन हेतु नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति कोषिक्कोड की 24 फरवरी, 2014 को 53वीं बैठक में राजभाषा शील्ड पुरस्कार–2013 से सम्मानित किया। यह पुरस्कार डॉ. टी. जोन ज़करिया, प्रभागाध्यक्ष, फसल उत्पादन एवं फसलोंत्तर प्रभाग तथा डॉ. राशिद परवेज़, वरिष्ठ वैज्ञानिक ने ग्रहण किया।

19. केन्द्रीय द्वीपीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पोर्ट ब्लेयर

हिन्दी पखवाड़ा

हिन्दी पखवाडा के सिलसिले में केन्द्रीय द्वीपीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पोर्ट ब्लेयर द्वारा विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया जिसका विवरण इस प्रकार हैः

केन्द्रीय द्वीपीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पोर्ट ब्लेयर द्वारा 17.09ऋ2013 से 07.09.2013 तक निम्नलिखित प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया :–

- हिन्दी शब्दावली
- निबंधः 'सशक्त हिन्दी–सशक्त भारत'
- पत्र लेखन
- टिप्पणन–आलेखन
- ग्रामीण महिलाओं के लिए भाषण प्रतियोगिता
- प्रश्नोत्तरी
- सर्वोत्तम प्रभाग/अनुभाग/इकाई
- तत्काल भाषण

राजभाषा संगोष्ठी

उदघाटन समारोह के अवसर पर दिनांक 17.09.2013 को संस्थान के सभागार में '' शोध संस्थान में हिन्दी को बढ़ावा'' विषय पर एक दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। मुख्य वक्ता के रूप में कृषि विभाग के सहायक निदेशक (कृषि) डॉ. चंदा श्रीवास्तव, फादर पैट्रिक एलफोंस, निदेशक, सुरभि तथा आकाशवाणी के प्रसारण निष्पादक श्री शिबू जार्ज उपस्थित थे। अतिथि वक्ताओं के अलावा संस्थान के डॉ. एम.एस.कुंडू, वरिष्ठ वैज्ञानिक ने वक्ता के रूप में भाग लिया। संस्थान के निदेशक ने बैठक की अध्यक्षता की । अंत में निदेशक महोदय द्वारा वक्ताओं को स्मृति चिन्ह प्रदान किये गये ।

राजभाषा कार्यान्वयन एवं प्रशिक्षण मिशन, दिल्ली द्वारा पुरस्कारः

दिनांक 14–16 फरवरी, 2013 को पोर्ट ब्लेयर में अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें इन द्वीप समूहों के 50 से अधिक अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया । संस्थान की सहायक निदेशक (राजभाषा) एवं सचिव, नराकास श्रीमती सुलोचना ने संस्थान के कार्यकलापों पर अपना पावर पॉइंट प्रस्तुति दी तथा संस्थान के ही वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी श्री अमित श्रीवास्तव ने कंप्यूटर पर अपने आलेख प्रस्तुत किये। इस अवसर पर दिनांक 16 फरवरी, 2013 को कार्यक्रम के समापन समारोह में हिन्दी के उत्कृष्ट कार्य करने के लिए संस्थान को ट्रॉफी के साथ हिन्दी में प्रकाशित पत्रिका 'कृषिका' के लिए प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, पोर्ट ब्लेयर

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार के अनुसार नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, पोर्ट ब्लेयर का कार्यभार केन्द्रीय द्वीपीय कृषि अनुसंधान संस्थान को सौंपा गया है। संस्थान द्वारा कार्यभार लेने के पश्चात निदेशक महोदय द्वारा नराकास के अध्यक्ष के रूप में कुल 07 अर्धवार्षिक बैठकों की अध्यक्षता की गई । बैठक में पोर्ट ब्लेयर के सभी केन्द्रीय सरकारी कार्यालयों के प्रमुख व अधिकारी गण अपस्थित होते हैं । बैठक में नगर में राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में हो रही प्रगति की समीक्षा की जाती है तथा भविष्य के कार्यक्रमों की रूप रेखा बनाई जाती है।

पुरस्कार

- केन्द्रीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पोर्ट ब्लेयर को राजभाषा संस्थान, वसंत बिहार, नई दिल्ली द्वारा '' कार्यालय जयोति स्मृति चिन्ह पुरस्कार'' से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार दिनांक 8–10 अक्टूबर, 2013 को नैनीताल में आयोजित संगोष्ठी/कार्यशाला में प्रदान किया गया।
- दिनांक 18 मार्च, 2013 को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली द्वारा (2011–2012) संस्थान को ''राजश्री टंडन रा.भा. पुरस्कार'' से (द्वितीय पुरस्कार) सम्मानित किया गया । यह पुरस्कार केन्द्रीय द्वीपीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पोर्ट ब्लेयर के निदेशक डॉ. एस. दाम रॉय ने प्राप्त किया जबकि श्रीमती सुलोचना, सहायक निदेशक (रा.भा.) को प्रमाण पत्र प्रदान किया गया ।
- दिनांक 18 अप्रैल, 2013 को गृह मंत्रालय, भारत सरकार, राजभाषा विभाग, नई दिल्ली द्वारा कोलकाता में आयोजित क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (पूर्व क्षेत्र) के क्षेत्राधिकार के अन्तर्गत ''क'' क्षेत्र में हिन्दी में उत्कृष्ट कार्य के लिए नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, पोर्ट ब्लेयर को तृतीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार केन्द्रीय द्वीपीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पोर्ट ब्लेयर के निदेशक एवं अध्यक्ष, नराकास, डॉ. एस. दाम रॉय ने प्राप्त किया जबकि नराकास के सदस्य सचिव के रूप में श्रीमती सुलोचना, सहायक निदेशक (रा.भा.) को प्रमाण पत्र प्रदान किया गया ।
- दिनांक 07 मार्च, 2013 को गृह मंत्रालय, भारत सरकार, राजभाषा विभाग, नई दिल्ली द्वारा भुवनेश्वर में आयोजित क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (पूर्व क्षेत्र) के क्षेत्राधिकार के अन्तर्गत ''क'' क्षेत्र में हिन्दी में उत्कृष्ट कार्य के लिए नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, पोर्ट ब्लेयर को तृतीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार केन्द्रीय द्वीपीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पोर्ट ब्लेयर के निदेशक एवं अध्यक्ष, नराकास, डॉ. एस. दाम रॉय ने प्राप्त किया जबकि नराकास के सदस्य सचिव के रूप में श्रीमती सुलोचना, सहायक निदेशक (रा.भा.) को प्रमाण पत्र प्रदान किया गया ।

विशेष कार्य

- संस्थान की वार्षिक रिपोर्ट 2012–13 पूर्ण रूप से हिन्दी में तैयार कर प्रकाशन के लिए भेज दिया गया है। यह संस्थान की विशेष उपलब्धियों में से एक है।
- अर्ध वार्षिक पत्रिका ''द्वीपीय कृषि'' का अप्रैल–सितम्बर, 2013 अंक का प्रकाशन का कार्य सम्पन्न हुआ।

20. राष्ट्रीय पशुरोग जानपदिक एवं सूचना विज्ञान संस्थान (भूतपूर्व पीडिएडमास), बंगलुरू

हिन्दी सप्ताह

हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य पर संस्थान में दिनांक 15 से 20 सिंतबर तक हिन्दी सप्ताह का आयोजन किया गया। सप्ताह की शुरूआत 15 सितंबर को हुई। इस अवसार पर संस्थान के सभी वैज्ञानिक, अधिकारी, कर्मचारी एवं विभिन्न परियोजनाओं में कार्यरत शोध छात्र उपस्थित थे। निदेशक महोदय ने हिन्दी प्रोत्साहन के लिए सभी से हिन्दी का ज्यादा से ज्यादा प्रयोग करने की अपील की तथा माननीय कृषि मंत्री, भारत सरकार, श्री राध मोहन सिंह जी और माननीय सचिव, कृषि अनुसंधान और शिक्षा विभाग एवं महानिदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, डा. एस. अय्यपन द्वारा हिन्दी दिवस पर जारी अपील व्याख्या की।

हिन्दी सप्ताह के अंतर्गत सात विभिन्न प्रतियोगिताओं (आशुभाषण, निंबध लेखन, अनुवाद, आवेदन पत्र लेखन, प्रश्नोत्तरी, वाद विवाद और हिन्दी बोध ज्ञान) का आयोजन किया गया । जिसमें संस्थान के सभी लोगों ने बढ़-चढ़ कर सहभागिता की।

सप्ताह के अंतिम दिन समापन समारोह का आयोजन किया गया। बतौर अध्यक्ष निदेशक महोदय ने समारोह के कुशल आयोजन के लिए आयोजन समिति के सदस्यो को बधाई दी। उन्होंने देश की एकता एवं अखंडता में हिन्दी के महत्तव पर प्रकाश डाला। तत्पश्चात विभिन्न प्रतियोगिताओं में विजयी रहे प्रतिभागियों को पुरष्कार एवं प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया। अंत में हिन्दी प्रभारी, डा. ए प्रजापति ने समारोह के कुशल समापन में सभी के कुशल सहयोग के लिए धन्यवाद ज्ञापन दिया।

21 राष्ट्रीय पादप आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो, क्षेत्रीय केन्द्र भवाली, नैनीताल

हिन्दी सप्ताह

रा0 पा0 आ0 सं0 ब्यूरो, क्षेत्रीय केन्द्र भवाली में राजभाषा हिन्दी चेतना मास के उपलक्ष्य में हिन्दी सप्ताह (सितम्बर 01, 2014 से सितम्बर 30, 2014) का आयोजन, हिन्दी में प्रचार प्रसार एवं अधिक से अधिक उपयोग करने हेतु किया गया, जिसमें विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इस केन्द्र में कार्यरत समस्त कर्मचारियों/प्रोजेक्ट स्टाफ/ठेकेदार श्रमिकों से अनुरोध किया जाता है कि विभिन्न प्रतियोगिताओं में अपनी भागीदारी सुनिश्चित कर कार्यक्रम को सफल बनायें। इस कार्यक्रम की शुरूआत सितम्बर 01, 2014 को की गई।

प्रतियोगिताओं का विवरण:

1. **वाक् पाटुता प्रतियोगिता (वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी से नीचे के सभी संस्थागत कर्मचारी): विषय- हमारे संस्थान का उत्तराखण्ड में योगदान।**
2. **वाक् पाटुता प्रतियोगिता (प्रोजेक्ट स्टाफ/श्रमिक वर्ग हेतु): विषय- हमारे संस्थान का उत्तराखण्ड में योगदाना।**
3. **कविता प्रतियोगिता: किसा भी शीर्षक पर (स्वरचित- सभी के लिए)**
4. **श्रुत लेख (कक्षा 10 से ऊपर सभी के लिए)**
5. **श्रुत लेख (कक्षा 5 से कक्षा 10 तक श्रमिक वर्ग हेतु)**
6. **श्रुत लेख (कक्षा 5 क श्रमिक वर्ग हेतु)**
7. **अंग्रेजी- हिन्दी अनुवाद**
8. **हिन्दी - अंग्रेजी अनुवाद**

22 केन्द्रीय पटसन एवं समवर्गीय रेशा अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर, कोलकाता

हिन्दी पख़वाड़ा

सरकारी काम- काज में राजभाष के रूप में हिन्दी के प्रति जागरूकता पैदा करने तथा उसके प्रभावों में गति लोने के उद्देश्य से संस्थान में 15 से 29 सिम्तबर, 2014 के दौरान हिन्दी पखवाड़ा का आयोजन किया गया। जिसका उद्‌घाटन संस्थान के निदेशक, डा.पी.जी. कर्मकार द्वारा किया गया तथा मुख्य अतिथि/ वक्ता के रूप में डा.एन. सिंह, पूर्व प्राचार्, केन्द्रीय विद्यालय संघटन को आमंत्रित किया गया था। उद्‌घाटन समारोह में संस्थान के सभी अधिकारियों/ कर्मचारियों ने उत्पासहपूर्वक भाग लिया। उन्होंने आगे कहा कि हिंदी ही एक ऐसी भाषा है जो सम्पूर्ण राष्ट्र को एक सूत्रमें पिरोने में सफल रही है।

केन्द्रीय पटसन एवं समवर्गीय रेशा अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर कोलकाता में बड़े ही उत्साहपूर्ण वातावरण में आयोजित किये गये हिन्दी पखवाड़े का समापन दिनांक 29 सितम्बर, 2014 को किया गया। इस अवसर पर डा.आर.एस. पाण्डेय, पूर्व वैज्ञानिक अधिकारी एवं विभागीय अध्यक्ष, अनुसंधान विकास एवं प्रशिक्षण प्रभाग, एम.ए.टी.एम.ओ., सी.जी.ओ. कॉम्पलेक्स, साल्ट लेक, कोलकाता मुख्य अतिथि के तौर पर सादर आमंत्रित थे। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता का पदभर संस्थान के निदेशक एवं अध्यक्ष राजभाषा कार्यान्वयन समिति डा. पी. जी. कर्मकार ने संभाला तथा इस अवसर पर डा.एस. सतपथी, प्रभागाध्यक्ष, फसल सुरक्षा डा. दिलीप कुमार कुण्डु, प्रभागाध्यक्ष फसल उत्पादन, डा.एस. मित्रा, प्रभारी, ए.आई.एन.पी. एवं श्री एन.सी. दे, प्रशासनिक अधकारी भी मंचासीन थे। पखवाड़ा के समापन समारोह में हिंदी पत्रिका 'रेशा किरण के प्रथम अंक का विमोचन मुख्य अतिथ, डा.आर.एस. पाण्डेय तथा निदेशक महोदय के कर-कमलों द्वारा सम्पन्न हुआ।

हिन्दी कार्यशाला

1. केन्द्रीय पटसन एवं समवर्गीय रेशा अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर, कोलकाता की राजभाषा कार्यान्वयन समिति के तत्वाधान में दिनांक 23 अगस्त, 2013 को संस्थान के अधिकारियों/कर्मचारियों की हिन्दी में कार्य करने की झिझक दूर करने के उद्देश्य से एक दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला की अध्यक्षता संस्थान के निदेशक डॉ. एस. सत्पथी ने की। डॉ. उमाकान्त दुबे, रजिस्ट्रार, पी.पी.वी.एफ.आर.ए., नई दिल्ली, मुख्य अतिथि ने अपने भाषण में कहा कि हमारे संविधान में हिन्दी को राजभाषा का दर्जा दिया गया है और हम सभी का यह कर्तव्य है कि हिन्दी में काम–काज करने का हर संभव प्रयास करें।

डॉ. डी.के. कुण्डु, प्रभागाध्यक्ष, फसल उत्पादन ने कार्यशाला में सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को हिन्दी में कार्य करने की अपील करते हुए सभी से आग्रह किया कि कार्यशाला से भरपूर लाभ उठाया जाना चाहिए, जिससे कि कार्यालयीन काम–काज में हिन्दी के प्रयोग में सार्थक सुधार हो सके।

इस कार्यशाला मे श्री राम नारायण सरोज, उप–निदेशक(पूर्व) हिन्दी शिक्षण योजना , राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार, कोलकाता ने संघ की राजभाषा नीति, नियम, राजभाषा का महत्व, हिन्दी प्रोत्साहन योजना, राजभाषा अधिनियम/नियम, टिप्पण एवं मसौदा लेखन आदि विषयों पर व्याख्यान दिए तथा अधिकारियों/कर्मचारियों की शंकाओं का समाधान किया।

2. संस्थान की राजभाषा कार्यान्वयन समिति के तत्वाधान में दिनांक 23 जुलाई, 2013 को हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान रखने वाले संस्थान के अधिकारियों/कर्मचारियों की हिन्दी में कार्य करने की झिझक दूर करने के उद्देश्य से एक दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला की अध्यक्षता संस्थान के निदेशक डॉ. पी.जी. कर्मकार ने की। निदेशक महोदय ने अपने अभिभाषण में कहा कि संघ की राजभाषा नीति का मूल उद्देश्य हिन्दी को जनमानस की भाषा के रूप में विकसित करना है ताकि सरकारी गतिविधियों व उपलब्धियों को सामजन तक आसानी से उपलब्ध करायी जा सके। उन्होंने आगे यह भी घोषणा की कि संस्थान द्वारा ''रेशा किरण'' पत्रिका का प्रकाशन जल्द ही किया जायेगा।

इस कार्यशाला में व्याख्यान हेतु श्रीमती पूनम दीक्षित, सहायक निदेशक(राजभाषा), हिन्दी शिक्षण योजना, भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, कोलकाता को आंमत्रित किया गया था। उन्होंने अपने राजभाषा नीति, नियम, राजभाषा का महत्व, हिन्दी प्रोत्साहन योजना, राजभाषा अधिनियम/नियम, टिप्पण एवं मसौदा लेखन आदि विषयों पर विस्तृत जानकारी प्रदान करायी तथा कार्यालयीन कार्यों में हिन्दी में आम तौर पर प्रयोग में आने वले शब्दों के लिंग तथा उनकी पहचान के मूल नियमों की जानकारी देते हुए सोदाहरण समझाया और प्रतिभागियों से अभ्यास भी करवाया। साथ ही उन्होंने प्रतिभागियों द्वारा उठाए गए प्रश्नों का समाधान भी किया। इस कार्यशला में संस्थान के अधिकारियों/कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

डॉ. सुरेन्द्र कुमार पाण्डेय, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रभारी, हिन्दी कक्ष ने कहा कि हिन्दी केवल कागजों की भाषा बनकर न रहे, इसे हमें अपने चिन्तन की भाषा बनाने की आवश्यकता है तभी हिन्दी का प्रसार मनोनुकूल हो सकेगा और इसमें हम सभी को बराबर का सहयोग देना होगा। उन्होंने आगे सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से संस्थान द्वारा प्रकाशित होने वाली पत्रिका ''रेखा किरण'' हेतु सामग्री जैसे कविता, वैज्ञानिक लेख आदि हिन्दी कक्ष को उपलब्ध कराने का अनुरोध भी किया।

डॉ. सुनीति कुमार झा, वरिष्ठ वैज्ञानिक के धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यशाला का समापन हुआ।

सनई अनुसंधान केन्द्र, प्रतापगढ़, उत्तर प्रदेश में हिन्दी सप्ताह

सनई अनुसंधन केन्द्र प्रतापग्रढ़ में हिंदी सप्ताह का आयोजन दिनांक 14 से 20 सितम्बर, 2014 तक किया गया। कार्यक्रम के उदघाटन सत्र में डा. शैलेन्द्र दिवेदी, जिला उद्यान तथा विशिष्ट अतिथि डा. अखिलेश पाण्डेय ने अपने संबोधन में हिंदी भाषा के इतिहास, विकास एवं महत्वता पर प्रकाश डाला।

केंद्र में हिंदी सप्ताह के अंतर्गत विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गयी जिसमें केन्द्र के कर्मचारियों एवं अधिकारियों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता दर्ज करायी कार्यक्रम का समापन 20 सितम्बर, 2014 को हुआ। समापन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में श्री अतुल कुमार, उपजिलाधिकारी, प्रतापगढ़ उपस्थित थे। अतिथियों ने इा अवसर पर हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग पर बल देते हुए वैज्ञानिक समुदाय से आह्यवान किया कि वे अपना शोधकार्य हिंदी में प्रकाशित करें जिससे आम जनमानास उसे समढ सके। हिंदी सप्ताह के समापन समारोह के अवसर पर प्रथम, द्धितीय व तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया।

कार्यक्रम का संचालन, डा. मनोज कुमार त्रिपाठी, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं वैज्ञानिक प्रभारी तथा धन्यवाद प्रस्ताव डा. बबिता चौधरी, वैज्ञानिक द्वारा किया गया।

रेमी अनुसंधान केंद्र, सरभोग, असम में हिंदी सप्ताह

रेमी अनुसंधान केंद्र सरभोग, असम में दिनांक 12 से 17 सितम्बर, 2014 के दौरान हिंदी सप्ताह का आयोजन किया गया जिसका उदघाटन दिनांक 12 सितम्बर, 2014 को हुआ। हिंदी सप्ताह की अध्यक्षता केन्द्र के वैज्ञानिक प्रभारी, डा. अमित कुमार शर्मा ने की। डा. शर्मा ने अपने संबोधन में हिंदी भाषा के माध्यम से देश के विभिन्न प्रदेशों में अपने लिए रोजगार के अवसर पैदा करने तथा राष्ट्र के विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान देने पर जोर दिया।

दिनांक 14 सितम्बर को आयोजित कार्यक्रम में केंद्र के वैज्ञानिक डा.एस.पी गवांडे ने हिन्दीत्तर भाषी विशेष रूप 'ग' क्षेत्र में स्थित असम के लोगों को देश के विकास में हिन्दी के महत्व पर विस्तार से प्रकाश डाला। राज्भषा सप्ताह के अंतिम दिन दिनांक 17 सितम्बर, 2014 को कृषि ज्ञान प्रतियोगिता एवं भाषण प्रतियोगिता भी आयोजित की गयी।

सीसल अनुसंधान केंद्र, बामरा, ओडिशा में हिंदी दिवस

सीसल अनुसंधान केंद्र, बामरा, ओडिशा में दिनांक 15 सितम्बर, 2014 को हिंदी दिवस का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता केंद्र के प्रभारी वैज्ञानिक डा. अजित कुमार झा ने की। डा. झा ने अपने अध्यक्षीय सम्बोधन में केंद्र के समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों को राष्ट्र की एकता एवं समरसता को बनाये रखने में राजभाषा हिंदी के महत्व को विस्तार से समझाया।

23 भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान, कानपुर

हिन्दी दिवस

भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान, कानपुर में दिनांक 26 सितम्बर, 2013 को हिन्दी दिवस समारोह मनाया गया। डॉ. श्रीमती प्रभा दीक्षित, प्राचार्या, श्री स्वामी नागा जी बालिका महाविद्यालय, भरूआ, सुमेरपुर, हमीरपुर समारोह की मुख्य अतिति थीं। समारोह की अध्यक्षता संस्थान के निदेशक डॉ. ना. नडराजन ने की ।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि ने संस्थान की राजभाषा पत्रिका दलहन आलोक–2013 तथा हिन्दी अन्य नये प्रकाशनों यथा संस्थान का वार्षिक प्रतिवेदन, एलीलोरसायन एवं आधुनिक खेती में उनकी उपयोगिता तथा चना फली भेदक कीट का समेकित प्रबंधन का विमोचन किया।

हिन्दी पखवाडे में आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजयी प्रतिभागियों को मुख्य अतिथि द्वारा पुरस्कार प्रदान किये गये। कार्यक्रम के अन्त में डॉ. आई.पी. सिहं, परियोजना समन्वयक (अरहर) ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन डा. श्रीमती उमा साह ने किया।

संस्थान के हिन्दी प्रकाशन (2013–2014)

1. वार्षिक प्रतिवेदन 2012–13
2. दलहन आलोक–राजभाषा पत्रिका
3. दलहन प्रश्नोत्तरी– चना (संशोधित)
4. दलहन प्रश्नोत्तरी –अरहर (संशोधित)
5. दलहन प्रश्नोत्तरी –उर्द (संशोधित)
6. दलहन प्रश्नोत्तरी –मूंग (संशोधित)
7. दलहन प्रश्नोत्तरी –मटर (संशोधित)
8. दलहन प्रश्नोत्तरी –मसूर (संशोधित)
9. संतुलित पोषक तत्व प्रबंधन हेतु मृदा परीक्षण
10. अलीलोरसायन एवं आधुनिक खेती में उनकी उपयोगिता
11. चना फली भेदक कीट का समेकित प्रबंघन
12. चना उत्पादन तकनीक
13. मसूर उत्पादन तकनीक

संस्थान की उपलब्धियॉ

2013–14 में संस्थान द्वारा विकसित दलहनी फसलों की निम्नलिखित प्रजातियॉ देश के विभिन्न सस्य–जनवायु क्षेत्रों के लिये चिन्हित की गयी हैं:–

1. चना : आई.पी.सी. 2004–98, आई.पी.सी. 2004–1 तथा आई.पी.सी. 2005–62
2. मसूर : आई.पी.एल. 526
3. मटर : आई.पी.एफ.डी. 0–12

24 भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ

हिन्दी पखवाड़ा

भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ में दिनांक 14–30 सितम्बर, 2013 को हिन्दी पखवाड़े के रूप में मनाया गया। हिन्दी पखवाड़े का शुभारम्भ दिनांक 16 सितम्बर, 2013 को प्रो. ए.के. सेनगुप्ता, प्रति कुलपति, लखनऊ विश्वविद्यालय के हिन्दी में व्याख्यान के साथ किया गया। इस अवसर पर संस्थान के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया। पखवाड़े के अन्तर्गत निमन आयोजन किए गए। जिसमें इक्षु पत्रिका के विभिन्न प्रभागों के लिए लेखों का मूल्यांकन, संस्थान की किसी तकनीक पर तैयार फोल्डर का मूल्यांकन में उपलब्ध जैव विविधता पर हिन्दी में तैयार पवत्रिका का मूल्यांकन, वर्ष भर में किए गए हिन्दी के कार्य की समीक्षा, हिन्दी की साहित्यक अथवा कृषि विज्ञान पर आधारित किसी हिन्दी पुस्तक की समीक्षा, टिप्पणी, आदेश, गन्ने या राजभाषा हिन्दी पर आधारित किसी विषय पर व्याख्यान, अंत्याक्षरी, यूनिकोड में हिन्दी टंकण, हिन्दी के सामान्य ज्ञान पर आधारित प्रश्नोत्तरी, हिन्दी अनुवाद एवं हिन्दी में कविता, गजल इत्यादि का लेखन एव प्रस्तुति किया गया। विभिन्न प्रतियोगिताओं में संस्थान के कुल 182 प्रतिभागियों ने भाग लिया जिनमें से 116 पुरस्कार वितरित किए गए। दिनांक 27 सितम्बर, 2013 को एक हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें संस्थान के 49 कर्मियों ने भाग लिया । हिन्दी पखवाड़े के समापन समारोह में मुख्य अतिथि श्री विजय भूषण जी (भा.पु.से.) पुलिस अधीक्षक, मानवाधिकार प्रकोष्ठ को आंमत्रित किया गया । हिन्दी पखवाड़े के समापन के दिन पखवाड़े के दौरान हुए कार्यक्रमों के विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए गए।

हिन्दी कार्यशालाएं

- संस्थान में दिनांक 19 जून, 2013 को एक दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमे संस्थान के 50 कार्मिकों ने भाग लिया। इस कार्यशाला में अतिथि वक्ता के रूप में श्री संजय कुमार पाण्डेय, सचिव नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, डॉ. एस.बी. थापा, हिन्दी विभाग लखनऊ विश्वविद्यालय एवं डॉ. प्रतिभा सिंह, उप वन संरक्षण (उन्नाव) एवं उ. प्र. जैव विविधता बोर्ड, लखनऊ थी।
- संस्थान में दिनांक 27 सितम्बर, 2013 को एक दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमे संस्थान के 49 कार्मिकों ने भाग लिया। इस कार्यशाला में अतिथि वक्ता के रूप में श्री संजय कुमार पाण्डेय, सचिव नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, डॉ. रंग नाथ मिश्र 'सत्य' सेवानिवृत एवं इ.आर.के. शुक्ल, परियोजना प्रबन्धंक (रेलवे) थे।
- संस्थान में दिनांक 09 दिसम्बर, 2013 को एक दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमे संस्थान के 50 कार्मिकों ने भाग लिया। इस कार्यशाला में अतिथि वक्ता के रूप में श्री संजय कुमार पाण्डेय, सचिव नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, डॉ. आर.के.दुबे, सहायक वन संरक्षक, उत्तर प्रदेश वन विभाग एवं डॉ. वी.एन. तिवारी, वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी, केन्द्रीय औषधीय अनुसंधान संस्थान थे।

- संस्थान में दिनांक 13 मार्च, 2014 को एक दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमे संस्थान के 50 कार्मिकों ने भाग लिया। इस कार्यशाला में अतिथि वक्ता के रूप में प्रो. एस. डब्ल्यू. अख्तर, कुलपति, इंटिग्रल विश्वविद्यालय; डॉ. वी. एन. तिववारी, वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी, केन्द्रीय औषधीय अनुसंधान संस्थान; एवं प्रो. उषा सिन्हा ऐवा निवृत्त विभागाध्यक्ष, लखनऊ विश्वविद्यालीय थे ।

राजभाषा प्रकोष्ठ की वर्ष 2012–13 की प्रमुख उपलब्धियॉ

- इस संस्थान की राजभाषा पत्रिका 'इक्षु' को गृह पत्रिका पुरस्कार योजना के अन्तर्गत 'क' क्षेत्र के लिए इंदिरा गांधी पुरस्कार 2012–13 का 'द्वितीय' पुरस्कार दिया गया। यह पुरस्कार 14 सितम्बर, 2013 को नई दिल्ली में माननीय राष्ट्रपति द्वारा विज्ञान भवन में प्रदान किया गया।
- नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति लखनऊ (भारत सरकार, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय) द्वारा संस्थान की राजभाषा पत्रिका 'इक्षु' के वर्ष 2 अंक 1 को तृतीय पुरस्कार दिया गया। यह पुरस्कार जुलाई, 2013 लखनऊ में प्रदान किया गया।
- नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति लखनऊ (भारत सरकार, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय) द्वारा संस्थान की राजभाषा पत्रिका 'इक्षु' के वर्ष 2 अंक 2 को द्वितीय पुरस्कार एवं हिन्दी में कार्य करने के लिए संस्थान को तृतीय पुरस्कार दिया गया। यह पुरस्कार लखनऊ में प्रदान किया गया।
- इस संस्थान के क्षेत्रीय केन्द्र, मोतीपुर (बिहार) में नवम्बर, 29–30 नवम्बर, 2013 को एक राष्ट्रीय संगोष्ठी एवं कृषक प्रशिक्षण का आयोजन किया गया । जिसका विषय ''भारत के उपोष्ण जलवायु वाले क्षेत्रों में गन्ना एवं चीनी उद्योग विकास की लिए भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान की पहल'' था। इस संगोष्ठी में 25 लेक्चर हुए एवं उसकी स्मारिका पूर्ण रूपेण हिन्दी में थी। इसमें 200 किसानों में भाग लिया ।
- सभी चार त्रैमासिक कार्यशालाएं समय से आयोजित की गई।
- राजभाषा कार्यान्वयन समिति की सभी चार बैठकें यथा समय हुई।
- संस्थान के कृषि विज्ञान केन्द्र पर पिछले वित्तीय वर्ष में विभिन्न विषयों पर 61 प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया जो पूर्ण रूपेण हिन्दी में था ।
- संस्थान से प्रकाशित छमाही समाचार पत्र 'इक्षु' समाचार द्विभाषी छापी जाती है।
- संस्थान के सभी कार्मिकों को यूनिकोड का प्रारम्भिग प्रशिक्षण दिया गया ।

25 खरपतवार विज्ञान अनुसंधान निदेशालय, जबलपुर

हिन्दी दिवस

दिनांक 16 सितम्बर, 2013 को खरपतवार विज्ञान अनुसंधान निदेशालय, जबलपुर, मध्य प्रदेश के सभागार में हिन्दी दिवस समारोह का आयोजन किया गया। जिसमें कार्यालय के समस्त अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया।

इस कार्यक्रम का उद्घाटन अध्यक्ष डॉ. अजीत शर्मा निदेशक, ख.वि.अनु.नि. एवं मुख्य अतिथि डॉ. अरूण कुमार प्राचार्य, गोविन्दराम सेकसरिया अर्थ–वाणिज्य माहाविद्यालय द्वारा सरस्वति पूजन एवं दीप प्रज्जवलित कर किया गया। इसके पश्चात निदेशालय के निदेशक महोदय ने सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को हिन्दी दिवस की बधाई एवं शुभकामनाएं दी।

दिनांक 16 सितम्बर, 2013 को प्रारम्भ हुए हिन्दी पखवाडे का समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह दिनांक 30 सितम्बर, 2013 को निदेशालय के सभागार में आयोजित किया गया। जिसमें कार्यलय के समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया। हिन्दी पखवाड़े के दौरान निदेशालय द्वारा विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिनका विवरण निम्न प्रकार है :–

1. दिनांक 17 सितम्बर, 2013 को शुद्ध लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया ।
2. दिनांक 18 सितम्बर, 2013 को पत्र लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया ।
3. दिनांक 19 सितम्बर, 2013 को आलेखन एवं टिप्पण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया ।
4. कृषि से संबंधित वर्ष 2012 में लेख लिखने हेतु विशेष पुरस्कार प्रदान किये गये ।
5. वाहन आगमन एवं प्रस्थान का विवरण हिन्दी में लिखने हेतु प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किये गये ।
6. वर्ष भर हिन्दी में सर्वाधिक कार्य करने वाले अनुभाग को चलित शील्ड प्रदान की गई ।

26 राष्ट्रीय कृषि वानिकी अनुसंधान केन्द्र, झांसी

हिन्दी सप्ताह

राष्ट्रीय कृषि वानिकी अनुसंधान केन्द्र, झांसी, उत्तर प्रदेश में दिनांक 13 सितम्बर, 2013 को केन्द्र के निदेशक डॉ. एस.के. ध्यानी की अध्यक्षता में हिन्दी सप्ताह का शुभारम्भ किया गया । कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. शंकर शरण तिवारी, पूर्व विभागाध्यक्ष (हिन्दी), नेहरू महाविद्यालय, ललितपुर थे। हिन्दी सप्ताह के उद्घाटन सत्र के उपरान्त एक हिन्दी कार्यशाला का भी आयोजन किया गया जिसका शीर्षक '' हिन्दी भाषा का उद्भव, विकास एवं विशेषताएं'' था।

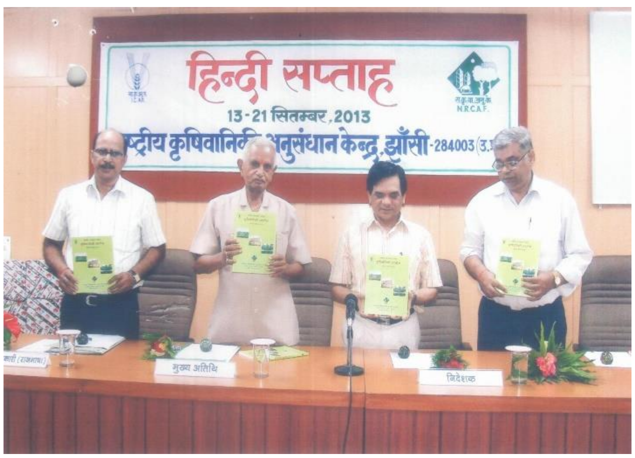

कार्यशाला के मुख्य वक्ता डॉ. तिवारी ने प्राचीनभाषाओं संस्कृत, प्राकृत तथा पाली की चर्चा करते हुए हिन्दी भाषा के उद्भव पर प्रकाश डाला। हिन्दी की विकास यात्रा की चर्चा करते हुए उन्होंने क्षेत्रीय और प्रान्तीय भाषाओं की चर्चा की । शोध लेखन में हिन्दी के प्रयोग की चर्चा करते हुए उन्होंने तकनीकी शब्दों के सरल रूप में प्रयोग करने की वैज्ञानिकों से अपील की । हिन्दी में अनेक समानार्थी शब्द मौजूद हैं । अतः शोध लेखन में प्रचलित शब्द का प्रयोग कर लेखन को सरल बनाया जा सकता है।

दिनांक 16 सितम्बर, 2013 को वाद–विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसका शीर्षक '' जलवाचु परिवर्तन एवं कृषि वानिकी'' पक्ष एवं विपक्ष था।

दिनांक 17 सितम्बर, 2013 को निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसका शीर्षक '' देश की अर्थ–व्यवस्था में कृषि का योगदान'' था।

दिनांक 18 सितम्बर, 2013 को सुलेख, इमला तथा अनुवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें केन्द्र के सभी श्रेणियों के कर्मचारियों ने भाग लिया।

दिनांक 19 सितम्बर, 2013 को कुशल सहायक कर्मचारियों के लिए इमला एवं अवकाश प्रार्थना पत्र लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसके उपरान्त अहिन्दीभाषी क्षेत्र के कार्मिकों के लिए पत्र लेखन/प्राथना पत्र प्रतियोगिता का आयोजन किया गया ।

दिनांक 20 सितम्बर, 2013 को एक वर्ष (अक्टूबर–12 से सितम्बर–13) के दौरान प्रशासनिक वर्ग को हिन्दी में अधिक से अधिक कार्य करने के लिए पुरस्कार प्रदान किया गया।

हिन्दी सप्ताह के अन्तर्गत प्रतिदिन आयोजित प्रतियोगिताओं में निर्णायक मण्डल द्वारा प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किये गये।

हिन्दी कार्यशालाएं

1. राष्ट्रीय कृषि वानिकी अनुसंधान केन्द्र, झांसी, उत्तर प्रदेश में दिसम्बर, 2013 को समाप्त तिमाही कार्यशाला दिनांक 30–12–2013 को केन्द्र के निदेशक डॉ. एस.के. ध्यानी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। कार्यशाला के मुख्य वक्ता श्री श्याम बाबू शर्मा, सहायक वित्त एवं लेखाधिकारी थे। उन्होंने अपना व्याख्यान '' वित्तीय प्रबन्धन एवं लेखा पद्धति'' विषय पर दिया ।

2. राष्ट्रीय कृषि वानिकी अनुसंधान केन्द्र, झांसी, उत्तर प्रदेश में दिनांक 30–12–2013 को केन्द्र के निदेशक डॉ. एस.के. ध्यानी की अध्यक्षता में ''महिला सशक्तिकरण के अन्तर्गत कार्यक्षेत्र में महिलाओं के साथ व्यवहार एवं राजभाषा क्रियान्वयन में महिलाओं का योगदान'' विषय पर हिन्दी कार्यशाला सम्पन्न हुई। कार्यशाला के मुख्य वक्ता केन्द्र की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. श्रीमती एस. बिमला देवी थीं।

3. राष्ट्रीय कृषि वानिकी अनुसंधान केन्द्र, झांसी, उत्तर प्रदेश में दिसम्बर, 2013 को समाप्त तिमाही कार्यशाला दिनांक 29–03–2014 को केन्द्र के निदेशक डॉ. एस.के. ध्यानी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। कार्यशाला के मुख्य वक्ता श्री आर.के. तिवारी, प्रधान वैज्ञानिक एवं कार्यक्रम प्रमुख मानव संसाधन विकास, राष्ट्रीय कृषिवानिकी थे। उन्होंने अपना व्याख्यान ''परिणाम फ्रेमवर्क दस्तावेज की उपयोगिता'' विषय पर दिया।

4. राष्ट्रीय कृषि वानिकी अनुसंधान केन्द्र, झांसी में सितंबर, 2014 को समाप्त तिमाही कार्यशाला दिनांक 20. 09.2014 को केन्द्र निदेशक डॉ. एस. के. ध्यानी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। कार्यशाला के मुख्य वक्ता डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, प्रधान वैज्ञानिक (मृदा विज्ञान), राष्ट्रीय कृषिवानिकी अनुसंधान केन्द्र, झांसी थे। उन्होने अपना व्याख्यान ''मृदा स्वास्थ्य'' पर दिया।

27 राष्ट्रीय मृदा सर्वेक्षण एवं भूमि उपयोग नियोजन ब्यूरो, क्षेत्रीय केन्द्र, नई दिल्ली

हिन्दी कार्यशालाएं

राष्ट्रीय मृदा सर्वेक्षण एवं भूमि उपयोग नियोजन ब्यूरो, क्षेत्रीय केन्द्र, नई दिल्ली के प्रांगण में एक द्विवसीय (दिनांक 15 मई, 2013) को इस वर्ष की द्वितीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। राष्ट्रीय मृदा सर्वेक्षण एवं भूमि उपयोग नियोजन ब्यूरो, के क्षेत्रीय केन्द्र, नई दिल्ली में आयोजित इस कार्यशाला में व्याख्यान देने हेतु श्रीमती सीमा चौपड़ा, उप निदेशक (राजभाषा), भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान , पूसा, नई दिल्ली को सादर आमंत्रित किया गया । उन्होंने ''हिन्दी में तकनीकी लेखन की संभावनाएं'' विषय पर व्याख्यान दिया।

राष्ट्रीय मृदा सर्वेक्षण एवं भूमि उपयोग नियोजन ब्यूरो, क्षेत्रीय केन्द्र, नई दिल्ली के प्रांगण में एक द्विवसीय (दिनांक 02 अगस्त, 2013) को इस वर्ष की द्वितीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। राष्ट्रीय मृदा सर्वेक्षण एवं भूमि उपयोग नियोजन ब्यूरो, के क्षेत्रीय केन्द्र, नई दिल्ली में आयोजित इस कार्यशाला में व्याख्यान देने हेतु श्रीमती सीमा चौपड़ा, उप निदेशक (राजभाषा), भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान , पूसा, नई दिल्ली को सादर आमंत्रित किया गया । उन्होंने ''हिन्दी विज्ञान लेखन में कंप्यूटर का प्रयोग'' विषय पर व्याख्यान दिया।

राष्ट्रीय मृदा सर्वेक्षण एवं भूमि उपयोग नियोजन ब्यूरो, क्षेत्रीय केन्द्र, नई दिल्ली के प्रांगण में एक द्विवसीय (दिनांक 07 अगस्त, 2013) को इस वर्ष की तृतीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। राष्ट्रीय मृदा सर्वेक्षण एवं भूमि उपयोग नियोजन ब्यूरो, के क्षेत्रीय केन्द्र, नई दिल्ली में आयोजित इस कार्यशाला में व्याख्यान देने हेतु डॉ. हरि सिंह पाल, कार्यक्रम अधिशासी, केन्द्र हिन्दी रूपक एकांश, प्रसारण भवन, अकाशवाणी, संसद मार्ग, नई दिल्ली को सादर आमंत्रित किया गया। उन्होंने '' राजभाषा नीति '' विषय पर व्याख्यान दिया।

राष्ट्रीय मृदा सर्वेक्षण एवं भूमि उपयोग नियोजन ब्यूरो, क्षेत्रीय केन्द्र, नई दिल्ली के प्रांगण में एक द्विवसीय (दिनांक 06 नवम्बर, 2013) को इस वर्ष की चतुर्थ हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। राष्ट्रीय मृदा सर्वेक्षण एवं भूमि उपयोग नियोजन ब्यूरो, के क्षेत्रीय केन्द्र, नई दिल्ली में आयोजित इस कार्यशाला में व्याख्यान देने हेतु श्री मनोज कुमार, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी, हिन्दी विभाग, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली को सादर आमंत्रित किया गया । उन्होंने ''राजभाषा नियम अधिनियम की जानकारी एवं उनका कार्यान्वयन'' विषय पर व्याख्यान दिया।

वर्ष 2014 में आयोजित हिन्दी कार्यशालाएं

नई दिल्ली, भारतीय कृषि अनुसंधान प्रांगण में स्थित राष्ट्रीय मृदा सर्वेक्षण एवं भूमि उपयोग नियोजन ब्यूरो, क्षेत्रीय केन्द्र दिल्ली में बड़े ही उत्साहपूर्ण वातावरण में एक दिवसीय (दिनांक 04 दिसम्बर, 2014) हिन्दी कार्यशाला का सफल आयोजन का सफल आयोजन किया गया।

नई दिल्ली, भारतीय कृषि अनुसंधान प्रांगण में स्थित राष्ट्रीय मृदा सर्वेक्षण एवं भूमि उपयोग नियोजन ब्यूरो, क्षेत्रीय केन्द्र दिल्ली में बड़े ही उत्साहपूर्ण वातावरण में एक दिवसीय (दिनांक 05 दिसम्बर, 2014)

28 काजू अनुसंधान निदेशालय, पुत्तूर, कर्नाटक

हिन्दी कार्यशालाएं

काजू अनुसंधान निदेशालय, पुत्तूर, कर्नाटक में दिनांक 16 दिसम्बर, 2013 को हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। यह कार्यशाला विशेष रूप से निदेशालय के प्रशासनिक, तकनीकी एवं वैज्ञानिक कर्मचारियों के लिए आयोजित की गई थी। कर्मचारियों को दैनिक कामकाज में हिन्दी का प्रयोग करने के बारे में सिखाना और अभ्यास करवाना कार्यशाला का मुख्य उद्‌देश्य था। काजू अनुसंधान निदेशालय और पुत्तूर नराकाास के सदस्य कार्यालयों के 18 कर्मचारियों ने कार्यशाला में भाग लिया।

काजू अनुसंधान निदेशालय, पुत्तूर, कर्नाटक में दिनांक 29 जनवरी, 2014 को हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। यह कार्यशाला विशेष रूप से निदेशालय के प्रशासनिक, तकनीकी एवं वैज्ञानिक कर्मचारियों के लिए आयोजित की गई थी। कर्मचारियों को दैनिक कामकाज में हिन्दी का प्रयोग करने के बारे में सिखाना और अभ्यास करवाना कार्यशाला का मुख्य उद्‌देश्य था। काजू अनुसंधान निदेशालय और पुत्तूर नराकास के सदस्य कार्यालयों के 50 कर्मचारियों ने कार्यशाला में भाग लिया।

काजू अनुसंधान निदेशालय, पुत्तूर, कर्नाटक में दिनांक 07 जून, 2013 को हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। यह कार्यशाला विशेष रूप निदेशालय के प्रशासनिक, तकनीकी एवं वैज्ञानिक कर्मचारियों के लिए आयोजित की गई थी। कर्मचारियों को दैनिक कामकाज में हिन्दी का प्रयोग करने के बारे में सिखाना और अभ्याए करवाना कार्यशाला का मुख्य उद्‌देश्य था। काजू अनुसंधान निदेशालय और पुत्तूर नराकाास के सदस्य कार्यालयों के 22 कर्मचारियों ने कार्यशाला में भाग लिया।

काजू अनुसंधान निदेशालय, पुत्तूर, कर्नाटक में दिनांक 30 जूलाई, 2013 को हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। यह कार्यशाला विशेष रूप से निदेशालय के प्रशासनिक, तकनीकी एवं वैज्ञानिक कर्मचारियों के लिए आयोजित की गई थी। कर्मचारियों को दैनिक कामकाज में हिन्दी का प्रयोग करने के बारे में सिखाना और अभ्यास करवाना कार्यशाला का मुख्य उद्‌देश्य था। काजू अनुसंधान निदेशालय और पुत्तूर नराकाास के सदस्य कार्यालयों के 50 कर्मचारियों ने कार्यशाला में भाग लिया।

कार्यशाला का उद्‌घाटन प्रो. पी.एल. सरोज, निदेशक, काजू अनुसंधान निदेशालय, पुत्तूर, कर्नाटक ने किया। उन्होंने अपने भाषण में राजभाषा हिन्दी के प्रमुख्यता और उसे सीखने की जरूरत के बारे में अवगत किया। कार्यशाला में श्री हरिश्चन्द्र पंडित, सहायक निदेशक, राजभाषा, यूनियन बैंक आफ इंडिया, मंगलोर मुख्य अतिथि वक्ता थे। पहले सत्र में उन्होंने राजभाषा इतिहास, महत्व और उसकी वर्तमान स्थिति के बारे में बताया। दूसरे सत्र में उन्होंने नोटिंग और मसौदा तैयार करने के बारे में सिखाया। तीसरे सत्र में हिन्दी व्याकरण के बारे में बताया तथा कंप्यूटर पर यूनिकोड की सहायता से काम करने के बारे में सिखाया । सभी कर्मचारियों ने इस कार्यशाला का समुचित लाभ उठाया।

काजू अनुसंधान निदेशालय, पुत्तूर, कर्नाटक में दिनांक 28 नवम्बर, 2014 को हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। यह कार्यशाला विशेष रूप से निदेशालय के प्रशासनिक एवं तकनीकी कर्मचारियों के लिए आयोजित की गई थी। कर्मचारियों को दैनिक कामकाज में हिन्दी का प्रयोग करने के बारे में सिखाना और अभ्यास करवाना कार्यशाला का मुख्य उद्‌देश्य था। काजू अनुसंधान निदेशालय और पुत्तूर नराकाास के सदस्य कार्यालयों के 48 कर्मचारियों ने कार्यशाला में भाग लिया।

सबसे पहले, पकाश जी भट्, तकनीकी अधिकारी एवं प्रभारी, हिन्दी समिति ने दैनंदिन कार्यालयीन कार्य में हिन्दी के उपयोग के बारे में अवगत कराया। उन्होंने कर्मचारियों को अपना–अपना पदनाम लिखना, छुट्‌टी के लिए आवेदन पत्र तैयार करना, दौरा रजिस्ट्र में सूचना दर्ज करना, पेशगी रजिस्टर में अग्रदय के लिए प्रस्तुती देने के बारे में विचार प्रस्तुत किया। कर्मचारियों ने इनका अभ्यास भी किया।

कार्यशाला में कंप्यूटर पर 'पावर प्वाइंट प्रस्तुति' की सहायता से विचारों को प्रस्तुत किया गया। अंत में कर्मचारियों को राजभाषा विभाग की 'वेबसाइट' (rajbhasha.nic.in) और उसका उपयोग करने के तरीके के बारे में जानकारी दी गई।

29 राष्ट्रीय अंगूर अनुसंधान केन्द्र, पुणे, महाराष्ट्र

हिन्दी पखवाड़ा

राष्ट्रीय अंगूर अनुसंधान केन्द्र, पुणे, महाराष्ट्र में दिनांक 16 सितम्बर से 30 सितम्बर, 2013 तक हिन्दी पखवाड़ा का आयोजन किया गया। निदेशक द्वारा हिन्दी पखवाड़ा का उद्घाटन दिनांक 16 सितम्बर, 2013 को किया गया। उन्होंने कहा कि अधिकारी तथा कर्मचारी अपना अधिक से अधिक कार्यालयीन कामकाज राजभाषा में करें तथा हिन्दी भाषा के विकास और उसमें रूचि लेने पर भाषण दिया। साथ ही साथ हिन्दी भाषा के प्रयोग को बढ़ाने का आह्वान किया। हिन्दी पखवाड़ा के दौरान कविता पाठ, व्याकरण, पत्रलेखन, प्रश्नमंच, निबन्ध लेखन, हिन्दी टंकण, लघुनाटक आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन भी किया गया।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में साहित्यकार श्री संजय भारद्वाज को आंमत्रित किया गया। मुख्य अतिथि द्वारा प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कारों का वितरण किया गया। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद ने सन 2011–12 के वार्षिक प्रतिवेदन को उत्कृष्ट प्रतिवेदन के रूप में सम्मानित किया गया इसकी जानकारी कर्मचारियों को दी गई । निदेशक महोदय ने वित्त एवं लेखा अनुभाग द्वारा हिन्दी में किये जा रहे कार्य की सराहना की गई। उन्होंने कहा कि अन्य अनुभागों को भी अपना अधिक से अधिक कार्य हिन्दी में करना चाहिए। मुख्य अतिथि ने कार्यालयीन कामकाज में हिन्दी भाषा की कठिनाइयों पर सुझाव तथा दैनिक कामकाज में राजभाषा के प्रयोग का अनुरोध किया। हिन्दी में काम करने के आसान तरीकों से अवगत कराया।

मुख्य अतिथि के भाषण के बाद डॉ. ए.के. शर्मा, हिन्दी अधिकारी एवं वरिष्ट वैज्ञानिकों ने सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के प्रति धन्यवाद ज्ञापन करने से साथ ही हार्दिक आभार भी व्यक्त किया।

30 केन्द्रीय मात्स्यिकी शिक्षा संस्थान, मुम्बई

केन्द्रीय मात्स्यिकी शिक्षा संस्थान, मुम्बई, महाराष्ट्र के कोलकाता केन्द्र में दिनांक 5–6 जनवरी, 2013 को भारत के पूर्वी एवं पूर्वोत्तर राज्यों में प्रौद्योगिकी के माध्यम से नीली क्रान्ति विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की गई। इस संगोष्ठी का उद्घाटन डॉ. एस. अय्यप्पन, महानिदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के द्वारा किया गया। इस संगोष्ठी में भारत के विभिन्न राज्यों से लगभग 150 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस राष्ट्रीय संगोष्ठी का प्रतिवेदन एवं संस्तुतियां फरवरी, 2013 को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद , सम्बन्धित राज्यों के मत्स्य निदेशक, मत्स्य सचिव एवं समस्त मात्स्यिकी विद्यालयों और संगोष्ठी में भाग लेने वाले सभी वैज्ञानिक अधिकारियों को उपलब्ध करायी गई।

31 औषधीय एवं संगधीय पादप अनुसंधान निदेशालय, बोरीआवी, आनन्द

हिन्दी कार्यशाला

औषधीय एवं संगधीय पादप अनुसंधान निदेशालय, बोरीआवी, आणंद, गुजरात ''राजभाषा हिन्दी के प्रचार–प्रसार में राजभाषा नियम/अधिनियम की भूमिका'' विषय पर 27 नवम्बर, 2013 को हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया था। जिसमें हमारे निदेशालय सहित भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के गुजरात स्थित 5 अन्य संस्थानों, क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, केन्द्रीय मृदा एवं जन संरक्षण अनुंसधान संस्थान, वासद (CSWCRTI) , क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान (CSSRI) , भरूच, केन्द्रीय बागवानी परीक्षण केन्द्र (CHES), गोधरा, क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, केन्द्रीय मीठाजल जीव पालन संस्थान(CIFA), आनन्द, क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, केन्द्रीय अंतः स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (CIFIRI), बड़ौदा के लगभग 70 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इस कार्यशाला में डॉ. मेहन्द्र कुमार साहू, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी (राजभाषा), राष्ट्रीय मृदा सर्वेक्षण एवं भूमि उपयोग नियोजन ब्यूरो (NBSS&LUP), नागपुर प्रमुख वक्ता थे।

इस कार्यशाला में के प्रथम सत्र में डॉ. मेहन्द्र कुमार साहू, ने राजभाषा हिन्दी के प्रचार–प्रसार में राजभाषा नियम/अधिनियम की भूमिका पर सभी को सम्बोधित किया। हिन्दी की महत्वपूर्ण भूमिका बताते हुए उन्होंने कहा कि राजभाषा हिन्दी हमारी संस्कृति एवं देश से जुड़ी है।

कार्यशाला के द्वितीय सत्र के आरम्भ में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के अन्तर्गत गुजरात प्रान्त से आए अन्य संस्थान के प्रतिभागियों ने अपने संस्थान में चल रहे हिन्दी उत्प्रेरक कार्यों के बारे में जानकारी दी।

श्री इन्दीवर प्रसार, वैज्ञानिक (CSSRI) भरूच ने अपने वक्तव्य में वैज्ञानिक क्षेत्र में हिन्दी को बढ़ावा देने के लिए शोधपत्र, वार्षिक प्रतिवेदन, कार्यालयीन टिप्पणी, लेखन सामग्री आदि को हिन्दी में प्रकाशित करने का सुझाव दिया और अपने संस्थान में हो रहे हिन्दी के उपयोग पर रोशनी डाली।

श्री एम.ए. मकवाना, हिन्दी अधिकारी (CHES) गोधरा ने अपने वक्तव्य में हिन्दी के नियम/अधिनियम की विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने हिन्दी का बढ़ावा देने के लिए कार्यालयीन पत्र, प्रतिवेदन कार्यालयीन सभी लेखन सामग्री, विभाग क नाम पता आदि हिन्दी में लिखे जाने हेतु आग्रह किया।

डॉ. गोपाल कुमार, वैज्ञानिक, (CSWCRTI) वासद ने अपने वक्तव्य में शोध निचोड़ राजभाषा में प्रकाशित करने का आग्रह किया जिससे लोगों तक पहुंच सके। उन्होंने हिन्दी के प्रकाशन को बढ़ावा देने के लिए सरल हिन्दी का इस्तेमाल करने की जानकारी दी ।

डॉ. चन्द्रकान्त मिश्रा, वरिष्ठ वैज्ञानिक (CIFA) आनन्द एवं श्री जे.के. सोलंकी, तकनीकी सहायक (CIFIRI), बडौदा ने अपने संस्थान में हो रही गतिविधियों और हिन्दी में प्रकाशित पुस्तिकाओं की जानकारी दी।

कार्यशाला के अन्त में निदेशालय के वैज्ञानिक डॉ. जी.आर. स्मिता ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया।

32 भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, इज्जतनगर

हिन्दी चेतना मास

दिनांक 14 सितम्बर, हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य में राजभाषा हिन्दी को बढ़ावा देने एवं वैज्ञानिकों अधिकारियों, कर्मचारियों और छात्रों में हिन्दी के प्रति अभिरूचि जागृत करने के प्रयोजन से माह सितम्बर, 2013 में दिनांक 2 सितम्बर, 2013 से 28 सितम्बर, 2013 की अवधि में हिन्दी चेतना मास मनाया गया। चेतना मास के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताएं जैसे हिन्दी निबंध, हिन्दी अनुवाद, वाद–विवाद, प्रश्न मंच आदि प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। हिन्दी मास के दौरान दिनांक 26.09.2013 को एक अखिल भारतीय कवि सम्मेलन का आयोजन भी किया गया जिसमें देश के विभिन्न स्थानों से प्रतिष्ठित कवियों ने भाग लिया जिसमें शब्दावली परिचय प्रतियोगिता भी आयोजित की गई। विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार तथा प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर हिन्दी में उत्कृष्ट कार्य करने वाले 4 विभागों/ अनुभागों को वैजयन्ती (शील्ड) प्रदान की गई। इस अवसर पर हिन्दी डिक्टेशन प्रोत्साहन योजना एवं सरकारी कार्य मूलरूप से हिन्दी में करने सम्बन्धी प्रोत्साहन योजना में भाग लेने वाले अधिकारियों एवं कर्मचारियों को प्रमाण पत्र एवं पुरस्कार राशि प्रदान की गई । समापन समारोह में पधारे मुख्य अतिथि, विशिष्ट अतिथि एवं संस्थान के निदेशक महोदय ने आग्रह किया कि राजभाषा हिन्दी मात्र भाषा ही नहीं अपितु हमारी संस्कृति, कला, सांस्कृतिक विरासत एवं राष्ट्रीय अस्मिता की भी वाहक है। अतः हमें हिन्दी को गर्व एवं स्वाभिमान के साथ अंगीकार करें । यह संसार की समृद्ध भाषा है और वैज्ञानिक दृष्टि से भी खरी उतरती है। हिन्दी चेतना मास के सफल आयोजन में समग्र स्टॉफ का बहुत ही सकारात्मक सहयोग प्राप्त हुआ।

33. राष्ट्रीय पशु आनुवांशिक संसाधन ब्यूरो, करनाल

हिन्दी चेतना मास

राष्ट्रीय पशु आनुवांशिक संसाधन ब्यूरो, करनाल, हरियाणा में पिछले वर्ष की भांति इस वर्ष भी सितम्बर, 2013 को हिन्दी चतना मास के रूप में मनाया गया। स्टाफ सदस्यों में राजभाषा हिन्दी के प्रति राचकता एवं जागरूकता बढाने के लिये संस्थान में निम्नलिखित प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया :–

1. दिनांक 03.09.2013 को पूर्वान्ह 11.00 बजे टिप्पणी मसौदा लेखन प्रतियोगिता करवाई गयी। इस प्रतियोगिता मे कुल 8 प्रतिभागियों ने भाग लिया।
2. दिनांक 04.09.2013 को पूर्वान्ह 11.00 बजे शब्दार्थ व अनुवाद प्रतियोगिता करवाई गयी। इस प्रतियोगिता मे कुल 10 प्रतिभागियों ने भाग लिया।
3. दिनांक 06.09.2013 को पूर्वान्ह 11.00 बजे आशु भाषण प्रतियोगिता करवाई गयी। इस प्रतियोगिता मे कुल 13 प्रतिभागियों ने भाग लिया।
4. दिनांक 07.09.2013 को ब्यूरो कर्मियों द्वारा अप्रैल, 2013 से मार्च, 2013 तक किये गये हिन्दी कार्यो का मूल्यांकन किया गया जिसमें कुल 5 प्रतिभागियों ने भाग लिया।
5. दिनांक 10.09.2013 को निबंध लेखन प्रतियोगिता करवाई गयी। इस प्रतियोगिता मे कुल 10 प्रतिभागियों ने भाग लिया। ।
6. दिनांक 11.09.2013 को पत्र लेखन प्रतियोगिता करवाई गयी। इस प्रतियोगिता मे कुल 8 प्रतिभागियों ने भाग लिया।
7. दिनांक 17.09.2013 को ब्यूरो वैज्ञानिकों के लिये पिछले 5 वर्षो के दौरान किये गये ''शोध कार्यो पर आधारित एक शोध लेख प्रस्तुतीकरण प्रतियोगिता करवाई गयी। इस प्रतियोगिता मे कुल 05 प्रतिभागियों ने भाग लिया।
8. दिनांक 26.09.2013 को ब्यूरों वैज्ञानिकों, तकनीकी वर्ग, आर.ए., एस.आर.एफ. के लिए एक शोध पोस्टर प्रतियोगिता करवाई गयी।
9. दिनांक 21.09.2013 को ब्यूरो के स्थापना दिवस के शुभ अवसर पर ब्यूरों की वार्षिक हिन्दी पत्रिका ''पशुधन प्रकाश'' के चतुर्थ अंक वर्ष 2013 का विमोचन किया गया।
10. दिनांक 26.09.2013 को समापन समारोह व पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि डॉ. जी.आर. पाटिल, संयुक्त निदेशक, राष्ट्रीय डेयरी अनुसंधान संस्थान, करनाल रहे। समारोह की अध्यक्षता संस्थान के निदेशक डा. बी.के. जोशी ने की। इस अवसर पर सभी प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार वितरित किये गये। इसके साथ–साथ पशुधन प्रकाश के तृतीय अंक वर्ष 2012 के तीन श्रेष्ठ शोध लेखों को पुरस्कृत भी किया गया। इसके साथ ही ब्यूरों में हिन्दी चेतना मास सितम्बर, 2013 को समापन हुआ।

34 उत्तर पूर्वी पर्वतीय क्षेत्र अनुसंधान परिसर, मणीपुर केन्द्र

हिन्दी सप्ताह

उत्तर पूर्वी पवर्तीय क्षेत्र कृषि अनंसधान परिसर, उमरोई रोड, उमियाम, मेघालय के तत्वाधान में दिनांक 16.09.2013 से 23.09.2013 तक हिन्दी सप्ताह का आयोजिन किया गया। 16 सितम्बर, 2013 को हिन्दी सप्ताह का शुभारम्भ संस्थान के प्रभारी निदेशक डॉ. एन. एस. आजाद ठाकुर की अध्यक्षता में दीप प्रज्जवलन के साथ किया गया।

दिनांक 16.09.2013 को एकल गान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें तीनों वर्गो अर्थात हिन्दी, अहिन्दी तथा पूर्वोत्तर क्षेत्रवासी वर्ग के प्रतिभागियों ने भाग लिया।

दिनांक 18.09.2013 को निबंध, पाठन, श्रुतिलेखन, तात्कालिक वाक् प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

दिनांक 21.09.2013 को नोटिंग, ड्राफटिंग प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसमें तीनों वर्गों के प्रतिभागियों ने भाग लिया।

दिनांक 21.09.2013 को अन्ताक्षरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में तीनों वर्गो के 7 समूहों ने भाग लिया।

दिनांक 24.09.2013 को क्विज प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसमें तीनों वर्गों को मिलाकर समूह बनाया गया तथा मौखिक प्रश्न पूछे गये।

दिनांक 24.09.2013 को समापन समारोह का आयोजन किया गया। संस्थान के प्रभारी निदेशक, डॉ. एन. एस. आजाद ठाकुर ने अपने सम्बोधन में प्रतियोगिताओं के विजेताओं को बधाई देते हुए कहा कि आप सभी लोगों ने प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप से इन कार्यक्रमों में सम्मिलित होकर हिन्दी राजभाषा के प्रति अपना प्रेम प्रदर्शित किया है। सभी प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार तथा स्मृति चिन्ह् प्रदान किये गये।

अन्त में धन्यवाद प्रस्ताव के बाद हिन्दी सप्ताह का समापन किया गया।

हिन्दी दिवस

हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के उत्तर पूर्वी पर्वतीय क्षेत्र अनुसंधान परिसर, मणीपुर केन्द्र, इम्फाल में हिन्दी दिवस के अवसर पर दिनांक 24–25 सितम्बर, 2013 को दो दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि केन्द्र के संयुक्त निदेशक डॉ. नरेन्द्र प्रकाश थे जिन्होंने दीप प्रज्वलित कर समारोह का उद्घाटन किया। डॉ. पवन कुमार शर्मा, वरिष्ठ वैज्ञानिक ने सभागार में उपस्थित केन्द्र एवं कृषि विज्ञान केन्द्रों के सभी

कर्मचारियों का स्वागत किया। मुख्य अतिथि ने अपने भाषण में हिन्दी की उपयोगिता बताते हुए अधिक से अधिक कार्य हिन्दी में करने का सुझाव दिया।

आयोजन के समापन समारोह के मुख्य अतिथि हिन्दी शिक्षण विद्यालय के प्रधानाचार्य डॉ. एस. अचौबी सिंह शास्त्री एवं कार्यक्रम के अध्यक्ष केन्द्र के संयुक्त निदेशक डॉ. नरेन्द्र प्रकाश थे। मुख्य अतिथि ने अपने भाषण में हिन्दी के अधिक से अधिक उपयोग पर बल देते हुए हिन्दी की राष्ट्रीय स्तर पर उपयोगिता का महत्व बताया।

समारोह के अंत में प्रतियोगिताओं के विजेता प्रतिभागियों को मुख्य अतिथि एवं अध्यक्ष महोदय ने पुरस्कार वितरित किये। अंत में धन्यवाद ज्ञापन के साथ समारोह का समापन हुआ।

35 राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान करनाल, हरियाणा

हिन्दी कार्यशाला

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की राजभाषा नीति के क्रियान्वयन के क्रम में राष्ट्रीय डेयरी अनुसंधान संस्थान, करनाल के लिपिक तथा वरिष्ठ लिपिक कार्मिकों के लिए एक दिवसीय प्रशासनिक कार्यशाला का आयोजन दिनांक 28 सितम्बर, 2013 को प्रातः 11.00 बजे संस्थान के डॉ. दस्तूर सभाभवन में किया गया।

36 मक्का अनुसंधान निदेशालय, नई दिल्ली

हिन्दी कार्यशाला

मक्का अनुसंधान निदेशालय, पूसा परिसर, नई दिल्ली के एन.एल. धवन समिति कक्ष में दिनांक 09.08.2013 को हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला के मुख्य अतिथि एवं वक्ता श्री कृष्ण कान्त कुलश्रेष्ठ थे, जो भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान में मुख्य प्रशासनिक अधिकारी के पद पर कार्यरत हैं तथा हिन्दी में विशेष रूचि रखते हैं। कार्यशाला का विषय ''कार्यालय के दैनिक कामकाज में हिन्दी (राजभाषा) का प्रयोग'' था। मुख्य वक्ता महोदय ने निम्नलिखित तथ्यों के बारे में जानकारी प्रदान की :–

1. हिन्दी में आये पत्रों का जवाब हिन्दी में अनिवार्य है।
2. प्रशासनिक वर्ग अधिक से अधिक कार्य हिन्दी में कर सकते हैं ।
3. दक्षिण भारत में जाने वाला पत्र का कवरिंग पत्र द्विभाषी या अग्रेंजी में दिया जाना चाहिए, जिससे पत्र समझा जा सके।
4. तकनकी शब्द अग्रेंजी में दिया जा सकता है।
5. वैज्ञानिक शोध, लेखन आदि अग्रेंजी में दिया जा सकता है। मुख्य वक्ता के द्वारा हिन्दी में सहजता लाने पर बल दिया गया।
6. मक्का अनुसंधान निदेशालय, पूसा परिसर, नई दिल्ली के कर्मचारियों ने राजभाषा अधिनियम के प्रयोग से सम्बन्धित मुख्य वक्ता से प्रश्न किये, जिनका समुचित उत्तर दिया गया।
7. मुख्य अतिथि वक्ता एवं उपस्थित स्टाफ को धन्यवाद देते हुए कार्यशाला का समापन हुआ।

37 सोयाबीन अनुसंधान निदेशालय, इन्दौर

हिन्दी पखवाड़ा

सोयाबीन अनुसंधान निदेशालय, इन्दौर, मध्य प्रदेश में प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी दिनांक 2–13 सितम्बर, 2013 के दौरान हिन्दी पखवाड़े का आयोजन किया गया। इसके अंतर्गत निम्नलिखित गतिविधियाँ आयोजित की गई :–

- हिन्दी पखवाड़े का उद्घाटन दिनांक 2 सितम्बर, 2013 को निदेशालय के डॉ. श्याम कृष्ण श्रीवास्तव, निदेशक एवं अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा किया गया। इस समारोह का संचालन श्री श्याम किशोर वर्मा, सदस्य सचिव, राजभाषा कार्यान्वयन समिति एवं आभार प्रदर्शन डॉ. एस.डी. बिल्लौरे, प्रधान वैज्ञानिक (सस्य विज्ञान) द्वारा किया गया। इस समारोह के दौरान वक्ताओं ने निदेशालय में राजभाषा के प्रगामी प्रयोग एवं अनुसंधान के प्रचार –प्रसार एवं सम्प्रेषण तथा शोध–पत्रों एवं तकनीकी लेखन का कार्य शत्–प्रतिशत हिन्दी में करने के लिए आह्वान किया। हिन्दी के निरन्तर प्रयोग एवं उसके प्रति समर्पण के द्वारा उसे और अधिक समृद्ध बनाने की आवश्यकता पर बल दिया। प्रभारी अधिकारी (राजभाषा) द्वारा हिन्दी पखवाड़े के दौरान आयोजित की जाने वाली गतिविधियों की विस्तारपूर्वक जानाकारी प्रदान की गई।
- दिनांक 03 सितम्बर, 2013 को निदेशालय के कुशल सहायक ग्रेड कर्मचारियों के लिए श्रुति लेखन प्रतियोगिता आयोजित की गई।
- दिनांक 03 सितम्बर, 2013 को निदेशालय के समस्त कर्मचारियों के लिए निबन्ध लेखन प्रतियोगिता आयोजित की गई जिसका विषय '' जन–संचार माध्यमों में हिन्दी का बदलता स्वरूपः एक विवेचना'' था । प्रतिभागियों ने इस विषय पर अपने–अपने विचार प्रस्तुत किये ।
- दिनांक 06 सितम्बर, 2013 को निदेशालय में '' राजभाषा का अतीत एवं वर्तमान परिदृष्य'' विषय पर हिन्दी कार्यशाला का अयोजन किया गया जिसमें श्री श्याम यादव, जनसम्पर्क अधिकारी, भारतीय संचार निगम लिमिटेड, इन्दौर अतिथि वक्ता थे जिन्होंने अपने व्याख्यान से श्रोताओं में हिन्दी राजभाषा के प्रति समर्पण एवं संवैधानिक दायित्व की भावना जागृत की। कार्यक्रम का संचालन डॉ. पुरूषोत्तम शर्मा, वरिष्ठ वैज्ञानिक (कृषि अर्थशास्त्र) ने किया एवं आभार प्रदर्शन श्री संजय कुमार पाण्डे, तकनीकी अधिकारी ने किया ।
- दिनांक 10 सितम्बर, 2013 को निदेशालय के समस्त कर्मचारियों के लिए प्रश्न मंच प्रतियोगिता आयोजित की गई जिसमें सभी कर्मचारियों ने बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया।
- दिनांक 11 सितम्बर, 2013 को निदेशालय के समस्त कर्मचारियों के लिए प्रस्तुतीकरण कुशलता प्रतियोगिता आयोजित की गई।

- हिन्दी पखवाड़े का समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह 13 सितम्बर, 2013 को आयोजित किया गया। इस समारोह के मुख्य अतिथि श्री मुकेश चौहार, मुख्य अभियंता, नर्मदा नियंत्रण प्राधिकरण, इन्दौर एवं सचिव, केन्द्र सरकारी कर्मचारी जनकल्याण समन्वय समिति, इन्दौर एवं अध्यक्षता, निदेशालय के निदेशक, डॉ. श्याम कृष्ण श्रीवास्तव ने की। मुख्य अतिथि द्वारा प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार वितरित किये गये। मुख्य अतिथि द्वारा निदेशालय में किए जा रहे हिन्दी के प्रगामी विकास एवं कार्यो की सराहना की गई। कार्यक्रम का संचालन डॉ. बी.यू. दुपारे, वरिष्ठ वैज्ञानिक (कृषि विस्तार) एवं आभार प्रदर्शन डॉ. एस. डी. बिल्लौरे, प्रधान वैज्ञानिक (सस्य विज्ञान) ने किया ।

38 केन्द्रीय शीतोष्ण बागवानी संस्थान, श्रीनगर

हिन्दी दिवस

केन्द्रीय शीतोष्ण बागवाणी संस्थान, श्रीनगर, जम्मू–कश्मीर में हिन्दी सप्ताह समारोह दिनांक 16 सितम्बर, 2013 से 22 सितम्बर, 2013 तक संस्थान स्तर पर मनाया गया। इस दौरान विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताओं जैसे निबन्ध लेखन, पोस्टर लेखन, इश्तहार लेखन प्रतियोगिता इत्यादि का आयोजन किया गया जिसमें संस्थान के कर्मचारियों, दैनिक भोगी श्रमिकों व उनके बच्चों के साथ–साथ एन.बी.पी.जी.आर./आर.जी.एफ.आर.आई., क्षेत्रीय केन्द्र, के.डी. फार्म, श्रीनगर के कर्मचारियों, केन्द्रीय विद्यालय न0 2 व वायु सेना स्कूल, श्रीनगर के बच्चों ने भी विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लिया एवं उत्कृठ प्रदर्शन करने वाले कर्मचारियों/बच्चों को पुरस्कृत करने हेतु चयनित किया गया।

केन्द्रीय शीतोष्ण बागवाणी संस्थान, श्रीनगर, जम्मू–कश्मीर द्वारा दिनांक 10 अक्टूबर, 2013 को संस्थान के सभागार में हिन्दी दिवस का समापन समारोह का आयोजन किया गया। इस समारोह में संस्थान के निदेशक एव वैज्ञानिकों द्वारा राजभाषा हिन्दी के प्रयाग व विकास पर व्याख्यान दिए गये । उसके बाद निदेशक द्वारा विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किये गये।

अन्त में डॉ. श्याम राज सिंह, वरिष्ठ वैज्ञानिक द्वारा धन्यवाद प्रस्ताव के साथ हिन्दी दिवस समारोह का समापन किया गया ।

39 राष्ट्रीय अनार अनुसंधान केन्द्र, सोलापुर

हिन्दी पखवाड़ा

राष्ट्रीय अनार अनुसंधान केन्द्र, सोलापुर, महाराष्ट्र में दिनांक 02.09.2013 से 23.09.2013 तक हिन्दी पखवाड़े का आयोजन किया गया। इस हिन्दी पखवाडे में विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया :–

इस अवसर पर वाद–विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसका विषय ''भारतीय कृषि विज्ञान का अन्तर्राष्ट्रीय स्तर'' तथा ''क्या शिक्षा समाज की मानसिकता बदल सकती है'' था । इस प्रतियोगिता की संचालन डॉ. ज्योत्सना शर्मा, प्रधान वैज्ञानिक द्वारा किया गया।

इस अवसर पर भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसका विषय कृषि एवं विज्ञान, मेरा आदर्श वैज्ञानिक तथा मेरा आदर्श व्यक्तित्व था। इस प्रतियोगिता की संचालन डॉ. ज्योत्सना शर्मा, प्रधान वैज्ञानिक द्वारा किया गया।

इसके अलावा संस्थान में हिन्दी पखवाड़े के दौरान कहानी लेखन, सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता, सुलेखन, पत्र लेखन, संगणक पर हिन्दी टंकण, निबंध लेखन, हिन्दी अनुवाद तथा एक हिन्दी कार्यशाला का भी आयोजन किया गया ।

उपरोक्त प्रतियोगिताओं में केन्द्र के सभी अधिकारियों तथा कर्मचारियों ने बड़े उत्साह से भाग लिया। हिन्दी पखवाड़े का समापन समारोह दिनांक 23 सितम्बर, 2013 को निदेशक महोदय की अध्यक्षता में किया गया। इस कार्यक्रम में डॉ. जे.आर. कदम, सहायक निदेशक, एम.पी.व्ही. राहूरी एवं डॉ. अनिता माने (निदेशक) प्रबंध शास्त्र, सिंहगड कॉलेज, सोलापुर जैसी गणमान्य व्यक्तियों को पुरस्कार वितरण के लिए आमंत्रित किया गया। कार्यक्रम में विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किये गये।

अन्त में धन्यवाद ज्ञापन के साथ समारोह का समापन सम्पन्न हुआ।

किसान प्रशिक्षण कार्यक्रम

संचालक राष्ट्रीय अनार अनुसंधान केन्द्र की ओर से गुजरात के किसानों के लिए हिन्दी में दिनांक 05. 08.2013 से 08.08.2013 तक चार दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। इस कार्यक्रम का औपचारिक उद्‌घाटन केन्द्र के निदेशक, डॉ. आर.के. पाल ने किया। कार्यक्रम का सूत्रसंचालन कार्यक्रम समन्वयक डॉ. आर.ए. मराठे ने किया । इन चार दिनों के प्रशिक्षण कार्यक्रम में केन्द्र के विभिन्न वैज्ञानिको, तकनीकी अधिकारियों, प्रशासनिक अधिकारियों सभी ने जिम्मेदारीपूर्वक कार्य किया।

''अनार उत्पादन तकनीक'' के शीर्षक तले बने इस कार्यक्रम में गुजरात के कच्छ, भुज क्षेत्र से लगभग 51 किसानों ने भाग लिया था। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान वैज्ञानिकों द्वारा हिन्दी में प्रशिक्षण प्रदान किया गया।

प्रशिक्षण कार्यक्रम का समापन समारोह दिनांक 08.08.2013 को किया गया। जिसके दौरान प्रशिक्षणार्थियों को केन्द्र की ओर से द्विभाषी प्रमाणपत्र प्रदान किये गये। बाद में कुछ किसानों ने प्रशिक्षण के दौरान रहे अनुभवों का व्यक्त किया। निदेशक महोदय ने हिन्दी में हुए इस प्रशिक्षण कार्यक्रम की सराहना की। बाद में किसानों की ओर से आत्मा संघटन के श्री कल्पेश माहेश्वरी ने आभार व्यक्त किया। समापन समारोह के इस कार्यक्रम का सूत्र संचालन कार्यक्रम समन्वयक डॉ. आर.ए. मराठे के द्वारा किया गया।

41. केन्द्रीय मृदा एवं जल संरक्षण अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, अनुसंधान केन्द्र, छलेसर, आगरा

हिन्दी चेतना मास

केन्द्रीय मृदा एवं जल संरक्षण अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, अनुसंधान केन्द्र, छलेसर, आगरा, उत्तर प्रदेश पर हिन्दी चेतना मास का शुभारम्भ दिनांक 16 सितम्बर, 2013 को केन्द्राध्यक्ष द्वारा माँ सरस्वती के माल्यार्पण से किया गया। इस अवसर पर केन्द्राध्यक्ष महोदय ने अपने अध्यक्षीय भाषण में केन्द्र के हिन्दी राजभाषा के प्रचार एव प्रसार की विवेचना की। इस अवसर पर उन्होंने माननीय कृषि मंत्री श्री शरद पवार की अपील को पढ़कर सुनाया। मच का संचालन श्री बी.पी. जोशी ने किया। हिन्दी चेतना मास के दौरान विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिनका विवरण निम्न प्रकार है :–

दिनांक 19 सितम्बर, 2013 को केन्द्र पर हिन्दी निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। '' उत्तराखण्ड त्रासदी एवं प्राकृतिक आपदा– कारण व निवारण'' निबंध का विषय था।

दिनांक 27 सितम्बर, 2013 को केन्द्र पर हिन्दी तत्क्षण भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में प्रतिभागी को एक शब्द दिया गया जिस पर दो मिनट में अपने विचार व्यक्त करने थे। प्रतियोगिता में केन्द्र के अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया।

दिनांक 10 अक्टूबर, 2013 को केन्द्र के तत्वाधान हिन्दी चेतना मास के दौरान बाल–प्रतिभा प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में श्रीमती गंगा देवी इण्टर कॉलेज, रानी अवन्ती बाई कन्या इण्टर कॉलेज व झम्मन सिंह लोधी इण्टर कॉलेज के 15–15 विद्यार्थियों ने भाग लिया। विद्यार्थी अपने विद्यालय से दो–दो शिक्षकों के संरक्षण में केन्द्र में आमंत्रित किये गये थे। विद्यार्थियों को केन्द्र में किये जा रहे कार्यो व उनके उद्देश्यों पर बनी एक संक्षिप्त चलचित्र दिखाई गई।

इस अवसर पर डॉ. ए.के. सिंह ने विद्यार्थियों को कृषि विषय को अपना विषय बनाने पर किन–किन स्थानों पर व्यवसाय मिल सकता है उसके बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान की ।

42. केन्द्रीय कृषि वानिकी अनुसंधान संस्थान, झांसी

हिन्दी कार्यशाला

केन्द्रीय कृषिवानिकी अनुसंधान संस्थान, झांसी में दिसंबर, 2014 को समाप्त तिमाही कार्यशाला दिनांक 30.12.2014 को डा. एस. के. ध्यानी, निदेशक की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। कार्यशाला की शुरूआत भाकृअप कुलगीत से हुई। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए डॉ. ध्यानी ने अपने उद्बोधन में कहा कि हमें हिन्दी में अपने अनुसंधान लेख/प्रसार बुलेटिनों को सरल भाषा में लिखकर अनुसंधान उपलब्धियों को किसानों तक पहुंचाना होगा, जिसे किसान भाई उन तकनीकियों को पढ़कर तथा अपने खेतों में इस्तेमाल कर लाभ प्राप्त कर सकें।

कार्यशाला के प्रमुख वक्ता डॉ. रमेश सिंह एवं डॉ. आर.एच. रिजवी वरिष्ठ वैज्ञानिक जिनको ''जियो इन्फोर्मेटिक्स'' विषय पर दिनांक 01 से 05 दिसम्बर, 2014 को विश्व कृषि वानिकी केन्द्र, नैरोबी, केन्या में प्रशिक्षण के लिए नामित किया गया था, ने अपना व्याख्यान विश्व स्तर पर स्थाई वानस्पतिक आवर का विश्लेषण तरीकों पर दिया। द्वितीय वक्ता द्वारा हिन्दी शोध पत्र लेखन में आने वाली सामान्य समस्याओं पर भी चर्चा की गई। उन्होंने यह भी बताया कि हिन्दी भाषा में अंग्रेजी से इतर एक शब्द के अनेक समानार्थी शब्द मौजूद हैं जिन्हें शोध पत्र लेखन के दौरान सरल सामान्य भाषा के रूप में प्रयोग किया जा सकता है। कार्यशाला में केन्द्र के समस्त वैज्ञानिक, अधिकारी तथा कर्मचारी उपस्थित थे।

43. केन्द्रीय कृषि अभियांत्रिकी संस्थान, भोपाल

हिन्दी कार्यशालाएं

संस्थान में परिषद एवं राजभाषा विभाग के निर्देशानुसार समय–समय पर आयोजित की जाने वाली हिन्दी कार्यशालाओं की श्रृंखला में (दिनांक 03–23 दिसम्बर, 2014) तक ''सेंसर, नैनो सेंसर, वायरलेस सेंसर नेटवर्क एवं इंस्ट्रूमेंटेशन का सुनियोजित/संरक्षित कृषि में उपयोग'' विषय पर तथा दिनांक 26.12.2014 को 'प्रशासनिक कर्मचारियों के लिए' ''कार्यालयीन कार्यों में राजभाषा के नियमों का अनुपालन'' विषय पर हिन्दी कार्यशाला का आयोजन संस्थान के टी.टी.डी. संगोष्ठी कक्ष में किया गया। कार्यशाला में सेंसर, नैनो सेंसर, वायरलेस सेंसर नेटवर्क एवं इंस्ट्रूमेंटेशन का सुनियोजित/संरक्षित कृषि में उपयोग के बारे में अत्यन्त ाानवर्धक जानकारी दी गई साथ ही दिनांक 26.12.2014 को सम्पन्न हुई हिन्दी कार्यशाला में प्रभारी राजभाषा प्रकोष्ठ डॉ. एस. पी. सिंह ने राजभाषा में पत्राचार करने के लिए नियमावली के बारे में अत्यंत ज्ञानवर्धक जानकारी प्रदान की तथा अंग्रेजी से हिन्दी में लिप्यंतरण हेतु गूगल टूल व सॉफ्टवेयर पर एक व्याख्यान दिया। हिन्दी में उपलब्ध विभिन्न फॉन्ट्स की जानकारी प्रतिभागियों को दी गई। साथ ही उन्हें पॉवर प्वाइंट पर प्रत्यक्ष रूप से यह दिखाया गया कि हिन्दी टाइपिंग न जानने वाले व्यक्ति किस प्रकार अंग्रेजी की–बोर्ड का प्रयोग करके देवनागरी में टाइप कर सकते हैं। कार्यक्रम में राजभाषा प्रकोष्ठ के वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी श्री राजेश तिवारी ने भी प्रतिभागियों को राजभाषा के नियमों का अनुपालन में धारा 3(3) से संबंधित जानकारी प्रदान की।

कार्यशाला का आयोजन राजभाषा प्रकोष्ठ द्वारा किया गया था, जिसमें प्रशासनिक संवर्ग के लगभग 15 प्रतिभागी शामिल हुए। प्रतिभागियों द्वारा प्रस्तुत उनकी समस्याओं के निराकरण के साथ ही कार्यशाला सम्पन्न हुई।

44. राष्ट्रीय पादप जैव प्रौद्योगिकी अनुसंधान केन्द्र, नई दिल्ली

हिन्दी सप्ताह

राष्ट्रीय पादप जैव प्रौद्योगिकी अनुसंधान केन्द्र, पूसा परिसर, नई दिल्ली में दिनांक 07–13 सितम्बर, 2013 को हिन्दी सप्ताह का आयोजन किया गया। वर्ष 2014 में दो हिन्दी कार्यशालाओं का आयोजन भी किया गया। प्रथम कार्यशाला डॉ. श्रीनिवासन, परियोजना निदेशक की अध्यक्षता में 15 फरवरी, 2014 को प्रातः 11:00 बजे आयोजित की गई। इस कार्यशाला में श्री हरीश चन्द्र जोशी, निदेशक राजभाषा को प्रमुख वक्ता के रूप मे आमंत्रित किया गया। उन्होंने राजभाषा के कार्यान्वयन संबंधी पहलुओं पर प्रकाश डालते हुए हिन्दी के प्रयोग के बारे में प्रतिभागियों को विस्तृत जानकारी दी। दूसरी कार्यशाला डॉ. टी.आर. शर्मा, परियोजना निदेशक की अध्यक्षता में दिनांक 09.05.2014 को प्रातः 11:00 बजे आयोजित की गई तथा श्री प्रेम सिंह, पूर्व निदेशक (विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग) को व्याख्यान के लिए आमंत्रित किया गया।

हिन्दी प्रकाशनों की सूची

1. वार्षिक प्रतिवेदन 2012–13
2. रा.पा.जै.प्र.केन्द्र (प्रोफाइल) एक परिचय
3. सफलता की कहानी
    1. पूसा हरा चना
    2. सरसों की संकर किस्में
    3. बी.टी. टमाटर
    4. उन्नत पूसा बासमती
    5. पूसा जय किसान

45. **केन्द्रीय तम्बाकू अनुसंधान संस्थान, राजमन्द्री (आन्ध्र प्रदेश)**

संस्थान में दिनांक 15 सिंतबर से 29 सितंबर 2014 तक हिन्दी पखवाडा मनाया गया। इस पखवाडे के दौरान अंग्रेजी या तेलुगु में एक क्रमिक विषय को हिन्दी में अनुवाद, हिन्दी में एक क्रमिक विषय को अंग्रेजी या तेलुगु में अनुवाद, हिन्दी में दिये गये विषय पर वाद-विवाद, हिन्दी में श्रुतलेखन, अंग्रेजी या तेलुगु शब्दावली से हिन्दी में अनुवाद, हिन्दी में टिप्पण तथा प्रारूप लेखन, प्रश्न मंच प्रतियोगिता (सिर्फ समूह घ कर्मचारियों के लिए), हिन्दी कविताओं में प्रतियोगिता, हिन्दी में आशु-भाषण, हिन्दी गीतों व गजलों में प्रतियोगिता आदि प्रतियोगिताएं आयोजित की गयीं। इन प्रतियोगिताओं में संस्थान के वैज्ञानिक, तकनीकी एवं प्रशासनिक अधिकारियों और कर्मचारियों ने काफ़ी संख्या में भाग लिया। इस संस्थान के निदेशक डॉ. डी. दामोदर रेड्डी ने समापन समारोह की अध्यक्षता की। मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. एन. गोपाल कृष्णन, सहायक महानिदेशक (सि.सि.), भा.कृ.अ.प., नई दिल्ली उपस्थित थे। श्री एस. एल. वी. प्रसाद, वरिष्ठ प्रशासन अधिकारी एवं सदस्य, राजभाषा कार्यान्वयन समिति ने स्वागत भाषण दिया। श्री वाई. प्रभाकर, सहायक प्रशासनिक अधकारी ने माननीय कृषि मंत्री श्री शरद पवार महोदय से प्राप्त संदेश को पढ़कर सुनाया और अपना रिपोर्ट प्रस्तुत किया।

निदेशक एवम अध्यक्ष ने अपने भाषण में यह अनुरोध किया कि रोज़ हरएक अधिकारी व कर्मचारी कार्यालय में हिन्दी बोलना सीखें और हिन्दी से ज्यादा से ज्यादा पत्राजार करें। मुख्य अतिथि डॉ. एन. गोपल कृष्णन ने अपने संबोधन में यह विचार प्रकट किया कि भारत के विभिन्न क्षेत्रों और भाषाओं की जनता में एकता लाने के लिए संपर्क भाषा के रूप में और देश की एकता एवं विकास व प्रगति के लिए भी हिन्दी बहुत उपयोगी होगी।

अंत में उन्होंने इस पखवाड़े के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के प्रतियोगियों को क्रमश: प्रथम, द्धितीय पुरस्कार और प्रतियोगिताओं में भाग लेने वालों को सांत्वना पुरस्कार से सम्मानित किया।

46. परिषद मुख्यालय की राजभाषा गतिविधियां

हिन्दी चेतना मास

परिषद मुख्यालय में 14 सितम्बर, 2013 से 13 अक्तूबर, 2013 तक हिन्दी चेतना मास का आयोजन किया गया। इस दौरान परिषद मुख्यालय के अधिकारियों / कर्मचारियों के लिए निम्न हिन्दी प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। इन प्रतियोगिताओं के अंतर्गत प्राप्त प्रविष्टियों का मूल्यांकन करने के पश्चात् कार्मिकों को विजेता घोषित किया गया।

परिषद मुख्यालय में हिन्दी चेतना मास के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं का विवरण निम्नानुसार हैः–

1. प्रश्नमंच प्रतियोगिता (टीम आधार पर)
2. हिन्दी टिप्पण/प्रारूप लेखन प्रतियोगिता (हिन्दी भाषियों के लिए)
3. हिन्दी टिप्पण/प्रारूप लेखन प्रतियोगिता (हिन्दीतर भाषियों के लिए)
4. हिन्दी में कृषि स्लोगन प्रतियोगिता
5. वाद–विवाद प्रतियोगिता (हिन्दी भाषियों के लिए)
6. वाद–विवाद प्रतियोगिता (हिन्दीतर भाषियों के लिए)
7. आशुभाषण प्रतियोगिता (सभी वर्गों के लिए)
8. हिन्दी टंकण प्रतियोगिता (सभी वर्गों के लिए)
9. सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता (सभी वर्गों के लिए)
10. विशेष टिप्पण प्रतियोगिता (एक माह के दौरान सर्वाधिक सरकारी कार्य हिन्दी में करने वाले अधिकारियों/कर्मचारियों को प्रोत्साहित करने हेतु)

मुख्यालय के अधिकारियों / कर्मचारियों ने इन प्रतियोगिताओं में बढ़–चढ़ कर हिस्सा लिया। सभी प्रतियोगिताओं के विजेताओं को बाद में आयोजित किए गए समारोह के दौरान माननीय महा निदेशक महोदय द्वारा पुरस्कार प्रदान किए गए।

इसी तारतम्य में 14 सितम्बर, 2014 से 13 अक्तूबर, 2014 तक हिन्दी चेतना मास का आयोजन परिषद मुख्यालय में किया गया जिसके दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं का विवरण निम्नानुसार हैः–

1. प्रश्नमंच प्रतियोगिता (टीम आधार पर)
2. फेसबुक पर हिन्दी कविता प्रतियोगिता
3. हिन्दी टिप्पण/प्रारूप लेखन प्रतियोगिता (सभी वर्गों के लिए)
4. हिन्दी अनुवाद प्रतियोगिता (सभी वर्गों के लिए)
5. वाद–विवाद प्रतियोगिता (हिन्दी भाषियों के लिए)
6. वाद–विवाद प्रतियोगिता (हिन्दीतर भाषियों के लिए)
7. हिन्दी टंकण प्रतियोगिता (सभी वर्गों के लिए)
8. विशेष टिप्पण प्रतियोगिता (एक माह के दौरान सर्वाधिक सरकारी कार्य हिन्दी में करने वाले अधिकारियों/कर्मचारियों को प्रोत्साहित करने हेतु)

परिषद के अधीनस्थ संस्थानों आदि द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिकाओं को गणेश शंकर विद्यार्थी हिन्दी कृषि पत्रिका पुरस्कार

परिषद के अधीनस्थ संस्थानों आदि द्वारा हिन्दी में प्रकाशित की जाने वाली गृह पत्रिकाओं को स्तरीय तथा प्रतिस्पर्धात्मक बनाने के उद्देश्य से वर्ष 2004–2005 से ''गणेश शंकर विद्यार्थी हिन्दी कृषि पत्रिका पुरस्कार'' शुरू की गई है। वर्ष 2013–14 के दौरान प्रकाशित पत्रिकाओं के लिए प्राप्त प्रविष्टियों का मूल्यांकन करने के पश्चात् पत्रिकाओं को पुरस्कृत करने का निर्णय लिया गया है। पुरस्कार के लिए चुनी गई पत्रिकाओं का विवरण निम्न प्रकार है:–

क्र.सं.	पुरस्कार के लिए चयनित पत्रिका का नाम	संस्थान का नाम	पुरस्कार
1.	प्रज्ञा	भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद का अनुसंधान परिसर, गोवा	प्रथम
2.	पूसा सुरभि	भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पूसा, नई दिल्ली	द्वितीय
3.	सूक्ष्मजीव दर्शन	राष्ट्रीय कृषि उपयोगी सूक्ष्मजीव ब्यूरो, मऊ	प्रोत्साहन

परिषद के अधीनस्थ संस्थानों आदि में राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए राजर्षि टंडन राजभाषा पुरस्कार योजना

परिषद के अधीनस्थ संस्थानों आदि द्वारा हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने हेतु वर्ष 1998–99 से ''राजर्षि टंडन राजभाषा पुरस्कार योजना'' चलाई जा रही है। इस योजना के अंतर्गत वर्ष 2013–14 के दौरान हिन्दी में अपना सर्वाधिक कार्य करने वाले बड़े संस्थानों के लिए 2 पुरस्कार, 'क' और 'ख' क्षेत्र के छोटे संस्थानों आदि के लिए 2 पुरस्कार तथा 'ग' क्षेत्र में स्थित संस्थानों/केन्द्रों के लिए भी 2 पुरस्कार (कुल 6 पुरस्कार) अर्थात प्रथम

को शील्ड और द्वितीय को ट्रॉफियां प्रदान करने का निर्णय लिया गया है। पुरस्कार के लिए चुने गए संस्थानों/केन्द्रों का विवरण इस प्रकार हैः–

'क' क्षेत्र	बड़े संस्थान का नाम	पुरस्कार
	1. भारतीय पशुचिकित्सा अनुसंधान संस्थान, इज्जतनगर	प्रथम
	2. भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पूसा, नई दिल्ली	द्वितीय
'ख' क्षेत्र	'क' और 'ख' के संस्थानों/केन्द्रों आदि का पुरस्कार	पुरस्कार
	1. राष्ट्रीय मृदा सर्वेक्षण एवं भूमि उपयोग नियोजन ब्यूरो, नागपुर	प्रथम
	2. राष्ट्रीय पादप आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो, पूसा, नई दिल्ली	द्वितीय
'ग' क्षेत्र	'ग' क्षेत्र में स्थित अन्य संस्थानों/केन्द्रों आदि का पुरस्कार	पुरस्कार
	1. केन्द्रीय बारानी कृषि अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद	प्रथम
	2. तिलहन अनुसंधान निदेशालय, हैदराबाद	द्वितीय

हिन्दी कार्यशालाएं

(1) 26 फरवरी, 2014 को अवर श्रेणी लिपिक कार्मिकों के लिए ''राजभाषा हिन्दी में टिप्पण/प्रारूप लेखन से संबंधित सामान्य कठिनाईयां और समाधान'' विषय पर हिन्दी कार्यशाला के आयोजन किया गया। इनमें कुल 40 कर्मचारी शामिल हुए है। इस कार्यशाला में व्याख्यान देने के लिए डा0 रमेश आर्या, उप–निदेशक (राजभाषा) कृषि एवं सहकारिता विभाग, कृषि भवन, नई दिल्ली

(2) 12 मई, 2014 को को अवर श्रेणी लिपिक कार्मिकों के लिए ''यूनिकोड के माध्यम से हिन्दी टंकण'' विषय पर कार्यशाला का आयोजन जिसमें कुल 43 कार्मिकों ने शामिल हुए है। इस कार्यशाला में व्याख्यान देने के लिए डा0 केवल कृष्ण, निदेशक (तकनीकी) राजभाषा विभाग, नई दिल्ली

(3) 16 सितम्बर, 2014 को सभी वर्गों के कार्मिकों के लिए '' राजभाषा नीती एवं कार्यान्वयन से संबंधित'' विषय पर कार्यशाला का आयोजन जिसमें कुल 40 कार्मिकों ने शामिल हुए है। इस कार्यशाला में व्याख्यान देने के लिए निदेशक (राजभाषा) भा.कृ.अ.प.

(4) 18 दिसम्बर, 2014 को आशुलिपि/निजी सहायक/निजी सचिव स्तर के कार्मिकों के लिए ''यूनिकोड के माध्यम से हिन्दी टंकण'' विषय पर कार्यशाला का आयोजन जिसमें कुल 26 कार्मिकों ने शामिल हुए है। इस कार्यशाला में व्याख्यान देने के लिए डा0 केवल कृष्ण, निदेशक (तकनीकी) राजभाषा विभागृ

वर्ष 2014 के दौरान अधिसूचित संस्थान

राजभाषा नियम 10(4) के अंतर्गत भा.कृ.अ.प. अधीनस्थ आने वाले संस्थानों को भारत सरकार के गजट में अधिसूचित किया गया है।

1. केन्द्रीय मात्स्यकी शिक्षा संस्थान, काकिनाडा केन्द्र (आध्र प्रदेश)
2. परियोजना निदेशालय खुर पका एवं मुह पका रोग भारतीय पशु चिकिस्ता अनुसंधान संस्थान, मुक्तेश्वर, नैनीताल (उत्तराखंडा) केन्द्रीय मात्स्यिकी शिक्षा संस्थान मुम्बई का रोहतक केन्द्र लाहली
3. केन्द्रीय अनार अनुसंधान संस्थान शोलापुर, पुणे

****